राशि

लो	अ		मेष
वे	वो		वृष
को	ह		मिथुन
[illegible]	हे	डो	कर्क
[illegible]	ट	टे	सिंह
ठ	पे	पो	कन्या
ति	तु	ते	तुला
या	यि	यु	वृश्चि-
[illegible]	फा	ढा	भ धनु
[illegible]	खो	ग	गि मकर
[illegible]	सो	द	कुम्भ
[illegible]	च	चि	मीन

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला १६६

नव्वाब खानखानाकृतं

खेटकौतुकम्

'भावबोधिनी' हिन्दीटीकासहितम्

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस
वाराणसी

॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला

१६६

नव्वाब खानखानाकृतं

खेटकौतुकम्

'भावबोधिनी' हिन्दीटीकासहितम्

टीकाकारः-

पं० दीनानाथ झा ज्योतिषाचार्यः

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

१९८३

प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : तृतीय, वि० सं० २०३९
मूल्य रु० : १–५०

K. 37/99, Gopal Mandir Lane
Post Box 8, Varanasi–221001 (India)

प्रधान वितरक
कृष्णदास अकादमी
पो० बा० ११८
चौक, (चित्रा सिनेमा बिल्डिंग), वाराणसी–२२१००१
(भारत)

भूमिका

यवन-शासन काल में ज्यौतिर्विद् नव्वाब खानखाना दैवज्ञ शिरोमणि कहे जाते थे। विशेषतया नव्वाब साहब ज्यौतिष फलादेश में अति निष्णात थे। इसका प्रमाण उनका रचित यह प्रस्तुत ग्रन्थ ही है। यद्यपि यह अत्यन्त लघु है फिर भी इस 'खेटकौतुक' नामक ग्रन्थ का भावफल और राजयोग प्रकरण समस्त जातक ग्रन्थों का सारभाग ही समझना चाहिये। इसमें उर्दू के शब्द मिश्रित होने के कारण सर्व साधारण लोग इससे पूर्ण लाभ नहीं प्राप्त करते थे अत एव इन कठिनाइयों को दूर करने के लिये हमने इसकी 'भावबोधिनी' नामक हिन्दी टीका करके उसके प्रकाशन का सर्वाधिकार-विश्वविख्यात चौखम्बा संस्कृत सीरीज के अध्यक्ष बाबू श्री जयकृष्णदासजी को दे दिया है। यदि इससे जन साधारण का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपने श्रम को सफल समझूँगा।

गङ्गादशहरा
वि० सं० २००१

विद्वज्जनानुचरः
श्री दीनानाथ झा

श्रीगणेशाय नमः

खेटकौतुकम्

'भावबोधिनी' भाषाटीकासहितम्

मङ्गलाचरणम्

यत्पदपङ्कजरेणोः प्रसादमासाद्य सर्वभुवनेषु ।
प्रणमामीष्टसुमूर्ति तामहममराः प्रभुत्वमपि यान्ति ॥

जिन इष्टदेव के चरण कमल की धूलि की कृपा से देवता लोग समस्त भुवन के स्वामित्व को प्राप्त करते हैं, उन अपने इष्टदेव की सुन्दर मूर्ति को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

फारसीयपदमिश्रतग्रन्थाः खलु पण्डितैः कृताः पूर्वैः ।
सम्प्राप्य तत्पदपथं करवाणि खेटकौतुकं पद्यैः ॥२॥

पूर्वाचार्यों ने फारसी शब्दों से मिला हुआ संस्कृत पद्यों में विविध प्रकार के ग्रन्थों का निर्माण किया है। मैं (खानखाना नब्वाब) भी उन्हीं के चरणपथ का अवलम्बन करके उसी तरह फारसी से मिले हुए संस्कृत श्लोकों में 'खेटकौतुक' नामक ग्रन्थ की रचना करता हूं ॥ २ ॥

अथ सूर्यफलम्

तत्र लग्नगतसूर्यफलम्—

लग्नगः सम्शखेटस्तदा लागरः
कामिनीदूषितो दुष्प्रजो वै यदा ।
पण्यरामारतो राशिमीजान्गतो
मानहीनोथ हीर्वी विदृष्टिः पुमान् ॥ ३ ॥

यदि लग्न में सूर्य हो तो वह मनुष्य दुर्बल शरीर वाला, स्त्री से अपमानित, दुर्जन सन्तानवाला तथा बाजार और बगीचे में भ्रमण करने वाला होता है। एवं यदि नीचराशि (तुला) का सूर्य लग्न में हो तो आदर से हीन, ईर्ष्यायुक्त और दुष्ट दृष्टि वाला होता है ॥ ३ ॥

अथ द्वितीयभावगतसूर्यफलम्—

यदा चश्मखाने भवेदाफताव-
स्तदा ज्ञानहीनोऽथ गुस्सर्व मुद्दाम् ।
सदा तङ्गदिलशख्तगो द्रव्यहीनः
कुवेषो गदा स्याद्बेहोशो दिवासाम् ॥ ४ ॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य ज्ञानहीन (मूर्ख), क्रोधी, विरोध करनेवाला, हमेशा तंगदिल (चिड़चिड़े स्वभाव वाला), कृपण, दरिद्र, विरूप, रोगी और बेहोश (विस्मरण शक्ति वाला) होता है ॥ ४ ॥

अथ तृतीयभावगतसूर्यफलम्—

यदा सम्शखेटस्तृतीयस्थितो
नेककर्दानिरोगो हि शीरींसखुन ।
सदा मोदते रम्यसीमन्तिनीभिः
सवारो धनाढ्यो हि निःकोपशत्रु ॥ ५ ॥

यदि जन्मकालसे तृतीय भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य यशस्वी, मितव्ययी, रोगरहित हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, मधुर-भाषी, सर्वदा सुन्दरी स्त्रियों के संग विहार करने वाला, सवारी पर चलने वाला, धनवान् तथा शान्त स्वभाव वाला (क्रोधरहित) होता है ॥५॥

अथ चतुर्थभावगतसूर्यफलम्—

यदा मादरागारगः सम्शखेटः
सुखी नो हि शंसः परेशानकः स्यात् ।

सदा म्लानचित्तोथ वेश्यारतो वा
तथा जायते बेखुशी हिर्जगर्द्दः ॥ ६ ॥

यदि जन्मलग्न से चतुर्थ स्थान में सूर्य हो तो वह मनुष्य सुख से रहित सर्वदा सन्देह करनेवाला, दुःखी चित्त से युक्त, मलिन स्वभाव वाला, वेश्यागामी, शत्रु से युक्त, आनन्द से हीन और हिर्जगर्द (पागल की तरह घूमने वाला) होता है ॥ ६ ॥

अथ पञ्चमभावगतसूर्यफलम्—

अक्लखाने यदा शम्शखेटस्तदा
मानवो मानहीनः सदा जाहिलः ।
स्वल्पसङ्ग्प्रजश्चौर्यचिन्ताधियुग्
गुस्स्वरो धर्मकार्ये सदा काहिलः ॥ ७ ॥

यदि जन्मलग्न से पञ्चम भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य मानहीन, मूर्ख, अल्प सन्तान वाला, चोरी करनेवाला, रोगी, क्रोधी और धर्मकार्य से विमुख रहने वाला होता है ॥७ ॥

अथ षष्ठभावगतसूर्यफलम्—

यदा मर्जखाने भवेदाफताबो
जलीलो गनी खूबरोहं अवाचः ।
सदा मातृपक्षोद्धृतस्यायलब्धि-
र्निरोगोनरः शत्रुमर्द्दी तदा स्यात् ॥ ८ ॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठभाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य धनवान्, विजयी, सुन्दर, मितभाषी, मातृपक्ष (नाना के घर) से धन-लाभ करने वाला, नीरोग और शत्रु को पराजित करनेवाला होता है ।८॥

अथ सप्तमभावगतसूर्यफलम्—

यदा सम्शखेटः स्मरस्थानग-
श्चिन्तया व्याकुलो ना भवेत्कामुकः ।

सदा क्षीयते कामिनीभिर्महा-
वञ्चको युद्धभूमौ चलोजम्बरः ॥ ९ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम स्थान में सूर्य हो तो वह मनुष्य चिन्ता से व्याकुल, कामी, स्त्री से विजित, ठगनेवाला और संग्राम में विजय प्राप्त करने वाला होता है ॥ ९ ॥

अथ अष्टमभावगतसूर्यफलम्—

यदा सम्शखेटो भवेन्मौतखाने
मुशाफिर्विशे क्षुत्तृषापीडितो हि।
सदोद्योगहीनो महालागरः
स्वीयदेशं विहायान्यदेशाटनःस्यात् ॥१०॥

यदि जन्मलग्न से अष्टम भावमें सूर्य हो तो वह मनुष्य परदेश में भूख-प्यास से दुःख भोगने वाला, अत्यन्त दुर्बल और अपने देश को छोड़कर अन्य देश में भ्रमण करने वाला होता है ॥१०॥

अथ नवमभावगतसूर्यफलम्—

रवौ वेषखाने प्रसिद्धः सुखी
मानवश्चान्यवित्तैरलं शोभते।
विघ्नवृन्दैर्युतो मातृपक्षात्सुखं नो
धनाढ्यो यदा जायते वोच्चगः ॥ ११ ॥

यदि जन्मलग्न से नवम भावमें सूर्य हो तो वह मनुष्य जगत प्रसिद्ध (विख्यात), सुखी, दूसरे के धन से आनन्द करने वाला होता है, किन्तु नाना विघ्नों से युक्त रहता है तथा मातृपक्ष (नाना के घर) से सुख नहीं होता। यदि अपनी उच्चराशि (मेष) से सूर्य नवम भाव में हो तो वह मनुष्य धनवान होता है ॥११॥

अथ दशमभावगतसूर्यफलम्—

रवौ शाहखाने धनाढ्यो वफार-
स्तदा मोदते वाजिवृन्दैः सुखी च।

महीपान्तिको नेककिर्दा सुशीलो
जमीले पितुः सौख्यमल्पं भवेद्वै ॥ १२ ॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य धनवान्, सुशील, सुखी, घोड़े पर चढ़ने वाला, राजा के समीप बैठने वाला, इमानदार, नामवर और कम खर्च करने वाला होता है। यदि सूर्य नीच राशि (तुला) का होकर दशम भाव में हो तो पिता से अल्प सुख पाता है ॥ १२ ॥

अथ एकादशभावगतसूर्यफलम्—

यदा याफ्तिखाने भवेत्सम्शखेटः
सुवेषो धनी वाहनाढ्योऽल्पशीलः ।
सुयोषः शुभौकाः सिपाही सलाही
सविर्गीतगाने सुनेत्रोऽपि शिर्दार ॥ १३ ॥

यदि जन्मलग्न से एकादश स्थान में सूर्य हो तो वह मनुष्य धनवान्, रूपवान्, वाहनों से युक्त, क्षुद्र स्वभाववाला, सुन्दरी स्त्री को रखने वाला, पक्का मकान वाला, सिपाही रखने वाला, मन्त्री से युक्त रहने वाला, गान विद्या में प्रेम रखने वाला, सुन्दर नेत्र-वाला और लोकनायक बनकर रहता है ॥ १३ ॥

अथ द्वादशभावगतसूर्यफलम्—

यदा खर्चखाने भवेत्सम्शखेट-
स्तदा कम्ननिर्मानहीनो नरःस्यात् ।
अहल्खर्चकः सत्क्रियो वा शरार-
त्पनाहः सदा पीड्यतेऽङ्गेषु रोगैः ॥ १४ ॥

यदि जन्मलग्न से द्वादश स्थान में सूर्य हो तो वह मनुष्य नेत्र से कमजोर और मानरहित होता है तथा व्यर्थ खर्च करने वाला,

उत्तम कार्य करनेवाला, व्यर्थ विवाद करनेवाला, शत्रुओं की रक्षा करने वाला और सदा रोग से पीड़ित रहता है ॥ १४ ॥

इति तन्वादिभावगतसूर्यफलम् ॥ १ ॥

अथ चन्द्रफलम् ।

तत्र लग्नगतचन्द्रफलम्—

जवक गार्यदाङ्गगस्तवङ्गरः सुरूपवान् ।
सुधीः सुखी नरोभवेद्विलोमगश्च तत्र हि ॥ १५ ॥

यदि जन्मलग्न में वली चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य धनवान्, रूपवान्, सुधी (पण्डित), सुखी और गुणवान् होता है। यदि चन्द्रमा शत्रु या नीच गृह में हो तो अशुभ फलदायक होता है ।१५।

अथ द्वितीयभावगतचन्द्रफलम्—

कमर्यदा धनालये धनी दमी प्रियंवदः ।
वि॒षको नरो भवेद्वलान्वितो यकी नरः ॥ १६ ॥

यदि लग्न से द्वितीय भाव में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य धनी, शत्रु को दमन करने वाला, मीठी बोली बोलने वाला और सबको प्रसन्न करने वाला होता है। यदि चन्द्रमा वलवान् हो तो मनुष्य वलवान् और विश्वासी होता है ॥ १६ ॥

कर्मविलाधशालये नरो हि वा मुरौवतः ।
सदा वली च सौविरः सुकर्मकृद्यदा भवेत् ॥ १७ ॥

यदि जन्मलग्न से तृतीय स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य प्रभावशाली, वलवान्, सन्तोषी और उत्तम कार्य करनेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ चतुर्थभावगतचन्द्रफलम्—

कमर्यदाम्बुगेहः सखो मुकर्रवः प्रभुः ।
भवेन्नरश्च मज्लिसीतदा वुधः सुभाग्यवान् ॥ १८ ॥

यदि जन्मलग्न से चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य दानी प्रभावशाली, पुण्य करने वाला, राजा या तत्समान, तथा मलिन चित्तवाला, विद्वान् और भाग्यशाली होता है ॥ १८ ॥

अथ पञ्चमभावगतचन्द्रफलम्—

कमर्यदेन्नगेहगः स गुल्फरू भवेन्नरः।
वलान्वितो हि पादकी नदिल्पिशमंकानगः ॥ १९ ॥

यदि जन्मलग्न से पञ्चम स्थान में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य विशेष तेजयुक्त शरीर वाला, वलवान्, सवारी पर चलने वाला, सावधान चित्तवाला, सुशील और लज्जावान् होता है ॥ १९ ॥

अथ षष्ठभावगतचन्द्रफलम्—

काललो विपक्षपक्षपीडितो हि वद्शकल्।
लागरः कमर्भवेद्रिपौ यदा नरः सरुक् ॥ २० ॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठ स्थान में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य सर्वदा शत्रु और रोग से पीड़ित, कुरूप, दुर्बल शरीर वाला और रोग युक्त होता है ॥ २० ॥

अथ सप्तमभावगतचन्द्रफलम्—

जन्मकामगः कमर्यदा भवेन्नरो भृशम्।
गुल्फरू यशी गनी यशः करोत्यहर्निशम् ॥ २१ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य अति रूपवान्, नीरोग, यशस्वी और धनवान् होता है।

अथ अष्ठमभावगतचन्द्रफलम्—

उमर्गृहे कमर्यदा नरो भवेत्सदाऽऽमयी।
बहिर्जगुर्द गुस्सवर्व देशमुक् च निर्द्दयी ॥ २२ ॥

यदिजन्मलग्न से अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य रोगी, व्यर्थ (निष्प्रयोजन) घूमने वाला, क्रोधी, निर्दयी, तथा अपने देश

को त्याग करने वाला होता है ॥ २२ ॥

अथ नवमभावगतचन्द्रफलम्—

नशीबखानगः कमर्मुईशसंज्ञकं नरम् ।
मुतम्मविल्च आमिलं सिकम्युकं करोति वै ॥२३॥

यदि जन्मलग्न से नवम स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य देवता के समान तेजस्वी, धनवान्, ईश्वरभक्ति में रत और सवारियों पर चढ़ने वाला होता है ॥ २३ ॥

अथ दशमभावगतचन्द्रफलम्—

कमर्यदा गृहाश्रितो हि हम्जवारकं नरम् ।
तवङ्गरं च क़ामिलं करोति वै च साविरम् ॥२४॥

यदि जन्मलग्न से दशम स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य पिता का आज्ञाकारी, परिवार का भरण-पोषण करने वाला, लक्ष्मीवान्, बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, सुशील और सन्तोषी होता है ॥ २४ ॥

अथ एकादशभावगतचन्द्रफलम्—

धनाधिपश्च खूबरू सखो सुबुद्धिपुङ्गरः ।
शिरीसखुन् विदूषको भवेद्यदा कमर्भवे ॥२५॥

यदि जन्मलग्न से एकादश स्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य धनाढ्य, मनोहर कान्तिमान्, दानी, बुद्धिमान्, मधुरभाषी और निदुंष्ट कार्य करने वाला होता है ॥ २५ ॥

अथ द्वादशभावगतचन्द्रफलम्—

व्ययालये कमर्यदा भवेत्किरीह चश्मखन् ।
विरोधनश्च खिश्मनाप्यकीर्तिमान् हि उष्ट्रघः ॥२६॥

जिसके जन्मकाल से द्वादश स्थान में चन्द्रमा हो वह मनुष्य नेत्ररोग से युक्त रहने वाला, व्यर्थ विरोध करने वाला, अपव्ययी,

बुरे स्वभाव वाला, कुकर्म करनेवाला तथा निन्दित सवारी पर चढ़ने वाला होता है ॥ २६ ॥

इति तन्वादिभावगतचन्द्रफलम् ॥ २ ॥

अथ मङ्गलफलम्

तत्र लग्नगतमङ्गलफलम्—

यदि भवति मिरीखो लग्नगः खिश्मनाक्स्या-
द्रुधिरप्रभवरोगैः पीडितो मुफ्लिसश्च ।
सकलजनविरोधी हासिलो लागरो ना
जनुषि खलु वियोगो दारपुत्रैर्हमेशः ॥२७॥

यदि लग्न में मङ्गल हो तो मनुष्य जनसमुदायों से झगड़ा करने वाला, रक्तविकार से होने वाले रोगों से पीड़ित रहने वाला, व्यर्थ में समय को बिताने वाला, सबका विरोध करने वाला, दुर्बल शरीर वाला और सर्वदा स्त्री-पुत्र से पृथक् रहने वाला होता है ॥ २७ ॥

अथ द्वितीयभावगतमङ्गलफलम्—

यदि भवति मिरीखश्चश्मखाने बहोशः
सुतधनसुखदारैर्वर्जितः शूरगः स्यात् ।
नसनयमुतफक्किर्हीनशक्तिर्वदर्दः
खलजनसमबुद्धिर्मानवः कर्जदारः ॥ २८ ॥

यदि जन्म लग्न से द्वितीय स्थान में मङ्गल हो तो मनुष्य बेढङ्गा (बेवकूफ) स्त्री, पुत्र तथा सुख–सम्पत्ति से हीन, संग्राम-प्रिय, सदा चिन्ता से युक्त, कुरूपवान्, दुर्बल, निर्दयी, दुर्बुद्धि और ऋण लेने में बहादुर होता है ॥ २८ ॥

अथ तृतीयभावगतमङ्गलम्—

जरशुतुरजवाहिर्रत्नतम्बूकनातैः
सहजविमतिरोगैः संयुतोऽसंयुतश्च ।
यदि भवति मिरोखाः खूबरो वा मुखैइल्-
वजरफिवरसंज्ञः स्याद्बिरादर्गृहे ना ॥२९॥

यदि जन्मलग्न से तृतीय स्थान में मङ्गल हो तो मनुष्य धनी होता है। ऊँट, जवाहरात, रत्न, तम्बू, कनात आदि रखने वाला होता है तथा सर्व प्रकार के रोग से मुक्त रहता है एवं प्रभावशाली, रूपवान् और धनवृद्धि करने वाला होता है ॥ २९ ॥

अथ चतुर्थभावगतमङ्गलफलम्—

पदकरजविराड्वै नो तनूत्थं सुखं च
समरधरधरायां धैर्ययुन्धी धनीनः ।
खरयुशनक बेदर्द कर्जमन्दो हमेशः
प्रभवति च मिरीखो दोस्तखाने नरश्चेत् ॥३०॥

यदि जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में मङ्गल हो तो मनुष्य लम्बे-लम्बे हाथ-पैर वाला, शारीरिक सुख से रहित, संग्रामभूमि में धैर्य धारण करने वाला, सम्पत्तिहीन, बलिष्ठ, कठोर हृदय वाला और सर्वदा कर्ज लेने वाला होता है ॥ ३० ॥

अथ पञ्चमभावगतमङ्गलफलम्

कमफहमतदाना अक्लखाने मिरीखः
पिशरजरवजीर न्नेस्तदरखानये स्यात् ।
अनिलकफजरोगैर्व्याकुलो बेमुरौवत्
गुसवर बद-अक्लश्चोदरव्याधियुक्स्यात् ॥३१॥

यदि जन्मलग्न से पञ्चम स्थान में मङ्गल हो तो मनुष्य अल्प बोलने वाला, बुद्धिहीन, धन, पुत्र तथा उत्तम जीविका के सुख से रहित, कफ-वायु जनित रोग से व्यथित, दुःखशील, क्रोधी और पेट के रोग से पीड़ित होता है ॥ ३१ ॥

अथ षष्ठभावगतमङ्गलफलम्—

रिपुजनपरिहन्ता खूबरो हुस्नवान् स्या-
ज्जशनजरजलालैर्युङ्नहेवानजातः ।
यदि भवति मिरीखो मर्जखाने कदर्दान्
कृतकुलजननोखो मातृपक्षे कुठारः ॥ ३२ ॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठ भाव में मङ्गल हो तो वह मनुष्य शत्रु को पराजित करने वाला, सुन्दर स्वरूप वाला, कोई ऐब (दोष) से युक्त, धनादि सुख से पूर्ण, सभी का सत्कार करने वाला तथा अपने कुल में सर्वमान्य होता है किन्तु नाना के कुल में कुठार सदृश (नाश करने वाला) होता है ॥ ३२ ॥

अथ सप्तमभावगतमङ्गलफलम्—

कमशहवत्त किरयांवश्चबेरो नहि स्या-
ज्जिहिल जुलुमजङ्गैर्युङ्न चाल्पः खमाणे ।
तनुधनगमवेश्मस्त्री-सुखैर्वर्जिताङ्गो
भवति यदि जलादुल्कल्कको जन्मकाले ॥ ३३ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम भाव में मङ्गल हो तो मनुष्य अल्प स्त्री सम्भोग करने वाला, कष्ट से जीवन बिताने वाला, अन्याय से युद्ध करने वाला तथा शरीर, धन, गृह और स्त्री सुख से वर्जित होता है ॥ ३३ ॥

अथ अष्टमभावगतमङ्गलफलम्—

यदि भवति जलादुल्कल्कको मौतखाने
सततमहितभाषी गुह्यरुक्स्त्रीसुखोनः ।
मुतफकिरबदामे जौहरी सोथ जख्मी
कमफहममनः स्याल्लागरोऽसृग्धिकारैः ॥ ३४ ॥

यदि जन्मलग्न से अष्टम भाव में मङ्गल हो तो मनुष्य सदा

अप्रिय बोलने वाला, गुप्त रोग से युक्त, स्त्रीसुख से विहीन, चिन्तित रहने वाला, जौहरी (हीरा मोती आदि को पहचानने वाला) जख्म (शस्त्र घात) तथा शोथ (सूजन) रोग से कष्ट पाने वाला, बुद्धिविहीन, दुर्बल शरीर वाला और रक्त दोष से दुःख भोगने वाला होता है ॥ ३४ ॥

अथ नवमभावगतमङ्गलफलम्—

नरपतिकुलमान्यः स्वलभो बन्दनादौ
भवति यदि जलादुल्कल्कको बख्तखाने ।
परयुवतिरतः स्यान्मानदो भाग्यवान्वै
पुरजसुखसुसिद्धो हिर्जगर्दश्च लेखः ॥ ३५ ॥

यदि जन्मलग्न से नवम स्थान में मङ्गल हो तो मनुष्य राजाओं के यहाँ यश पाने वाला, सर्वमान्य, परस्त्री से प्रेम करने वाला, भाग्यवान्, ग्राम्यसुख को भोगने वाला तथा व्यर्थ घूम-घूम कर समय बिताने वाला होता है ॥ ३५ ॥

अथ दशमभावगतमङ्गलफलम्—

पुरफितरितसंज्ञः काबिलो नेककिर्दा-
र्नयसमरिह लोके पूजितः साहसी च
मिहिरजरजलालज्जारजेवर्युतो ना
भवति यदि मिरोखोशाहखाने सखी स्यात् ॥ ३६ ॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में मङ्गल हो तो, मनुष्य धनवान्, बुद्धिवान्, इमानदार, कंजूस, नीतिज्ञ, बन्धुजनों से पूजित, साहसी, जाल करने वाला, लज्जावान्, भूषणप्रिय और धन आदि से युक्त होकर दानी होता है ॥ ३६ ॥

अथ एकादशभावगतमङ्गलफलम्—

जरमखमलमर्ज्याँजर्कशीसाहिबीभि-
स्तुरगरथपदात्यैर्युग्जनश्चारिहीनः ।

यदि भवति जलादुल्कल्कको याफ्तिखाने
मदनसमरदक्षः पण्डितः सत्यगन्ता ॥३७॥

जिसके जन्मलग्न से एकादश स्थान में मंगल हो वह मनुष्य जरी, रेश्मी, मखमली आदि कीमती वस्त्रों से युक्त, प्रतापशाली, घोड़ा, हाथी, सवारी गाड़ी, नौकर-चाकर आदि रखनेवाला, दुश्मनों से रहित, कामक्रीड़ा में समर्थ तथा बुद्धिमान और सत्य-वादी होता है ॥

अथ द्वादशभावगतमङ्गलफलम्—

यदि भवति मिरीखः खर्चखाने गतश्च
स्वजनहृदयभेत्ता कर्कशैर्ना वचोभिः ।
महमहवजजुल्मी साहिदोबेजनः प्राग्
जठरदहनदर्पो नुर्हमेशः परेशान् ॥३८॥

यदि जन्मकाल में द्वादश भाव में मंगल हो तो, मनुष्य अपने बन्धुवर्गों को कटुवचन कहकर कष्ट देनेवाला, विशेष उत्पात मचाने-वाला, क्रोधी और सर्वदा व्यर्थ परेशान रहने वाला होता है ॥३८

इति तन्वादिभावगतमङ्गलफलम् ।

अथ बुधफलम्

तत्र लग्नगतबुधफलम्—

साहब् सवारो जितखूब·ोमा
तुतारहः साहवहिम्मतश्च ।
ताले भवेच्चेत्सततं विनीतो
दानीचिरं चात्मजसौख्ययुक् स्यात् ॥३९॥

जिसके जन्मलग्न में बुध हो वह मनुष्य न्यायकर्ता, सवारी पर चलने वाला, सुन्दर रूपवाला, दयावान्, उत्साही, विनयी, दाता और बहुत काल तक पुत्र-पौत्रादि के सुख से सुखी रहता हैं ॥३९॥

अथ द्वितीयभागवतबुधफलम्—

शीरींसखुन् दानिशवर्गनीच-तवङ्गरः स्याद्यदि चश्मखाने ।
उतारदो ना स्वजनानुरक्तो भवेद्विनीतः शुभकृत्यमेति ॥४०॥

यदि जन्म लग्न से द्वितीय भाव में बुध हो तो मनुष्य मधुर वचन बोलने वाला, दानी होते हुए भी दानियों में नीच अर्थात् कम दान करने वाला, कुटुम्बियों से प्रीति रखने वाला, विनीत और शुभकार्य करने वाला होता है ॥ ४० ॥

अथ तृतीयभावगतबुधफलम्—

मुरौवती साहवदर्दसंज्ञः प्रभूतिमित्रप्रमदाप्रियश्च ।
उतारदश्चेन्नशरोयशीयुंखोनो भवेन्नाखुशरो हमेशः ॥४१

यदि जन्म लग्न से तृतीय भाव में बुध हो तो मनुष्य सुशील, प्रभावशाली, दयालु, सम्पत्ति से युक्त, मित्र-प्रिय, स्त्री से अधिक प्रेम करनेवाला, यशस्वी और हमेशा खुश-दिल रहता है ॥४१॥

अथ चतुर्थभावगतबुधफलम्—

पुष्टोऽनपत्योथ स वै यथेच्छो दानीश्वरो गीतप्रियः खसी च ।
उतारदः स्याद्यदि दोस्तखाने शीरींसखुन्कार्यगते मृषी च ॥

यदि जन्म लग्न से चतुर्थ भाव में बुध हो मनुष्य हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ शरीर वाला होते हुए भी सन्तान से हीन होता है और स्वतन्त्र, दानी, नाच-गान का प्रेमी, उदार, मधुर भाषी, आलसी और झूठ बोलने वाला होता है ॥ ४२ ॥

अथ पञ्चमभावगतबुधफलम्—

सुतान्वितः सुरंफितङ्कवेन्ना युतारदः स्याद्यदि अक्लखाने ।
दानाग्रणीः साविरसंज्ञकश्च शिगू फुरूसाहबहिम्मतश्च ॥४३

यदि जन्म लग्न से पंचम स्थान में बुध हो तो, मनुष्य पुत्रवान्, शौकीन, धनवान्, चतुर, बुद्धिमान्, महादानी, सन्तोषी, सुन्दर स्वरूप वाला और पूर्ण साहसी होता है ॥ ४३ ॥

अथ षष्ठभावगतबुधफलम्—

बेरो नरः स्यान्नसिआ विधानो
बद्खुल्कक्कः काहिलजाहिलोपि ।
वंदूंभकाने हि भवेदबीरु—
ल्कल्को यदा मांधविपक्षयुक्चेत् ।। ४४ ।।

यदि जन्मलग्न से षष्ठ स्थान में बुध हो तो, मनुष्य सदा दुःख भोगने वाला, बुद्धिहीन (मूर्ख), दीर्घसूत्री (आलसी), व्यर्थ कार्य करने वाला, शत्रुकृत उपद्रव से युक्त और मददगार से हीन होता है ।। ४४ ।।

अथ सप्तमभावगतबुधफलम्—

तालेवरः सत्यवचा मुसाहिब् परोपकारी जनखूबरो च ।
उतारदः स्याद्यदि सप्तमे च भवेन्नरः काबिल वा मुरौव्वतः।।

यदि जन्मलग्न से सप्तम भाव में हो तो, मनुष्य पूर्ण धनवान्, सत्यवादी, राजमन्त्री, परोपकारी, बुद्धिमान्, सुन्दर स्वरूपवान्, सुशील और प्रभावशाली होता है ।। ४५ ।।

अथ अष्टमभावगतबुधफलम्—

उमर्दराजः सुतरां सगर्वमेकंपुरं पार्थिवलब्धवित्तम्
बेरो विधानं हि नरं प्रकुर्यादुतारदो मार्गमकानगश्चेत्।।४६।।

यदि जन्मकाल में बुध अष्टम भाव में हो तो, मनुष्य दीर्घायु, अभिमानी, नगर का स्वामी, राजा से धन प्राप्त करनेवाला और बान्धवों से विरोध करनेवाला तथा पैदल चलने में आलसी होता है।।

अथ नवमभावगतबुधफलम्—

दानीश्वरः सत्यगुणैरुपेतः खुश्रो गनी धर्मपरस्तवङ्गरः ।
यदा दबीरुल्कुलको नशीबखाने भवेत्स प्रथितः शुभङ्करः ।।४७

यदि जन्मलग्न से नवम भाव में बुध हो तो, मनुष्य दाता,

धनी, सत्यवादी, गुणी, सुखी, लोक-विख्यात, धर्मपरायण और शुभकार्य करने वाला होता है ॥ ४७ ॥

अथ दशमभावगतबुधफलम्—

साहब् जलालो मुतमौवलः स्यान्नरेन्द्रमुख्यः शुभकर्मकृन्ना ॥
शीरींसखुन्साहबदर्दसंज्ञश्चोत्तारश्दचेत्खलु शाहखाने ॥४८॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में बुध हो तो, मनुष्य प्रभावशाली, धनवान्, राजाओं में श्रेष्ठ, शुभ कार्य करनेवाला, सुन्दर स्वरूप वाला, न्यायकर्ता, दयालु और मधुर वचन बोलने वाला होता है ॥ ४८ ॥

अथ एकादशभावगतबुधफलम्—

तवङ्गरश्चात्मजसौख्ययुक्स्याद्दानाग्रणीभूपप्रियस्सिपाही ।
सर्दारकः पाकदिलो दवीरुल्कल्कोयदा याफ्तिमकानगा स्यात्॥

यदि जन्म लग्न से एकादश भाव में बुध हो तो, मनुष्य धनवान् सुन्दर स्वभाव वाला, तेजस्वी, पुत्र के सुख से युक्त, दाताओं में श्रेष्ठ, राजा का प्रिय मुलाजिम या मुलाजिमों का सरदार, सच्चे दिलवाला और विनीत होता है ॥ ४९ ॥

अथ द्वादशभावगतबुधफलम्—

नापाक्जनैश्चारुगुणैरुपेतो वेतालकः कम्शदबर्वंददः ।
उतारदः स्याद्यदि खर्चखाने भवेद्धिरीसोपि च गर्दवर्दः ॥५०॥

यदि जन्मलग्न से द्वादश भाव में बुध हो तो, मनुष्य नीच जाति के संसर्ग में रह कर नीच गुणों से युक्त होता है और अपने इच्छानुसार काम करने वाला, किसी का भी कुछ नहीं सुननेवाला, दुःखी रहने वाला तथा व्यर्थ घूमने वाला होता है ॥ ५० ॥

इति तन्वादिभावगतबुधफलम्

अथ गुरुफलम् ।

तत्र लग्नगतगुरुफलम्—

मुश्तरी यदि भवेत्खलु ताले साहिवः खुशदिलो मनुजः स्यात्
आमिलः पुरुसखुन् सिरदारः फारसो ह्यकविरो महवूवः ।।

यदि जन्मलग्न में गुरु (वृहस्पति) हो तो, मनुष्य न्याय करने वाला, प्रसन्न चित्त से रहने वाला, ईश्वर का भक्त, सुखी, सुन्दर स्वरूप वाला, नायक (सरपंच), साफ सुथरा रहने वाला,कविता करने वाला और तेजस्वी होता है ।। ५१ ।।

अथ द्वितीयभावगतगुरुफलम्—

मुश्तरी यदि भवेज्जरखाने वुजरुगः परमपुण्य-मतिस्स्यात् ।
कामिलः कनकसूनुयुतश्च खूबरो हि मनुजो जरदारः ।।५२।।

यदि जन्मलग्न से द्वितीय स्थान में वृहस्पति हो तो मनुष्य वड़ा वुद्धिमान्, पुण्यकर्म करने में चित्त रखने वाला, सिद्धि को जानने वाला, सुवर्ण आदि धन से युक्त, सुन्दर शरीर वाला और सुखी होता है ।। ५२ ।।

अथ तृतीयभावगतगुरुफलम्—

गाफिलोबहुपराक्रमयुक् स्यान्मानवः परुषवाक्च वखीलः ।
पालको भवति श्रेष्ठजनानां मुश्तरी यदि विरादरखाने ।।५३।।

यदि जन्मलग्न से तृतीय भाव में वृहस्पति हो तो, मनुष्य गाफिल (उदासीनता से कार्य करने वाला), उत्साही, कटुवचन वोलने वाला, व्यर्थ बोलने वाला कंजूस और भले आदमी का पालन करने वाला होता है ।। ५३ ।।

अथ चतुर्थभावगतगुरुफलम्—

अश्वजर्जरकशीरथफीलैर्युग्जनः प्रियतमः खलु राज्ञः ।
मुश्तरी यदि भवेद्धि चहारुम्खानये सकलसौख्ययुतः स्यात् ।।

यदि जन्मलग्न से चतुर्थ स्थान में वृहस्पति हों तो, मनुष्य घोड़ा–हाथी–रथ, जरीदार वस्त्र आदि से युक्त धनी होता है और मधुर बोलने वाला तथा सभी सुख से युक्त होता है ॥५४॥

अथ पञ्चमभावगतगुरुफलम्—

पण्डितः पुरुतरद्दुद आर्यः पुत्रपौत्रसहितो महबूबः ।
मुश्तरी यदि भवेत्फरजन्दस्यालये न मनुजो जरदारः ॥५५॥

यदि जन्मलग्न से पञ्चम स्थान में वृहस्पति हो तो, मनुष्य पण्डित होता है तथा चिन्तायुक्त रहने वाला, पुत्र पौत्र से युक्त, तेजस्वी, प्रतिष्ठित और धनी होता है ॥ ५५ ॥

अथ षष्ठभावगतगुरुफलम्—

काहिलश्च बहुरोगयुतश्च मानवो वदसखुन्वदशिल्कः ।
मुं तरी यदि भवेद्रिपुखाने मातुलादिभवसौख्यविहीनः ॥५६॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठ स्थान में वृहस्पति हो तो मनुष्य बड़ा आलस ी, अनेक रोगों से युक्त, कटु वचन बोलने वाला, अपवाद (कलङ्क) से युक्त और मातामह पक्ष (मातृकुल) के सुख से विहीन हो ता है ॥ ५६ ॥

अथ सप्तमभावगतगुरुफलम्—

फाजिलः सुखयुतः सुविनीतो
हम्जवाक् च रमणीसुखयुक्तः ।
फारस श्च चतुरः किल ना स्यान्-
मुश्तरी यदि भवेज्जनखाने ॥५७॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम स्थान में वृहस्पति हो तो मनुष्य अनेक शास्त्र जानने वाला, सभी सुख से युक्त, बुद्धिमान्, विनीत स्वभाव वाला, सुन्दर बोलने वाला, स्त्री सम्बन्धी सुख से युक्त, शत्रु को जीतने वाला और नीरोग होता है ॥ ५७ ॥

अथ अष्टमभावगतगुरुफलम्—

बेदिलश्च परदेशरतश्च जाहिलः खलु नरः सगदश्च ।
मुश्तरी यदि हि हस्तमखाने गुस्वरः किल भवेज्जनमस्तः ॥

यदि जन्मलग्न से अष्टम स्थान में वृहस्पति हो तो मनुष्य निर्दयी, विदेश में रहने वाला, बुद्धिहीन, रोगी, क्रोधी और व्यर्थ विवाद करने वाला होता है ॥ ५८ ॥

अथ नवमभावगतगुरुफलम्—

हज्रते च खुशपरिजनवांश्च खूबरो वहुसुखी च मुशीरः ।
आमिलश्च यदि यख्तमखामे मुश्तरी प्रविभवेत्खलु यस्य॥५९॥

यदि जन्मलग्न से नवम भाव में वृहस्पति हो तो, मनुष्य कुलीन, भाग्यवान्, सुन्दर स्वरूप वाला, सुखी, यशस्वी, ईश्वर-भक्त और परिवारों से युक्त होता है ॥ ५९ ॥

अथ दशमभावगतमगुरुफलम्—

पालकीजलजवाहिरफीलः संयुतो विविधवस्त्रविशालैः ।
मुश्तरी भवति शाहमकाने साहबः खलु नरो नसरः स्यात् ॥

यदि जन्मलग्न से दशम स्थान में वृहस्पति हो तो, मनुष्य पालकी, नाव, जहाज, जवाहरात (रत्न), तथा हाथी आदि से युक्त, अनेक तरह के वस्त्र तथा जेवरात का रखने वाला, न्याय-कारी और वहुत आदमियों का सरदार होता है ॥ ६० ॥

अथ एकादशभावगतगुरुफलम्—

साबिरः शुभतनुर्जरदारः फारशो बहुपराक्रमयुक् स्यात् ।
काबिलश्च यदि याफ्तिमकानेमुश्तरी प्रविभवेत्खुशरो स्यात्॥

यदि जन्मलग्न से एकादश स्थान में वृहस्पति हो तो, मनुष्य सन्तोष रखने वाला, सुन्दर स्वरूप वाला विद्वान्, धनवान्, बल-वान्, चतुर, खुश रहने वाला और उत्साही होता है ॥ ६१ ॥

अथ द्वादसभावगतगुरुफलम्—

मुफ्लिसः कमफहम् गतलज्जो बदसखुंश्च रणभूतलचिन्तः ।
काहिलश्च यदि खर्चमकाने मुश्तरी भवति ना वदफैलः ॥६२॥

यदि जन्मलग्न से द्वादश भाव में वृहस्पति हो तो, मनुष्य व्यर्थ दिन काटने वाला, थोड़ा बोलने वाला, निर्लज्ज, कटुवचन बोलने वाला, युद्ध की चिन्ता करने वाला, आलसी और कुकर्म में धन खर्च करने वाला होता है ॥ ६२ ॥

इति तन्वादिभावगतगुरुफलम् ॥ १ ॥

अथ शुक्रफलम्

अत्र लग्नगतशुक्रफलम्—

अव्वलखाने जोहरा महबूबं मुकरवं नृपतिम् ।
दानिश्मन्दं मनुजं जरदारं जनखूबरो प्रकुरुते ॥ ६३ ॥

यदि जन्मलग्न में शुक्र हो तो, मनुष्य तेजस्वी, प्रतापशाली, धनवान्, राजा, दानी, सञ्चयशील, शौकीन और सुन्दर स्वरूप वाला होता है ॥ ६३ ॥

अथ द्वितीयभावगतशुक्रफलम्—

शीरींसुखुन् मनुष्यं जरजेवर्जर्कशीशालैः ।
यक्मिहरो जरखाने जोहरा कुरुते च सद्भूजं दक्षम् ॥६४॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय भाव में शुक्र हो तो मनुष्य मधुर वचन बोलने वाला, सदा प्रसन्न चित्त रहने वाला, रत्न तथा जरीदार वस्त्र आदि उत्तम-उत्तम वस्त्रों से युक्त और सत्कार्यपरायण होता है ॥ ६४ ॥

अथ तृतीयभावगतशुक्रफलम्—

जोहरा भवति बिरादर-खाने चेन्मानवो जातः ।
जोरावरो हरीशः सालस्यः सानुजस्साश्वः ॥ ६५ ॥

यदि जन्मलग्न से तृतीय भाव में शुक्र हो तो मनुष्य आलसी होता है तथा छोटे भाइयों से युक्त अत्यन्त बलशाली और घोड़ा रखने वाला होता है ॥ ६५ ॥

अथ चतुर्थभावगतशुक्रफलम्—

ऐयाशो मालदारो नेकीकारश्च फारसश्चेत्स्यात् ।
जोहरा दोस्तमकाने भवति मनुष्यः प्रियंवदश्चाढ्यः ॥ ६६ ॥

जिसके जन्मकाल में शुक्र चतुर्थ स्थान में हो वह मनुष्य व्यभिचारी, धनवान्, परोपकारी और सत्यकार्य करनेवाला, बुद्धिमान्, चतुर, शास्त्र जाननेवाला और मीठा वचन बोलनेवाला होता है ॥ ६६ ॥

अथ पञ्चमभावगतशुक्रफलम्—

दानीश्वरो मनुष्यः सुतधनधान्यैश्च संकुलो यस्य ।
जोहरा पञ्चमखाने भवति यदा हि महीपतेः प्रीतिः ॥ ६७ ॥

यदि जन्मलग्न से पञ्चम स्थान में शुक्र हो तो मनुष्य दाताओं में श्रेष्ठ, पुत्र-धन-सम्पत्तिसे युक्त और राजाका प्रिय होता है।।६७।

अथ षष्ठभावगतशुक्रफलम्—

यारोनः कम्सहवद् बेदर्दो जाहिलो जातः ।
खलु जोहरा हि दुश्मन् खाने वै वेदिलो भवति ॥ ६८ ॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठ स्थान में शुक्र हो तो, वह मनुष्य मित्र से विरोध करने वाला, निर्दयी, वेवकूफ, अपनी इच्छानुसार व्यवहार करने वाला, मूर्ख और चुगलखोर होता है ॥ ६८ ॥

अथ सप्तमभावगतशुक्रफलम्—

साहवदर्दः कुशलः सकलकलासु फारसो ना स्यात् ।
जोहरा हफ्तमखाने स्त्रीजनचिन्तासुरञ्जको भवति ॥ ६९ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम भवन में शुक्र हो तो मनुष्य न्यायकारी, दयालु, चतुर और सर्व कार्य में कुशल होता है। तथा

स्त्री चिन्ता से युक्त और क्रोधी होता है ।। ६९ ।।

अथ अष्ठमभावगतशुक्रफलम्—

मगरूरो बदखुल्कः स्त्रीधनसौख्यैश्च वर्जितो मनुजः ।
हत्तुमखाने जोहरा भवति वितृप्तं मनो न संग्रामे ।। ७० ।।

यदि लग्न से अष्टम भाव में शूक्र हो तो मनुष्य अभिमानी, कटु वचन बोलनेवाला, स्त्री और सुख से विहीन होता है तथा लड़ाई में अभिरुचि रखनेवाला होता हैं ।। ७० ।।

अथ नवमभावगतशुक्रफलम्—

नेकीकारः सुभगः खुशरो दानी च मानवो जोहरा ।
बख्तमकाने मुर्ताज् नशरश्च मज्लिसी भवति स इति ।। ७१ ।।

यदि जलमग्न से नवम भाव में शुक्र हो तो मनुष्य उत्तम कार्य करनेवाला, सुन्दर शरीरवाला, आनन्द से रहने वाला, दानी, धनी मानी, सभा-सोसाइटीमें भाग लेनेवाला और स्वाधीन होता है।७१।

अथ दशमभावगतशुक्रफलम्—

दर्राको जरदारः पितुगुरुभक्तश्च काबिलो मनुजः ।
जोह्रा शाहमकाने भवति मुशीरश्च साहबो वा स्यात् ।।७२।।

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में शुक्र हो तो वह मनुष्य दुष्ट स्वभाववाला, धनवान, माता, पिता और गुरुजनों की सेवा करनेवाला बुद्धिमान, रत्न आदि धातुओंकी पहचान करनेवाला होता है ।।७२।।

अथ एकादशभावगतशुक्रफलम्—

जरदारं महवूबं सिर्दारं वा मुरौवतं मनुजम् ।
यापितमकाने जोहरा मईशं पुरुदतं कुरुते ।। ७३ ।।

यदि जन्मलग्न से एकादश भाव में शुक्र हो तो मनुष्य धनवान्, तेजस्वी, अधिकारी, सुशील और राजा के समान यशस्वी होता है ।। ७३ ।।

अथ द्वादशभावगतशुक्रफलम्—

साहबखर्चो बदकार् कमसहृश्च मानवो ह्युदितः।
बदअक्लः किल जोहरा खर्चमकाने हि गुस्वरो भवति ॥७४॥

यदि जन्मलग्न से द्वादश भाव में शुक्र हो तो वह मनुष्य शौकीन, अधिक खर्च करनेवाला, नीच कर्म करने वाला, स्वेच्छा से व्यवहार करनेवाला, बुद्धिहीन और बहुत क्रोधी होता है ॥७४॥

इति खेटकौतुके तन्वादिभावगतशुक्रफलम्।

अथ शनिफलम्

तत्र लग्नगतशनिफलम्—

ताले यदि स्याज्जुहलो बदअक्लश्च लागरो मनुजः।
शठकम्बुरुं बेदिलः वाममतिपूर्णः प्रभुर्भवति ॥ ७५ ॥

यदि जन्मलग्न में शनि हो तो वह मनुष्य बुद्धिहीन, शरीर से दुर्बल, दुष्ट स्वभाववाला, कुरूप, निर्दयी, टेढ़ी बुद्धिवाला और अधिकारपूर्ण होता है ॥ ७५ ॥

अथ द्वितीयभावगतशनिफलम्—

यावागो बद्हालः कोतोदस्तश्च गुस्वरो जोह्लः।
जर्खाने यदि मनुजो नाढ्यः परदेशगश्चापि ॥ ७६ ॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय स्थान में शनि हो तो वह मनुष्य जीवन भर दुःखी रहनेवाला, तंगदिल से वितानेवाला, क्रोधी, व्यर्थ दिन वितानेवाला, धनहीन और परदेशगामी होता है ॥७६॥

अथ तृतीयभावगतशनिफलम्—

जोराबरो यशशीलः खुशदाना च मानवः सभ्यः।
अनुचरवृन्दसमेतो भवति यदा वै विरादरे जोह्लः ॥ ७७ ।

यदि जन्मलग्न से तृतीय भाव में शनि हो तो वह मनुष्य

पूर्ण वलशाली, यशस्वी, सर्वदा प्रसन्न चित्त रहनेवाला, सभा में चतुर और वहुत से नौकरों से युक्त होता है ।। ७७ ।।

अथ चतुर्थभावगतशनिफलम्—

मुतफक्किरो बहोशः परितप्तो मानसो जोह्लः ।
मादरखाने यदि स्यात् कमजोरश्च लागरो भवति ।। ७८ ।।

यदि जन्मलग्न से चतुर्थभाव में शनि हो तो वह मनुष्य सदैव चिन्तायुक्त, व्यवहार से उदासीन, मानसिक व्यथा से व्याकुल और सब तरह से कमजोर होता है ।। ७८ ।।

अथ पञ्चमभावगतशनिफलम्—

बदअक्लो मुत्फकिरः सुतसुखरहितश्च काहिलो मनुजः ।
जोह्लः पञ्जुमखाने कोतहदेहश्च जाहिलो भवति ।।७९।।

यदि जन्मलग्न से पञ्चम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य दुष्ट बुद्धिवाला, चिन्तित रहनेवाला, पुत्र सुख से विहीन, आलसी, नाटे शरीर वाला और विवेक से शून्य होता है ।। ७९ ।।

अथ षष्ठभावगतशनिफलम्—

दानीश्वरं जलीलं जनयति मनुजं मुकर्रमं नृपतिम् ।
निर्जितवैरिसमूहं दुश्मनूखाने स्थितो जोह्लः ।। ८० ।।

यदि षष्ठभाव में शनि हो तो मनुष्य दाताओं में श्रेष्ठ, चिन्ता से दुःखी, प्रभावशाली, राजा या राजा के समान होता है तथा शत्रुओं के दलों को जीतनेवाला होता है ।। ८० ।।

अथ सप्तमभावगतशनिफलम्—

बदरो जनः कृशाङ्गः कम्फहमश्च मानवो हिर्जः ।
जानो वा स्याज्जोहलो हफ्तुमखाने यदा भवति ।। ८१ ।।

यदि जन्म लग्न से सप्तम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य दुराचारी, दुर्बल शरीरवाला, अल्प बोलनेवाला, बुद्धिहीन और पराधीन रहने वाला होता है ।। ८१ ।।

अथ अष्टमभावगतशनिफलम्—

बीमारश्च हरीशो दगालबाजश्च दोजखी मनुजः।
जोह्लहस्तुमखाने भवति वखीलः कृपालसो भीरुः ॥ ८२ ॥

यदि जन्मलग्न से अष्टम भाव में शनि हो तो मनुष्य सदैव रोगयुक्त,आलसी, कपटी तथा सर्वदा खाने की चिन्ता में रहनेवाला व्यर्थ बात करनेवाला, विश्वासघाती, कुकर्मी और भीरु (डरने वाला) होता है ॥ ८२ ॥

अथ नवमभावगतशनिफलम्—

बख्तबुलन्दः श्रीमान् शीरींसखुनश्च मानवो यदि वै।
जोह्लो बख्तमकाने वेतालश्च हि कृपालुरपि भवति ॥ ८३ ॥

यदि जन्मलग्न से नवम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य जीवन में सुख से रहनेवाला, धनवान्, सुन्दर स्वरूपवाला, मधुर वचन बोलनेवाला, सुखी और दया से युक्त होता है ॥ ८३ ॥

अथ दशमभावगतशनिफलम्—

शाहमकाने जोह्लश्चेषु दशाप्ते च मानवो शाहः।
अथवा भवेन्मुशीरः खुशखुल्कः सुकृवी गनी नेही ॥ ८४ ॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य राजा या राजमन्त्री, सदैव सुखी रहनेवाला, पुण्यकार्य में हमेशा दत्त-चित्त, मानी, यशस्वी और अधिक प्रेम करनेवाला होता है ॥८४॥

अथ एकादशभावगतशनिफलम्—

साहबदर्दो नेकः शीरींसखुनस्तवङ्गरो ना स्यात्।
याप्तमकाने जोहल ईशः साबिरो रिपुहन्ता ॥ ८५ ॥

यदि जन्मलग्न से एकादश स्थान में शनि हो तो वह मनुष्य पञ्चायत करनेवाला, दयावान्, ईमानदार, मीठी बात करनेवाला,

रूपवान्, दुर्बल शरीरयुक्त, सन्तोषी, अधिकारी और शत्रुओं का नाश करने वाला होता है ।। ८५ ।।

अथ द्वादशभावगतशनिफलम्—

तङ्गहालो बदफेलः पापासक्तश्च मुफ्लिसो मनुजः ।
जोह्लः खर्चमकाने भवति हरीशः कृपालुरेव स्यात् ।। ८६ ।।

यदि जन्मलग्न से द्वादश भाव में शनि हो तो मनुष्य अधिक खर्च करने के कारण दुखी तथा व्यर्थ खर्च करनेवाला, कुकर्म में रत, बलवान् और दयालु होता है ।। ८६ ।।

इति खेटकौतुके तन्वादिभावस्थितशनिफलम् ।

अथ राहुफलम्

तत्र लग्नगतराहुफलम्—

अव्वलखाने यदा रासः खिस्मनाकश्च काहिलः ।
मनुजः स्वार्थकर्ता स्याद्भवेद् बेरोतु जाहिलः ।। ८७ ।।

यदि जन्मलग्न में राहु हो तो मनुष्य सर्वदा दुखी, आलसी, कुरूप, स्वार्थी, व्यर्थ वैर करनेवाला ओर मूर्ख होता है ।। ८७ ।।

अथ द्वितीयभावगतराहुफलम्—

कृजीवाहासिदरासो मालखाने च मुफ्लिसम् ।
करोति मनुजं वान्यदेशे धनसमन्वितम् ।। ८८ ।।

यदि जन्मलग्न से द्वितीय भाव में राहु हो तो वह मनुष्य अपने धर्म कर्म से विहीन, स्वेच्छा से दुःख सहनेवाला और अन्य देशों में जाकर धन कमाकर सुखी होता है ।। ८८ ।।

अथ तृतीयभावगतराहुफलम्—

पाकः शाहबलः स्याद्वै नेकनामी गनी सुखी ।
शीयुमखाने यदा रासः प्रभवेन्मनुजो धनी ।। ८९ ।।

यदि जन्मलग्न से तृतीय भाव में राहु हो तो मनुष्य शुचि से रहनेवाला, राजबल से युक्त, बड़ा यशस्वी, प्रभावशाली, सुखी, धनी और दानी होता है ॥ ८९ ॥

अथ चतुर्थभावगतराहुफलम्—

रासश्चेद्दोस्तखाने स्यात् परेशानो मुसाफिरः ।
नादानोऽपि च वादी च सौख्यहीनो विपक्षकः ॥ ९० ॥

यदि जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में राहु हो तो वह मनुष्य परेशान होकर विदेश में भ्रमण करनेवाला, अज्ञानी (मूर्ख), व्यर्थ विवाद करनेवाला, सुख से हीन और मित्र से विमुख तथा शत्रु से पीड़ित रहता है ॥ ९० ॥

अथ पञ्चमभावगतराहुफलम्—

पिसर्खाने स्थितो रासः पुत्रसौख्यविवर्जितम् ।
बहोशं दर्दशिकमं नादानं कुरुते नरम् ॥ ९१ ॥

यदि जन्मलग्न से पंचमभाव में राहु हो तो मनुष्य पुत्र सुख से विहीन, परिवार से उदासीन, शरीर से पीड़ा युक्त और नालायक होता है ॥ ९१ ॥

अथ षष्ठभावगतराहुफलम्—

म्लेच्छावनीशाद्द्रव्याप्तिर्दिलं च साहबं नरम् ।
बद्खानास्थितो रासः करोति रिपुसंक्षयम् ॥ ९२ ॥

यदि जन्मलग्न से षष्ठ स्थान में राहु हो तो वह मनुष्य म्लेच्छ (मुसलमान)जातीय राजा से धन का लाभ करनेवाला, पंचायत करनेवाला, दिल से उदार और शत्रुओं को नाश करनेवाला होता है ॥ ९२ ॥

अथ सप्तमभावगतराहुफलम्—

हिर्जंगदश्च तालो गुस्वरो बद्जनो भवेत् ।
हफ्तमूखाने यदा रासः कलही मनुजस्तदा ॥ ९३ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम भाव में राहु हो तो वह मनुष्य पागल के समान व्यर्थ क्रोध करके घूमनेवाला, क्रोधी, बुरे स्वभाववाला, व्यर्थ लड़ाई तथा विवाद करनेवाला होता है ॥ ९३ ॥

अथ अष्टमभावगतराहुफलम्—

हस्तमखाने यदा रासः शरीरी स्यान्मुसाफिरः ।
वेदीनः खिश्मनाकः स्याद् वदकारश्चमुफ्लिशः ॥ ९४ ॥

यदि जन्मलग्न से अष्टम भाव में राहु हो तो वह मनुष्य शरीर से सुन्दर, विदेश में रहनेवाला, क्रोधी, अनुचित कार्य करनेवाला, व्यर्थ विवाद करनेवाला और धनहीन होता है ॥ ९४ ॥

अथ नवमभावगतराहुफलम्—

वक्तखाने यदा रासः प्रभवेन्मनुजस्तदा ।
जवाहिर्जर्कशीयुक्तः साहबः सौख्यवान्नरः ॥ ९५ ॥

यदि जन्मलग्न से नवम भाव में राहु हो तो वह मनुष्य रत्नों से युक्त, जरीदार वस्त्रों का अधिकारी, वहुत नौकरों से युक्त और सुखी होता है ॥ ९५ ॥

अथ दशमभावगतराहुफलम्—

रासो वादशाहखाने भवेज्जोरावरो गनी ।
विपक्षपक्षरहितो मुईशः पुर्तरुद्दतः ॥ ९६ ॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में राहु हो तो वह मनुष्य बहुत बलशाली, दूसरों का उपकार करनेवाला, शत्रु से रहित, धनवान् और चिन्ता युक्त होता है ॥ ९६ ॥

अथ एकादशभावगतराहुफलम्—

याफ्तखाने भवेद्रासो जायते नहि साहबः ।
बेकारश्च कर्जमन्दः कलही मनुजस्तदा ॥ ९७ ॥

यदि जन्मलग्न से एकादश भाव में राहु हो तो मनुष्य विख्यात

और यशस्वी नहीं होता है, व्यर्थ कार्य में समय लगानेवाला, कर्ज लेनेवाला और बन्धुवर्गों से कलह करनेवाला होता है ॥ ९७ ॥

अथ द्वादशभावगतराहुफलम्—

रासः स्थितो यदा यस्य खर्चखाने भवेत्तदा ।
कलहप्रियबेकारः कर्जमन्दश्च मुपिलसः ॥ ९८ ॥

यदि जन्मलग्न से द्वादश भाव में राहु हो तो वह मनुष्य कलहप्रिय, व्यर्थ घूमकर समय नष्ट करनेवाला, कर्ज लेनेवाला धनहीन होता है ॥ ९८ ॥

इति खेटकौतुके तन्वादिभावगतराहुफलम् ॥

अथ केतुफलम्

सर्वभावगतकेतुफलम्—

यस्मिन्भावे फलं यद्धि राहोः प्रोक्तंशुभाऽशुभम् ।
तद्वदेव विजानीयात्तत्रैव शिखिनः फलम् ॥ ९९ ॥

इस खेटकौतुक नामक ग्रन्थ में राहु के सम्बन्ध से जिस भाव का जो फल कहा गया है, केतु का भी वैसा ही उस भाव का फल समझना चाहिए ॥ ९९ ॥ इति तन्वादिभावगतकेतुफलम् ।

इति खेटकौतुके ग्रहाणां द्वादशभावगतफलानि ।

अथ राजयोगाध्यायः

यदा माहताबो भवेन्मालखानं
मिरोखोऽथवा मुस्तरी बख्तखाने ।
अतारिद् विलग्ने भवेद्वख्शापूर्णो
भवेद्दानदारोऽथवा बादशाहः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा जन्मलग्न से द्वितीय भाव में और मंगल या वृहस्पति दशम भाव में हो तथा लग्न में बुध हो तो वह

मनुष्य वहुत वड़ा धनवान् या वादशाह होता है ॥ १ ॥

भवेदाफताबो यदा षष्ठखाने
पुनर्दैत्यपीरोऽथ केन्द्रे गुरुर्वा ।
सुजातः शुतर्फील्लताज्याहयाढ्यो
जरीजर्जरात्रस्यदातश्चिरायुः ॥ २ ॥

यदि जन्मकाल में षष्ठभाव में सूर्य हो, शुक्र या वृहस्पति केन्द्र (१।४।७।१०) में हो तो वह मनुष्य अपने कुल में प्रसिद्ध, गुणी, हाथी, घोड़े आदि से युक्त, जरीदार कपड़े का प्रिय, लज्जावान्, धनवान् और दीर्घायु होता है ॥ २ ॥

यदा चस्मखोरा भवेद्दोस्तखाने
ततो मुस्तरी दोस्तखानेऽथ लग्ने ।
अतारिद्धनस्थो वृहत्साहिवो स्याद्
वृहत् सुमखूमलखजानासुपूर्णः ॥ ३ ॥

यदि चतुर्थ भाव में शुक्र या वृहस्पति हो और लग्न में वुध हो तो वह मनुष्य वड़ा प्रतापी, उत्तमउत्तम वस्त्र, धन आदि से युक्त हो कर पूर्ण सुखी होता है ॥ ३ ॥

तृतीये भवेदाफताबस्य पुत्रो
यदा माहताबस्य पुत्रो विलग्ने ।
भवेन्मुस्तरी केन्द्रखाने नराणां
वृहत्साहिवी तस्य ताले रुजुः स्यात् ॥४॥

यदि लग्न से तृतीय स्थान में शनि, लग्न में वुध और वृहस्पति केन्द्र में हो तो वह मनुष्य वहुत प्रभावशाली, भाग्यवान्, राजा होता है ॥ ४ ॥

यदा मुस्तरी पञ्चखाने मिरीखो
यदा वख्तखाने रिपौ आफताबः ।

नरो वा अकूफो भवेत्कुञ्जरेशो
वृहद्रोशनो वाहिनीवारणाढ्यः ॥ ५ ॥

यदि जन्मलग्न से पंचम भाव में वृहस्पति, दशम भाव में मंगल और षष्ठ भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य वहुत वुद्धिमान्, हाथी, घोड़ा, सवारी से युक्त और बड़ा प्रतापी होता है ॥ ५ ॥

अतारिद् विलग्ने सुखे माहताबो
गुरुर्वख्तखाने तमो लाभखाने ।
जहानस्य खूबी भवेन्नेकबख्तः
खजाना गजाढ्यो मुलुक्साहिबीस्यात् ॥६॥

यदि जन्मकाल में लग्न में वुद्ध, तथा चतुर्थ भाव में चन्द्रमा, दशम भाव में वृहस्पति और एकादश भाव में राहु या केतु हो तो वह मनुष्य संसार भर में प्रसिद्ध पुण्य कार्य करनेवाला, पूर्णधनी और हाथी आदि सवारियों से युक्त राजा होता है ॥ ६ ॥

यदा देवपीरो भवेद् वख्तखाने
पुनर्दैत्यपीरोऽथवा स्वप्रखाने ।
अतारिद्विलग्ने तृतीये मिरीखः
शनिर्लाभखाने नरः काबिलः स्यात् ॥७॥

जिसके जन्मकाल में दशम भाव में ब्रृहस्पति, नवम भाव में शुक्र और लग्न में वुध, तृतीय भाव में मंगल तथा एकादश में शनि हो तो वह मनुष्य हर एक विद्या में चतुर और विख्यात होता है ॥

हमल्माहताबो व्यये आफताबो
यदा मुस्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे ।
भवेन्मानवो देवतेजस्कराढ्यो
बृहत्साहिबी बख्तखूबी कमालः ॥ ८ ॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम स्थान में चन्द्रमा, द्वादश में सूर्य,

केन्द्र (१।४।७।१०) या त्रिकोण (९।५) में वृहस्पति हो तो वह मनुष्य बहुत प्रतापी, देवता की तरह तेजस्वी, समय का उपयोग करनेवाला और चमत्कार युक्त होता है ॥ ८ ॥

खजानागजाढ्यो भवेल्लश्कराढ्यो
जहानप्रियो मुस्तरी जायखाने ।
मिरीखोऽथ लाभे बुधः पञ्जखाने
शनिः शत्रुखाने नरः काबिलः स्यात् ॥९॥

यदि जन्मलग्न से सप्तम भाव में वृहस्पति, एकादश में मंगल; पंचम भाव में बुध और षष्ठ भाव में शनि हो तो वह मनुष्य सेना, खजाना, सवारियों से युक्त, लोकप्रिय और बुद्धिमान होता है ॥

कमर् केन्द्रखाने शनिः शत्रुखाने
त्रिकोणेऽथवा मुश्तरी चश्मखोरा ।
स जातो नरः साविरः सद्गुणज्ञो
भवेच्छायरो मालदारोऽथ खूबी ॥ १० ॥

यदि जन्मकाल में चन्द्रमा केन्द्र (१।४।७।१०) में शनि षष्ठ स्थान में, वृहस्पति या शुक्र त्रिकोण (९।५) में हो तो वह मनुष्य पूर्ण सन्तोषी, सद्गुणों को जाननेवाला, कवि, धनी और सुन्दर स्वरूप वाला होता है ॥ १० ॥

मिरीखोऽथवा खेशशम्तौलिखाने
गुरुर्मौतराशौ जया माहतावः ।
भवेज्जन्मकाले यदा चश्मखोरो
जुलीखप्रहर्ता जहानप्रचण्डः ॥ ११ ॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय स्थान में मंगल, अष्टम में वृहस्पति, सप्तम में चन्द्रमा और लग्न में शुक्र हो तो वह मनुष्य शत्रुओं को नाश करनेवाला और संसार में प्रबल प्रतापी होता है ॥ १ ॥

धनस्थे कुमुद्वन्धु षष्ठे रविः स्यात्
सखव्योम्नि विचर्चेति विद्वान्कविश्च ।
वृहत्सावरी शालमखमलूबनातः
शुतुर्फीलफानूसतम्बूकनातः ॥१२॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय भाव में चन्द्रमा, षष्ठ भाव में सूर्य, चतुर्थ स्थान में बुध और दशम स्थान में शुक्र हो तो वह मनुष्य बड़ा प्रभावशाली, न्यायकर्त्ता, सन्तोषी, शास्त्र जाननेवाला, अच्छे-अच्छे वस्त्रों से युक्त और राजचिह्न से युक्त होता है ॥ १२ ॥

आयुखाने चश्मखोरा मालखाने च मुश्तरी ।
राहुजो पैदामकाने शाह होवे मुल्कका ॥ १३ ॥

यदि अष्टम भाव में शुक्र, द्वितीय भाव में वृहस्पति और जन्मलग्न में राहु हो तो वह मनुष्य चक्रवर्त्ती राजा होता है ॥ १३ ॥

यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने
यदा चश्मखोरा जमी वा समाने ।
तदा ज्योतिषी क्या लिखे क्या पढ़ेगा
हुआ बालका बादशाही करेगा ॥ १४ ॥

-यदि जन्मकाल में वृहस्पति कर्क या धनु राशि में हो तथा शुक्रदशम या द्वितीय भाव में हो तो दैवज्ञजन ऐसे जातक के फलादेश के लिये परिश्रम न करें क्योंकि वह जातक निश्चय बादशाह होगा ॥ १४ ॥

यदा चश्मखोरा भवेल्लग्नखाने
तदा मुश्तरी बख्तखाने विलग्नात् ।
स जातः शुतुर्फीलजातीहयाढ्यो
जरीजर्जरी वस्त्रदाता चिरायुः ॥ १५ ॥

यदि जन्मलग्न से दशम भाव में वृहस्पति और लग्न में शुक्र हो तो वह जातक चतुरंगिनी (हाथी, घोड़े, रथ और पैदल) सेनाओं से युक्त अच्छे-अच्छे वस्त्र धारण करनेवाला, धनी और दीर्घायु होता है ॥ १५ ॥

आफताबो मालखाने यस्य जन्मनि च ध्रुवम् ।
सकलरोजीमुश्किलं पड़ै फांके मुफ्लिसम् ॥ १६ ॥

यदि जन्मलग्न से द्वितीय भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य सभी व्यापार से विमुख होकर वहुत कष्ट से जीवन बितानेवाला और वेकार होता है ॥ १६ ॥

यदा शत्रुखाने पड़ै उच्चका ।
करै खाक दौलत फिरै जाबजा ॥ १७ ॥

यदि सूर्य उच्च राशि का होकर षष्ठ स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी सारी सम्पत्तियों को स्वाहा करके भटकता फिरता है ॥ १७ ॥

आयुखाने चश्मखोरा मालखाने मुश्तरी ।
सबाब्खाने चन्द्रदीदम् बाद्शाहम्बर्बरी ॥ १८ ॥

यदि जन्म लग्न से अष्टम स्थान में शुक्र और द्वितीय भाव में वृहस्पति तथा नवम भाव में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य राजा का वजीर अर्थात् मन्त्री होता है ॥ १८ ॥

हमल् आफताबो वृषे माहताबो
यदा मुश्तरो केन्द्रखाने त्रिकोणे ।
भवेन्मानवो दौलतो लश्कराढचो
वृहत्साहिवी तस्य खूबी कमालः ॥ १९ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तम भाव में मेष का सूर्य, वृष का चन्द्रमा और केन्द्र (१।४।७।१०) या त्रिकोण (९।५) में वृहस्पति हो तो वह मनुष्य धनी, सेना से युक्त, प्रभावशाली, सुन्दर स्वरूप-वाला, चमत्कारी और यशस्वी होता है ॥ १९ ॥

हमल् आफताबो वृषे माहताब—
स्त्रिकोणेऽपि वा मुश्तरी चश्मखोरा ।
नरो जायते राहरासन् गुणज्ञो
भवेच्छायरो मालदारोतिखूबी ॥२०॥

जिसके जन्मकाल में मेष का सूर्य सप्तम स्थान में, चन्द्रमा वृष राशि का और त्रिकोण (९।५) स्थान में वृहस्पति या शुक्र हो तो वह मनुष्य अनेक शास्त्रों के रहस्य को जाननेवाला, गुणवान्, कविता करनेवाला, धनवान् और अत्यन्त रूपवान् होता है ॥२०॥

यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने
झषे खेटपुत्रो वसेत् कारखाने।
समं वीक्षते खूबखेटाः समस्ता
भवेन्मर्दवं दर्दयन्तुं दयालुः ॥ २१ ॥

यदि जन्मकाल में वृहस्पति कर्क या धनु राशि में हो और मीन राशि का शनि द्वितीय भाव में हो और सभी शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो वह मनुष्य वड़ा सामर्थ्यवान् और दयालु होता है ॥२१॥

यदा भाग्यमालिक भले घर पड़े
कमाकर सुदौलत् खजाने भरै।
करेंगे जवख्शी अमीरी सुफल
वजीरी अमीरी करैं बेफिकर ॥ २२ ॥

यदि भाग्येश (नवमेश) उत्तम स्थान में अर्थात् अपने उच्च मूलत्रिकोण स्वराशि मित्रगृह इत्यादि शुभ स्थान में हो तो वह मनुष्य अपनी बुद्धि से धन कमाकर अपने खजाने को भरता है और आनन्दपूर्वक सुख से जीवन व्यतीत करता है ॥ २२॥

यदा चश्मखोरा भवेद् हफ्तखाने
शशी दोस्तखाने मिरीखोऽथ नक्रे।
सुरत्कमालो नरो दीनदारो
गनीमप्रहन्ता जहानप्रचण्डः ॥ २३ ॥

यदि जन्मकाल में शुक्र सप्तम् स्थान में चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में और मंगल मकर राशि में हो तो वह मनुष्य अत्यन्त सुन्दर

स्वरूपवाला, परोपकार करनेवाला, दयालु, शत्रुओं का नाश करनेवाला और विख्यात होता है ॥ २३ ॥

जमीऽजोथ नक्रे शनौ मौतखाने
गुरौ माहराशौ जरे माहताबः ।
भवेज्जन्मकाले नरो वा उदारो
गनीमप्रहन्ता जहानप्रचण्डः ॥ २४ ॥

यदि जन्मकाल में मंगल मकर राशि में, शनि अष्टम में, वृहस्पति कर्क राशि में होकर द्वितीय भाव में हो या चन्द्रमा वृहस्पति के सदृश हो तो वह मनुष्य उदार हृदयवाला, दयालु, शत्रुओं को नाश करनेवाला और संसार में प्रसिद्ध होता है ॥ २४ ॥

यदा मुश्तरी केन्द्रखाने त्रिकोणे
यदा वक्तखाने रिपौ आफतावः ।
अतारिद् विलग्ने नरो बख्तपूर्ण-
स्तदा दीनदारोऽथवा बादशाहः ॥ २५ ॥

यदि जन्मलग्न से वृहस्पति केन्द्र (१।४।७।१०) या त्रिकोण (९।५) में हो, सूर्य षष्ठ भाव में या दशम भाव में हो और बुध लग्न में हो तो वह मनुष्य समय को चरितार्थ करनेनाला, पूर्ण धनवान् दयालु और बादशाह होता है ॥ २५ ॥

इति वरौनीग्रामवास्तव्य श्रीवंशीधरशर्मात्मजज्यौतिषाचार्य-
ज्यौतिषतीर्थ-काव्यरत्नझोपाख्यश्रीदीनानाथशास्त्रि-
कृतभावबोधिनीभाषाटीका समाप्ता ।

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ।

- :०: -

वर्षयोगावली

'बालक्रीडा' हिन्दी व्याख्या सहित

व्याख्याकार—आचार्य मधुसूदन शास्त्री

दैवज्ञ पं० रामशास्त्रि संगृहीत फलित ज्यौतिष ग्रन्थों का सारभूत यह ग्रन्थ भगीरथ प्रयत्न से प्रकाश में आया है। इसमें वर्ष-फल, मास-फल तथा दिन-फल का सविमर्श विवेचन करके अरिष्ट-भंग विचार, नष्टकुण्डली निर्माण प्रकार, इष्ट शोधन प्रकार, सप्त वर्गफल आदि का गंभीर विवेचन करते हुए प्रत्येक अरिष्ट के कुफल तथा उसकी शान्ति विधि भी लिखी गई है। हिन्दी व्याख्या हो जाने से संस्कृतेतर फलित ज्यौतिष के जिज्ञासु विद्वानों के लिए भी यह ग्रन्थ फलादेश करने में अद्वितीय है। ८-०

बिहार पूर्वमध्यमापाठ्य स्वीकृत—

नाहिदत्तपञ्चविंशतिका

सविमर्श 'इन्दुमती' हिन्दी व्याख्या सहित

व्या०—पं० रामचन्द्र झा

पं० नाहिदत्त दैवज्ञ कृत इस पुस्तक में नित्यप्रति व्यवहार में आने वाले सभी शुभ मुहूर्तों का संग्रह है। किन्तु संस्कृत पद्यबद्ध होने से सर्वसाधारण के लिये यह बोधगम्य नहीं थी, अतः धर्मशास्त्रीय विमर्श के साथ इसकी हिन्दी टीका की गयी है। अब इसके अध्ययन से असंस्कृतज्ञ पण्डित भी दैवज्ञ बन सकता है १-००

THE
HARIDAS SANSKRIT SERIES
163

THE

BHĀVAPHALĀDHYĀYA

OF

SRĪ LOMAS'A & BHṚUGU

भृगु-लोमश-संहिताद्वयोक्त—

भावफलाध्यायः

'भावबोधिनी' 'विमला' हिन्दीव्याख्योपेतः

व्याख्याकारः—

श्री पं० दीनानाथझा ज्यौतिषाचार्यः

तथा

श्री पं० अच्युतानन्दझा ज्यौतिषाचार्यः

प्रकाशकः—

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी : १

द्वितीयावृत्तिः] मूल्यं [ई० १९६३

प्राक्कथन

इस कलिकाल में भी महर्षि लोमश प्रणीत लोमशसंहिता और भृगु प्रणीत भृगुसंहिता का कितना यथार्थ फल घटता है, यह बात किसी से छिपी नहीं है। इनमें लग्नेश आदि का लग्नादि द्वादश भावों में स्थित होने से जो फल कहा गया है, इसमें कितना याथार्थ्य है इसको प्रायः सब फलादेश करने वाले ज्यौतिषी प्रतिदिन अनुभव करके जान ही रहे हैं। अतः इसकी प्रशंसा करना उन लोगों के समक्ष व्यर्थ है।

एतादृश ग्रन्थ खण्ड (भावफलाध्याय) होने पर भी सम्पूर्ण ग्रन्थ का अधिक मूल्य होने के कारण सर्वसाधारण को रखना असम्भव सा देख चौखम्बा संस्कृत सीरीज के अध्यक्ष बाबू श्री जयकृष्णदास जी गुप्त ने श्री लोमशसंहितोक्त तथा भृगुसंहितोक्त 'भावफलाध्याय' की हिन्दी टीका कराकर प्रकाशित किया है।

इस पुस्तक के संशोधन करनें में भ्रमवश मुझ से या मुद्रण के दोष से कहीं त्रुटि रह गई हो तो पाठक उसको शुद्ध कर अनुगृहीत करें।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसदुन्ति जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

प्रार्थी—

—अच्युतानन्द झा

मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी, सं० २०२०

श्रीभृगुसंहितोक्त—

भावफलाध्यायः

'भावबोधिनी' हिन्दीव्याख्योपेतः

अथ लग्नेशफलम्

लग्ननाथो यदा लग्ने अरुजो दीर्घजीविनः।
वल्लभोऽतिसुमूर्त्तिश्च भूधनेन विभूषितः ॥ १ ॥

यदि जन्म काल में लग्नेश लग्न में हो तो वह मनुष्य नीरोग, दीर्घायु, लोकप्रिय, अत्यन्त सुन्दर शरीर वाला और पृथ्वीसम्बन्धी धन से शोभित होता है ॥ १ ॥

लग्ननाथो धनस्थाने धनवान्स्थूलदेहिनः।
सत्कर्म कुरुते नित्यं प्रधानं जायते कुले ॥ २ ॥

यदि लग्नेश धन (द्वितीय) स्थान में हो तो वह मनुष्य धनवान्, स्थूल शरीर वाला, सर्वदा उत्तम कार्य करने वाला और अपने कुल में प्रधान (श्रेष्ठ) होता है ॥ २ ॥

लग्नेशः सहजस्थश्चेद् बन्धुमित्रसमाकुलः।
दाता शूरश्च धर्मात्मा बलवीर्यसमन्वितः ॥ ३ ॥

यदि जन्मकाल में लग्नेश तृतीय स्थान में हो तो वह मनुष्य मित्र और बन्धुवर्गों से युक्त, दानी, संग्राम में लड़ने वाला; धर्मात्मा और बल तथा उत्साह से युक्त होता है ॥ ३ ॥

लग्नेशे तुर्यगे यस्य स नरः भूपवल्लभः।
दीर्घायुश्च क्षुधाधिक्यं मातापित्रोश्च सेवकः ॥ ४ ॥

यदि जन्मकाल में लग्नेश चतुर्थ स्थान में हो तो वह मनुष्य राजा का प्रिय पात्र, दीर्घायु, क्षुधालु और माता-पिता की सेवा करने वाला होता है ॥ ४ ॥

लग्नेशे पञ्चमस्थाने सत्कर्मी सन्ततिर्भवेत् ।
सुधीः सद्बहुलोकज्ञः नृत्यगीतादिकप्रियः ॥ ५ ॥

यदि लग्नेश जन्मकाल में पञ्चम स्थान में हो तो वह मनुष्य उत्तम कार्य करने वाला, सन्तानों से युक्त, विद्वान्, सज्जन मनुष्यों का प्रिय-पात्र और नाच-गाने का भी प्रिय (शौकीन) होता है ॥ ५ ॥

षष्ठे लग्नपतिर्यस्य भूमिलाभकरः सदा ।
कृपणो धनवृद्धिश्च स्वपक्षपरिमर्दकः ॥ ६ ॥

यदि जन्मकाल में लग्नेश षष्ठ स्थान में हो तो वह मनुष्य भूमि लाभ करने वाला, कृपण स्वभाव वाला, धन की वृद्धि करने वाला और अपने बन्धु-बान्धवों को कष्ट देने वाला होता है ॥ ६ ॥

लग्नेशे सप्तमस्थाने तेजस्वी शीलवान्नरः ।
भार्या तस्य सुशीला च सुरूपा मिष्टभाषिणी ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकाल में लग्नेश सप्तम स्थान में हो वह मनुष्य तेजस्वी (प्रभावशाली), सुशील होता है, और उसकी स्त्री भी सुशीला सुन्दरी, तथा मधुरभाषिणी होती है ॥ ७ ॥

अष्टमे लग्ननाथाय कृपणो धनसञ्चकः ।
शुभग्रहे दीर्घमायुः क्रूरे स्वल्पाब्दजीविनः ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकाल में लग्नेश अष्टम स्थान में हो वह मनुष्य कृपण (कंजूस) और धन इकट्ठा करने वाला होता है। यदि लग्नेश शुभग्रह हो तो वह मनुष्य दीर्घजीवी होता है, और पापग्रह हो तो अल्पायु होता है ॥ ८ ॥

धर्मे मूर्तिपतिर्यस्य यशस्वी धनसंयुतः ।
पराक्रमी सुशीलश्च विख्यातश्च नरो भवेत् ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकाल में लग्नेश नवम स्थान में हो वह मनुष्य यशस्वी और धनवान् होता है तथा पराक्रमी (उत्साही), सुशील और प्रसिद्ध होता है ॥ ९ ॥

यस्य लग्नपतिः कर्मे सुशीलः पण्डितो जनः ।
राजमानी धनाढ्यश्च विश्रुतो गुरुपूजकः ॥ १० ॥

जिसके जन्मकाल में लग्नेश दशम स्थान में हो तो वह मनुष्य सुशील, विद्वान्, राजमानी, धनाढ्य, संसार में प्रसिद्ध और गुरु-भक्त होता है ॥ १० ॥

तनुपो लाभगे यस्य सुखसन्तानसंयुतः ।
विपाके ख्यातिमान् ज्ञेयः तेजस्वी दीर्घमायुषः ॥ ११ ॥

जिसके जन्मकाल में लग्नेश एकादश स्थान में हो वह मनुष्य सुखी, सन्तानों से युक्त, वृद्धावस्था में विख्यात, तेजस्वी और दीर्घायु होता है ॥ ११ ॥

लग्ननाथो व्ययस्थाने निष्ठुरो बहुभाषकः ।
साभिमानी मलीनश्च विदेशे भ्रमणं भवेत् ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकाल में लग्नेश द्वादश स्थान में हो वह मनुष्य कठोर स्वभाव वाला, बोलने वाला, अभिमानी, दुष्ट स्वभाव वाला और विदेश में घूमने वाला होता है ॥ १२ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावस्थितलग्नेशफलम् ।

अथ द्वितीयेशफलम्

धननाथो यदा लग्ने कृपणो जायते नरः ।
श्रीपतिर्विदितो लोके स्वार्थसाधनतत्परः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकाल में द्वितीयेश लग्न में हो वह मनुष्य कृपण, संसार में श्रीपति (सेठ या करोड़पति) की उपाधि से भूषित और अपने अभीष्ट साधन करने में तत्पर रहता है ॥ १ ॥

धनपे धनराशिस्थे महाधनपतिर्भवेत् ।
स्वजने सुखभोक्ता च मणिरत्नादिसंचकः ॥ २ ॥

जिसके जन्मकाल में द्वितीयेश द्वितीय स्थान में हो वह मनुष्य बहुत बड़े धनेश, परिजनों के सुख से सुखी और मणि तथा रत्नादि का सञ्चय करने वाला होता है ॥ २ ॥

धनेशे सहजस्थाने बान्धवानां प्रियो नरः ।
नानाभोगसमायुक्तो वीर्यवांश्च महोद्यमी ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकाल में द्वितीयेश तृतीय स्थान में हो वह मनुष्य अपने बन्धु-बान्धवों का प्रिय-पात्र, अनेक भोग सुख से युक्त, बलवान् और बड़ा उद्योगी होता है ॥ ३ ॥

तुर्यस्थाने धनेशस्थे पितृभक्तिरतः सदा ।
दीर्घमायुरतिक्रूरो विदेशे मृत्युमाप्नुयात् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकाल में द्वितीयेश चतुर्थ स्थान में हो वह मनुष्य पिता की भक्ति में सर्वदा रत रहने वाला, दीर्घायु, अत्यन्त क्रूर स्वभाव वाला होता है और विदेश में उसकी मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

धनपो पञ्चमे यस्य कृपणो दुःखभाजकः ।
कृच्छ्रेण धनमाप्नोति निन्द्यकर्मरतः सदा ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकाल में द्वितीयेश पञ्चम स्थान में हो वह मनुष्य कृपण, दुःख भोगने वाला, बहुत कठिन से धन कमाने वाला और सदा नीच कर्म करने वाला होता है ॥ ५ ॥

कुटुम्बेशगते षष्ठे द्रव्यसंग्रहतत्परः ।
भूलाभो रिपुहन्ता च मातृपक्षे सुखप्रदः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकाल में द्वितीयेश षष्ठ भाव में हो वह मनुष्य धन इकट्ठा करने में तत्पर, पृथ्वी लाभ करने वाला, शत्रुओं को नाश करने वाला और मातृ पक्ष (मामा-मामी, नाना-नानी, मौसी आदि) को सुख देने वाला होता है ॥ ६ ॥

जायाभावे धनेशस्थे सुभोगी शुभचिन्तकः।
शुभे धनवती भार्या क्रूरे वन्ध्या च दुर्भगा ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकाल में द्वितीयेश सप्तम स्थान में हो वह मनुष्य अनेक प्रकार का सुख विलास करने वाला और उत्तम विचार करने वाला होता है, यदि द्वितीयेश शुभग्रह हो तो उस मनुष्य की स्त्री धनवती होती है, यदि पापग्रह हो तो पुत्र से हीन और दुर्भगा (दुष्ट स्वभाव वाली) होती है ॥ ७ ॥

धननाथोऽष्टमस्थाने कापाली चात्मघातकः।
उच्चवंशप्रसूतोऽपि सत्वरं लघुतां व्रजेत् ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकाल में द्वितीयेश अष्टम स्थान में हो वह मनुष्य कपाल (मनुष्य का मुण्ड) धारण करने वाला और आत्मघात करने वाला होता है। तथा उत्तम वंश में पैदा होने पर भी वह बहुत शीघ्र नीच अवस्था को प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

धनेशे धर्मगे सौम्ये भाग्यवृद्धिप्रदायकः।
क्रूरो भिक्षारतो नित्यं क्रोधनो बहुभाषकः ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकाल में द्वितीयेश नवम भाव में हो और यदि शुभ ग्रह हो तो भाग्यवृद्धिकारक होता है। यदि पापग्रह हो तो वह मनुष्य भिक्षा माँगने वाला, क्रोधी और अधिक बोलने वाला होता है ॥ ९ ॥

धननाथगते कर्मे राजद्वाराद्धनागमः।
सौम्यगृहे स्ववर्गस्य मातापित्रोश्च पालकः ॥ १० ॥

जिसके जन्मकाल में द्वितीयेश दशम भाव में हो उस मनुष्य को राजद्वार से धन की प्राप्ति होती है। और यदि दशम स्थान शुभ ग्रह की राशि गत हो तो वह मनुष्य अपने बन्धु वर्गों का और माता-पिता का पालन करने वाला होता है ॥ १० ॥

कुटुम्बेशगते लाभे व्यवहारी प्रियंवदः।
शूरो धनविहीनश्च शुभखेटे धनागमः॥ ११॥

जिसके जन्मकाल में द्वितीयेश एकादश भाव में हो वह मनुष्य व्यवहार में चतुर, प्रिय वचन बोलने वाला, धन से हीन होता है। यदि द्वितीयेश शुभ ग्रह हो तो उस मनुष्य को धन की प्राप्ति होती है ॥ ११ ॥

दुष्टकर्मरतो नित्यं धनेशो द्वादशे गृहे।
क्रूरे धनविहीनश्च सौम्ये भाग्यप्रदायकः॥ १२॥

यदि द्वितीयेश द्वादश स्थान में हो तो वह मनुष्य नित्य नीच कर्म करने वाला होता है। यदि द्वितीयेश पाप ग्रह हो तो वह मनुष्य धन से हीन होता है, यदि शुभ ग्रह हो तो भाग्य की वृद्धि होती है ॥ १२ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावगतद्वितीयेशफलम्।

अथ तृतीयेशफलम्

तृतीयेशगते लग्ने लम्पटो बहुभोजकः।
स्वजने भेदकारी च पुत्रदारविवर्जितः॥ १॥

जिसके जन्मकाल में तृतीयेश लग्न में हो वह मनुष्य धूर्त, बहुत भोजन करने वाला, अपने परिजनों से भेद करने वाला और स्त्री पुत्र से रहित होता है ॥ १ ॥

तृतीयेशे धने यस्य निर्धनः स्वल्पजीवनः।
क्रूरे बन्धुविरोधी च सौम्ये बन्धुप्रियो भवेत्॥ २॥

जिसके जन्मकाल में तृतीयेश द्वितीय भाव में हो वह मनुष्य धन से हीन और अल्पायु होता है। यदि तृतीयेश पाप ग्रह हो तो वह मनुष्य बन्धुओं का विरोधी होता है, और शुभग्रह हो तो बन्धुप्रिय होता है ॥ २ ॥

विक्रमेशे तृतीयस्थे बान्धवानां सुखप्रदः ।
द्विजदेवार्च्चने भक्तिर्नृपाल्लाभः समादिशेत् ॥ ३ ॥

यदि तृतीयेश तृतीय स्थान में हो तो वह मनुष्य बन्धुओं को सुख देनेवाला, ब्राह्मण, देवता के पूजन में श्रद्धालु और राजा से लाभ करने वाला होता है ॥ ३ ॥

तृतीयेशे चतुर्थस्थे सौम्ये पितृसुखान्वितः ।
पितृवित्तापहारी च क्रूरे धनविवर्जितः ॥ ४ ॥

यदि तृतीयेश शुभग्रह होकर चतुर्थ भाव में बैठा हो तो जातक पिता के सुख से युत होता है और यदि तृतीयेश पापग्रह होकर चतुर्थ में बैठा हो तो पिता के धन का नाश करने वाला तथा निर्धन होता है ॥ ४ ॥

तृतीयेशे पञ्चमस्थे बन्धुपुत्रादिरक्षकः ।
दीर्घायुः सुखभोगी च परोपकरणे रतः ॥ ५ ॥

यदि तृतीयेश पञ्चम स्थान में हो तो वह मनुष्य बन्धु-बान्धवों का तथा पुत्र का रक्षा करने वाला, दीर्घायु, सुख भोगनेवाला और परोपकार करने वाला होता है ॥ ५ ॥

बान्धवेशे गते षष्ठे बान्धवानां विरोधिता ।
नेत्रे रोगो रिपोर्भीतिश्चित्तभ्रान्तिः कदाचन ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकाल में तृतीयेश षष्ठ भाव में हो वह मनुष्य बन्धुओं से विरोध करने वाला, नेत्र से पीड़ित होता है । और उसको शत्रुओं का भय होता है, और कभी २ चित्त में भ्रान्ति (मतिभ्रम) भी होताहै॥६॥

सहजेशे गते द्यूने भार्या रूपवती सती ।
दिव्याभरणसम्पन्ना देवागारे सदा रतिः ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकाल में तृतीयेश सप्तम स्थान में हो तो उस मनुष्य की स्त्री अत्यन्त सुन्दरी और सती (पतिव्रता), उत्तम २ भूषण से, वस्त्र से सम्पन्न और देवताओं की भक्ति-परायणा होती है ॥ ७ ॥

भ्रातृनाथेऽष्टमं याते भ्राता तु सरुजो भवेत् ।
क्रूरेऽष्टमे भवेत्पीडा सौम्ये रोगविनाशकः ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकालमें तृतीयेश अष्टम स्थान में हो उस मनुष्य का भाई होता है। यदि तृतीयेश पापग्रह हो तो उस मनुष्य का भाई रोगी होता है, यदि तृतीयेश पापग्रह हो तो वह मनुष्य अष्टम वर्ष में स्वयं भी रोग से पीड़ित होता है। यदि शुभ ग्रह हो तो रोग नाश करने वाला होता है ॥ ८ ॥

भ्रातृनाथे गते धर्मे क्रूरे वन्धुभयप्रदः ।
सौम्ये बान्धवभक्तिश्च बान्धवानां सुखप्रदः ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकाल में तृतीयेश नवम स्थान में हो और तृतीयेश पापग्रह हो तो वह मनुष्य वन्धुओं को भय देने वाला होता है। यदि शुभ ग्रह हो तो बान्धवों का भक्त और वन्धुवर्गों को सुख देने वाला होता है ॥ ९ ॥

बान्धवेशे गते कर्मे नृपोऽपि भ्रातृवच्चरेत् ।
दिव्यवस्त्रधरो नित्यं स्वजातेर्मानवर्द्धनः ॥ १० ॥

जिसके जन्मकाल में तृतीयेश दशम स्थान में हो उस मनुष्य को राजा भी भाई के समान व्यवहार करता है और वह मनुष्य सुन्दर वस्त्र पहरने वाला और अपने जाति तथा वंश की मर्यादा वढ़ाने वाला होता है ॥ १० ॥

तृतीयेशगते लाभे वन्धूनां लाभदायकः ।
भोगैश्वर्यसमायुक्तो नित्यं सन्मानभाग्भवेत् ॥ ११ ॥

यदि तृतीयेश एकादश स्थान में हो तो वह मनुष्य वन्धुओं को लाभ पहुँचाने वाला; भोग तथा ऐश्वर्य से युक्त होकर नित्य सत्कार (आदर) का भागी होता है ॥ ११ ॥

सहजेशे व्ययस्थाने दूरे वसति बान्धवः ।
अथवा स्वल्पप्रीतिश्च जायते नात्र संशयः ॥ १२ ॥

यदि जन्म काल में तृतीयेश द्वादश स्थान में हो त उसो मनुष्य का भाई दूरमें रहने वाला होता है, अर्थात् वह मनुष्य भाई के सुख से रहित होता है, अथवा भाइयों के साथ स्वल्प (थोड़ी) प्रीति होती है ॥ १२ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावगततृतीयेशफलम् ॥

अथ चतुर्थेशफलम्

चतुर्थेशे गते लग्ने मातृस्नेहः प्रजायते ।
भोगैश्वर्यसमायुक्तो पितुः सुखविवर्जितः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकाल में चतुर्थेश लग्न में हो वह मातृस्नेहवान, भोग तथा ऐश्वर्य से युक्त और पितृ-सुख से रहित होता है ॥ १ ॥

पातालेशे धनस्थे च क्रूरे पितृविरोधिकृत् ।
शुभश्चेत्पितृभक्तश्च पितुराज्ञां प्रपालकः ॥ २ ॥

जिसके जन्मकाल में चतुर्थेश द्वितीय स्थान में हो और पापग्रह हो तो वह मनुष्य पिता से विरोध करने वाला होता है। यदि शुभ ग्रह तो हो पिता की भक्ति करने वाला और पिता की आज्ञा पालन करने वाला होता है ॥ २ ॥

चतुर्थेशगते वीर्ये वान्धवानां प्रियं करः ।
मातापित्रोः सुसेवी च धनसन्तानवर्द्धनः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकाल में चतुर्थेश तृतीय स्थान में हो वह मनुष्य वन्धुओं का प्रिय करने वाला, माता-पिता की सेवा करने वाला तथा धन और पुत्र की वृद्धि करने वाला होता है ॥ ३ ॥

तुर्यनाथगते तुर्ये पितृलाभकरः सदा ।
राजद्वारेऽतिमान्यं च भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकाल में चतुर्थेश चतुर्थ स्थान में हो वह मनुष्य पिता को लाभ कराने वाला होता है। और उसकी राजद्वार में बड़ी प्रतिष्ठा

होती है। यह भृगु जी का वचन है, इसमें संशय नहीं ॥ ४ ॥

तुर्यनाथे सुतस्थाने गजाश्वादिसमन्वितः।
सुतसौख्यसमायुक्तो दीर्घायुः सुखभाग्भवेत् ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकाल में चतुर्थेश पंचम स्थान में हो वह मनुष्य हाथी-घोड़े आदि से युक्त तथा पुत्र के सुख से युक्त, दीर्घायु और सुख भोगने वाला होता है ॥ ५ ॥

चतुर्थेशरिपुस्थाने पितुरर्थविनाशकः।
क्रूरे वैरकरो नित्यं सौम्ये च धनसंचकः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकाल में चतुर्थेश षष्ठ भाव में हो वह मनुष्य पिता के धन को नाश करने वाला होता है, यदि चतुर्थेश पापग्रह हो तो पिता से तथा अन्य जनों से वैर (विरोध) करने वाला, शुभग्रह हो तो धन का संचय (इकट्ठा) करने वाला होता है ॥ ६ ॥

चतुर्थेशगते द्यूने भार्या रूपवती भवेत्।
सौम्ये प्रीतिकरी भार्या क्लीवत्वं च कुजे स्थिते ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकाल में चतुर्थेश सप्तम स्थान में हो उस मनुष्य की स्त्री सुन्दरी होती है। यदि चतुर्थेश शुभग्रह हो तो स्त्री प्रीति करने वाली होती है। यदि चतुर्थेश मंगल हो तो स्त्री नपुंसकता को प्राप्त होती है ॥ ७ ॥

चतुर्थेशाष्टमे याते क्रूरे रोगान्वितः सदा।
म्लेच्छकर्मरतो नित्यं भृगुणा परिभाषितम् ॥ ८ ॥

यदि चतुर्थेश पापग्रह होकर अष्टम स्थान में हो तो वह मनुष्य जीवन भर रोग से युक्त होकर पीड़ित रहता है और म्लेच्छकर्म याने हिंसा आदि कर्म करने में रत रहता है, ऐसा भृगुजी ने कहा है ॥ ८ ॥

चतुर्थेशगते धर्मे धर्मकर्मान्वितः सदा।
पितृधर्मसुसंग्राही निरपेक्षः प्रजायते ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकाल में चतुर्थेश नवम स्थान में हो वह मनुष्य सर्वदा धर्म कार्य में लगा रहता है, पिता के धर्मानुकूल धर्म ग्रहण करता है और सबसे निरपेक्ष याने किसी की भी परवाह नहीं करने वाला होता है॥ ९ ॥

पातालेशगते कर्मे मातापित्रोः सुखप्रदः ।
राजद्वारा धनाप्तिञ्च ह्याज्ञाकारी भवेन्नरः॥ १० ॥

जिसके जन्मकाल में चतुर्थेश दशम भाव में हो वह मनुष्य अपने माता और पिता को सुख देने वाला और आज्ञाकारी तथा राज-दरबार से धन प्राप्ति करने वाला होता है ॥ १० ॥

लाभस्थाने चतुर्थेशे पिता तस्य विदेशगः।
पापखेटे विजानीयात परदेशे जनिर्भवेत् ॥ ११ ॥

जिसके जन्मकाल में चतुर्थेश एकादश स्थान में हो उस मनुष्य का पिता सदैव परदेशी होता है। यदि चतुर्थेश पापग्रह होकर एकादश स्थान में हो तो उस मनुष्य का जन्म भी परदेश में ही समझना चाहिये ॥ ११ ॥

तुर्यनाथे व्ययस्थाने सदा रोगान्वितो नरः।
न किञ्चित् सुखमाप्नोति भृगुवाक्यं न संशयः॥ १२ ॥

जिसके जन्मकाल में चतुर्थेश द्वादश स्थान में हो वह मनुष्य सदैव रोग से पीड़ित रहता है और जिन्दगी में कुछ भी सुख नहीं प्राप्त करता है, ऐसा भृगु जी का वचन है, इसमें सन्देह नहीं ॥ १२ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावगतचतुर्थेशफलम्।

अथ पंचमेशफलम्

पंचमेशे गते लग्ने शास्त्रवेत्ता सुकर्मणः।
सुबुद्धिः ख्यातिमाँल्लोकशान्तो मधुरवाग्भवेत्॥ १ ॥

जिसके जन्मकाल में पञ्चमेश लग्न में हो वह मनुष्य शास्त्र को जानने वाला, उत्तम कर्म करने वाला, सद्बुद्धिमान्, लोक में विख्यात, शान्त चित्तवाला और मधुर वचन बोलने वाला होता है ॥ १ ॥

धनस्थाने सुतेशस्थे यदि क्रूरग्रहो भवेत् ।
नृत्यगीतरतो नित्यं कष्टेन धनमाप्यते ॥ २ ॥

पञ्चमेश पापग्रह हो और द्वितीय स्थान में हो तो मनुष्य नाच और गानों का प्रिय होता है और कष्ट से धन की प्राप्ति करता है ।

पञ्चमेशे तृतीयस्थे मिष्टभाषी सुपण्डितः ।
पालको बन्धुवर्गाणां बलवीर्यसमन्वितः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकाल में पञ्चमेश तृतीय स्थान में हो वह मनुष्य मधुर वचन बोलने वाला, उत्तम पण्डित, बन्धु-बान्धवों की रक्षा करने वाला और बल तथा उत्साह से युक्त होता है ॥ ३ ॥

सुतेशे तुर्यगे यस्य पितृकर्मानुगः सदा ।
प्रसिद्धो मातृभक्तश्च सदाचारी प्रियंवदः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकाल में पञ्चमेश चतुर्थ स्थान में हो वह मनुष्य अपने पिता के धर्मकर्मानुसार चलनेवाला, लोक में प्रसिद्ध, मातृ-भक्त, सदाचारी और मधुर वचन बोलने वाला होता है ॥ ४ ॥

पंचमे पंचमेशस्थे बुद्धिमान् सत्यवाग्भवेत् ।
कुशलः सर्वकार्येषु पुत्राणां मानवर्द्धनः ॥ ५ ॥

पञ्चमेश पंचम स्थान में हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, सत्यवक्ता, सभी कार्यों में निपुण और सन्तानों का मान बढ़ानेवाला होता है ।

सुतेशे रिपुभावस्थे नित्यं कलहकृद्भवेत् ।
पीडितो गुह्यरोगेण भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकाल में पञ्चमेश षष्ठ स्थान में हो वह मनुष्य नित्य कलह करनेवाला और गुह्यरोग (गुप्तरोग) से पीड़ित रहने वाला होता

है। ऐसा भृगुजी का वचन है। इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये॥६॥

गिरां नाथगते द्यूने तस्य भार्या प्रियंवदा।
सुशीला सुभगा चैव पतिभक्तिपरायणा॥ ७॥

पञ्चमेश सप्तम स्थान में हो तो मनुष्य की स्त्री प्रिय वचन बोलने वाली, सुशीला, सुभगा और स्वामिभक्तिपरायणा होती है।

सुतेशे निधने यस्य गृहिणी कर्कशा भवेत्।
न दक्षा गृहकार्येषु भृगुवाक्यं न संशयः॥ ८॥

जिसके जन्मकाल में पञ्चमेश अष्टम स्थान में हो तो उस की स्त्री कर्कशा (कलह करनेवाली) होती है और गृह के कार्यों में भी चतुरा नहीं होती ऐसा भृगुजी का वचन है, इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये॥ ८॥

सुतेशे नवमे यस्य तस्य पुत्रो नृपोपमः।
किंवा ग्रन्थप्रणेता स्याद् विश्रुतो वंशदीपकः॥ ९॥

जिसके पंचमेश नवम स्थान में हो उसका लड़का राजा के समान अथवा ग्रन्थ रचने वाला तथा विख्यात कुल-दीपक होता है॥ ९॥

कर्मगेहे गिरां नाथे राजद्वारा धनागमः।
राजमन्त्री प्रसिद्धश्च जनन्याः सुखसंयुतः॥ १०॥

जिसके जन्मकाल में पंचमेश दशम स्थान में हो वह मनुष्य राज दरबार से धन की प्राप्ति करता है। राजा का मन्त्री होता है, विख्यात (प्रसिद्ध) होता है और माता के सुख से युक्त होता है॥ १०॥

सुतेशे लाभगेहस्थे नृत्यगीतकलान्वितः।
संगीतं कुरुते नित्यं नृपवद्राजते भुवि॥ ११॥

जिसके जन्मकाल में पंचमेश एकादश स्थान में हो वह नर नृत्य (नाच)—गीत (गाना) की कला को जानने वाला, संगीत करने वाला होता है, और राजा की तरह संसार में शोभायमान होता है॥ ११॥

पंचमेशे व्ययस्थाने क्रूरे सुखविवर्जितः ।
सौम्ये सुखमवाप्नोति विदेशे गमनं भवेत् ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकाल में पंचमेश पापग्रह होकर द्वादश स्थान में हो वह मनुष्य सुख से विहीन होता है। यदि पंचमेश शुभ ग्रह हो तो मनुष्य सुखी होता है और परदेशी होता है ॥ १२ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावगतपंचमेशफलम् ॥५॥

अथ षष्ठेशफलम्

षष्ठेशो लग्नगो यस्य स नरो दुःखभाग्भवेत् ।
धनहानिकरः पापे स्वजनो रिपुतां व्रजेत् ॥ १ ॥

जिसके जन्मकाल में षष्ठेश लग्न में हो वह मनुष्य दुःख भोगने वाला होता है, यदि षष्ठेश पाप ग्रह हो तो धन का नाश करने वाला और अपने बन्धुवर्गों से शत्रुता करने वाला होता है ॥ १ ॥

षष्ठेशे तु धनस्थाने कुटुम्बे रोगदो भवेत् ।
शत्रवो वृद्धितां यान्ति चिकित्सायां धनक्षयः ॥ २ ॥

जिसके जन्मकाल में षष्ठेश द्वितीय स्थान में हो वह मनुष्य कुटुम्ब परिवारों को रोग देने वाला होता है और शत्रुओं की वृद्धि होती है तथा चिकित्सा में धन का नाश होता है ॥ २ ॥

षष्ठेशे तृतीयस्थे बान्धवानां प्रपीडकः ।
विदेशे मरणं तस्य विपाके कलिकृद्भवेत् ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकाल में षष्ठेश तृतीय स्थान में हो वह मनुष्य अपने बन्धु-बान्धवों को पीड़ा देने वाला होता है तथा विदेश में उसकी मृत्यु होती है, और वृद्धावस्था में कलह करने वाला होता है ॥३॥

षष्ठेशे तुर्यगे यस्य तातपुत्रोऽरितां व्रजेत् ।
पितुर्धनमवाप्नोति अनायासे कदाचन ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकाल में षष्ठेश चतुर्थ स्थान में हो उस मनुष्य

का पुत्र और पिता भी शत्रु की तरह व्यवहार करता है और किसी समय विना परिश्रम से ही पिता से धन की प्राप्ति होती है ॥ ४ ॥

पष्ठेशे पञ्चमस्थाने क्रूरे तातसुतो रिपुः ।
सौम्ये सुखमवाप्नोति भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकाल में षष्ठेश पञ्चम स्थान में हो और यदि षष्ठेश पाप ग्रह हो तो उस मनुष्य का पिता और पुत्र भी शत्रु के समान व्यवहार करता है। यदि षष्ठेश शुभ ग्रह हो तो वह मनुष्य सुखी होता है, ऐसा भृगुजी का वचन है इसमें सन्देह नहीं ॥ ५ ॥

रिपुनाथे रिपुस्थाने शत्रुणा परिपीडितः ।
न किञ्चित्सुखमाप्नोति दुःखभागी न संशयः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकाल में षष्ठेश षष्ठ स्थान में हो वह मनुष्य सदैव शत्रु से पीड़ित होता है। और कुछ भी सुख नहीं प्राप्त करता प्रत्युत सर्वदा दुःख भोगने वाला होता है ॥ ६ ॥

रिपुनाथगते द्यूने क्रूरे भार्या विरोधिनी ।
दुर्भगा कर्कशा चैव सौम्ये वन्ध्या प्रजायते ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में षष्ठेश सप्तम स्थान में हो उस मनुष्य की स्त्री स्वामी से विरोध करने वाली दुर्भगा और कर्कशा होती है। यदि षष्ठेश शुभ ग्रह हो तो स्त्री बन्ध्या (पुत्रहीन) होती है ॥७॥

रिपुनाथे गते रन्ध्रे शत्रुभिर्मृत्युमाप्नुयात् ।
विषादी स्नेहहीनश्च भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ८ ॥

जिसके जन्माल में षष्ठेश अष्टम स्थान में हो वह मनुष्य शत्रुओं के द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है। और बिषाद करने वाला तथा स्नेह से रहित होता है ऐसा भृगुजी ने कहा है ॥ ८ ॥

षष्ठेशे धर्म्मगे यस्य क्रूरे बन्धुविरोधिता ।
नास्तिको निन्दकश्चैव वेदशास्त्रावमानिता ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकाल में षष्ठेश यदि पाप ग्रह होकर नवम स्थान

में हो तो मनुष्य बान्धवों से विरोध करने वाला नास्तिक (पाखण्डी), निन्दक और वेद तथा शास्त्रों का अपमान करने वाला होता है॥९॥

रिपुनाथे गते कर्म्मे भ्रातृदोषी भवेन्नरः।
निर्बुद्धिः विग्रही चैव दुष्टकर्मरतः सदा ॥ १० ॥

जिसके जन्मकाल में षष्ठेश दशम स्थान में हो वह मनुष्य भाई के दुःख से युक्त, बुद्धिहीन, लड़ाई करनेवाला और सर्वदा दुष्ट (नीच) कर्मों में रत रहने वाला होता है ॥ १० ॥

रिपुनाथे गते लाभे क्रूरे मृत्युभयं भवेत्।
तस्कराद्धनहानिः स्याच्चतुष्पादाप्तिहेतवे ॥ ११ ॥

जिसके जन्मकाल में षष्ठेश यदि पापग्रह होकर एकादश स्थान में हो तो उस मनुष्य को सदैव मृत्यु की शङ्का होती रहती है, और पशुओं के लाभार्थ चौर से धन की हानि होती है ॥११॥

षष्ठेशो द्वादशस्थाने चतुष्पादाद्धनक्षयः।
गमनागमने चैव नरो मृत्युमवाप्नुयात् ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकाल में षष्ठेश द्वादश स्थान में हो उस मनुष्य को पशुओं से धन का नाश होता है और गमनागमन (विदेश जाने आने से) से मृत्यु को प्राप्त करता है ॥ १२ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावगतषष्ठेशफलम् ॥

अथ सप्तमेशफलम्

सप्तमेशगते लग्ने तस्य भार्या प्रियंवदा।
रूपयौवनसम्पन्ना पतिचित्तानुसारिणी ॥ १ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तमेश लग्न में हो उस मनुष्य की स्त्री प्रिय वचन बोलने वाली, रूप यौवन से सम्पन्न और स्वामी के मनोनुकूल चलनेवाली होती है ॥ १ ॥

जायापतौ धनस्थाने कलत्रं धनसंयुता ।
मोदते स्वामिना सार्द्धं भृगुवाक्यं न संशयः ॥ २ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तमेश द्वितीय स्थान में हो उस मनुष्य की स्त्री धन से युक्त होती है और सदैव स्वामी के साथ हर्ष पूर्वक निवास करती है, ऐसा भृगुजी का वचन है, इसमें सन्देह नहीं ॥ २ ॥

सप्तमेशे तृतीयस्थे बान्धवाः प्रियकारिणः ।
भार्या रूपवती सौम्ये क्रूरे कलहकारिणी ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तमेश तृतीय स्थान में हो उस मनुष्य के बन्धु-बान्धव प्रिय करने वाले होते हैं, यदि सप्तमेश शुभ ग्रह हो तो स्त्री सुन्दरी होती है और पापग्रह हो तो कलहकारिणी होती है॥३॥

जायानाथे गते तुर्ये पितृवैरकरः सदा ।
पितुर्धनमवाप्नोति भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तमेश चतुर्थ स्थान में हो वह मनुष्य पिता से विरोध करने वाला होता है और पिता से धन की प्राप्ति करने वाला होता है, ऐसा भृगुजी का वचन है ॥ ४ ॥

सप्तमेशे सुतस्थाने भार्या च सुभगा भवेत् ।
सुशीला गुणसम्पन्ना पत्युराज्ञापरायणा ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तमेश पञ्चम स्थान में हो उस मनुष्य की स्त्री सौभाग्यवती, सुशीला, गुण-सम्पन्ना और स्वामी की आज्ञानुसार चलनेवाली होती है ॥ ५ ॥

कान्तानाथे रिपोर्गेहे नारी रोगसमन्विता ।
प्रीतिर्न जायते किञ्चित् क्रूरे मृत्युर्न संशयः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तमेश षष्ठ स्थान में हो उस मनुष्य की स्त्री सदैव रोगिणी रहती है, स्वामी के प्रेम से उदासीन होती है, यदि सप्तमेश पाप ग्रह हो तो उस मनुष्य की स्त्री की मृत्यु होती है६

सप्तमेशे गते द्यूने पूर्णसौख्यं कलत्रजम् ।
गुणवत्पुत्रमाप्नोति भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तमेश सप्तम स्थान में हो उस मनुष्य को स्त्रीसम्बन्धी पूर्ण सौख्य होता है और गुणवान् पुत्र का लाभ होता है ऐसा भृगुजी की वचन है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ७ ॥

कान्तानाथे गते रन्ध्रे गणिकायां रतः पुमान् ।
क्रूरे हीनकलत्रश्च सौम्ये सौख्यसमन्वितः ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तमेश अष्टम स्थान में हो वह मनुष्य सदैव वेश्या में रत रहता है, यदि सप्तमेश पाप ग्रह हो तो स्त्रीसुख से हीन और शुभग्रह हो तो स्त्रीसुख से सम्पन्न होता है ॥ ८ ॥

कान्तानाथे गते धर्म्मे सुशीला सुन्दरी प्रिया ।
पापखेटे कुरूपा च नित्यं कलहकारिणी ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तमेश नवम स्थान में हो उस मनुष्य की स्त्री सुशीला, सुन्दरी और प्रेम करने वाली होती है, यदि सप्तमेश पाप ग्रह हो तो स्त्री कुरूपा और कलहकारिणी होती है ॥ ९ ॥

कान्तानाथे गते कर्म्मे नृपसेवी भवेन्नरः ।
पापग्रहे कुलद्वेषी भृगुवाक्यं न संशयः ॥ १० ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तमेश दशम स्थान में हो वह मनुष्य राज-सेवी होता है, यदि सप्तमेश पाप ग्रह हो तो अपने कुलजनों से द्वेष करने वाला होता है, ऐसा भृगुजी का वचन है ॥ १० ॥

जायेशे लाभगेहस्थे नारी भक्तिगुणान्विता ।
सुशीला सुस्मिता चैव पतिप्रेमपरायणा ॥ ११ ॥

जिसके जमन्काल में सप्तमेश एकादश स्थान में हो उस मनुष्य की स्त्री भक्ति करने वाली, गुणयुक्ता, सुशीला, हास्ययुक्ता और स्वामी की प्रेमपरायणा होती है ॥ ११ ॥

सप्तमेशे व्ययस्थाने भार्या कलहकारिणी।
दुःशीला लोलुपा दुष्टा भृगुवाक्यं न संशयः ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकाल में सप्तमेश द्वादश स्थान में हो उस मनुष्य की स्त्री कलह-कारिणी, दुःशीला, लोभी, दुष्टा और नीच कर्म करनेवाली होती है। ऐसा भृगुजी का वचन है ॥ १२ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावगतसप्तमेशफलम्।

अथाष्टमेशफलम्

अष्टमेशे गते लग्ने नानारोगसमन्वितः।
वादोपवादनिरतः राजद्वाराद्धनागमः ॥ १ ॥

जिसके जन्मकाल में अष्टमेश लग्न में हो वह मनुष्य अनेक प्रकार के रोग से युत होकर वादविवाद में निरत और राजद्वारा धन की प्राप्ति करता है ॥ १ ॥

अष्टमेशे धनस्थाने अल्पजीवी भवेन्नरः।
क्रूरे क्रूरक्रियायुक्तो सौम्येऽतिसुभगो भवेत् ॥ २ ॥

जिसके जन्मकाल में अष्टमेश द्वितीय स्थान में हो वह मनुष्य अल्पायु होता है, यदि अष्टमेश पाप ग्रह हो तो नीच कर्म में युक्त रहता है और शुभ ग्रह हो तो अत्यन्त सौभाग्यशाली होता है ॥२॥

अष्टमेशे तृतीयस्थे मित्रबन्धुविरोधवान्।
अथवा बन्धुहीनश्च नरो निष्ठुरवाग्भवेत् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्य के जन्मकाल में अष्टमेश तृतीय स्थान में हो वह अपने बन्धुवर्गों से विरोध करने वाला अथवा बन्धु-हीन होता है और निष्ठुर वचन बोलने वाला होता है ॥ ३ ॥

अष्टमेशे चतुर्थस्थे मातापित्रोश्च पीडकः।
पितुर्धनमवाप्नोति भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश चतुर्थ स्थान में हो वह मनुष्य

माता-पिता को कष्ट देने वाला होता है, किन्तु पिता से धन-प्राप्ति करता है, ऐसा भृगुजी का वचन है ॥ ४ ॥

रन्ध्रेशे जायते पुत्रे क्रूरे पुत्रविवर्जितः।
कदापि जायते पुत्रः सदा रोगेण पीडितः ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकाल में अष्टमेश पाप ग्रह होकर पंचम स्थान में हो वह मनुष्य पुत्र से रहित होता है, यदि पुत्र हो भी तो सदैव रोग से पीड़ित होता है ॥ ५ ॥

अष्टमेशे रिपुस्थाने सूर्ये भूभृद्विरोधवान्।
गुरुस्तुङ्गे सुदृष्टिश्चेद्दीर्घायुष्मान्नरो भवेत् ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश सूर्य षष्ठ स्थान में हो वह मनुष्य राजा से विरोध करने वाला होता है। यदि बृहस्पति उच्च में हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य दीर्घायु होता है ॥ ६ ॥

अष्टमेशे गते द्यूने नरो भीतिसमन्वितः।
अग्निवातभयं विन्द्याद् भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकाल में अष्टमेश सप्तम स्थान में हो वह मनुष्य सदैव भयभीत रहता है, और उसको अग्नि तथा वायु के विकार से भय होता है, ऐसा भृगुजी का वचन है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ७ ॥

अष्टमेशे गते छिद्रे नरो हृष्टशरीरवान्।
दीर्घायुर्बलवांश्चैव विदेशे धनमाप्नुयात् ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकाल में अष्टमेश नवम स्थान में हो वह मनुष्य हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, दीर्घायु, बलवान् और विदेश में धन लाभ करने वाला होता है ॥ ८ ॥

अष्टमेशे गते धर्मे कुसंगी जीवघातकः।
बन्धुवर्गविरोधी च सत्संगविमुखो नरः ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकाल में अष्टमेश नवम स्थान में हो वह मनुष्य कुमार्गगामी, जीवघात करने वाला, बन्धुओं से विरोध करने वाला

और सत्सङ्ग से विमुख (वर्जित) होता है ॥ ९ ॥

अष्टमेशे गते कर्मे नीचकर्मरतः सदा ।
क्रूरखेटे नीचवृत्तिर्मातृसौख्यविवर्जितः ॥ १० ॥

जिसके जन्मकाल में अष्टमेश दशम स्थान में हो वह मनुष्य सदैव नीचकर्म में रत रहता है, यदि अष्टमेश पापग्रह हो तो नीच कर्मों से जीविका करने वाला और मातृ-सुख से विहीन होता है ॥१०॥

अष्टमेशे गते लाभे बाल्याद् दुःखसमन्वितः ।
वार्द्धक्ये सुखमाप्नोति भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ११ ॥

जिसके जन्मकाल में अष्टमेश एकादश स्थान में हो वह मनुष्य बाल्यावस्था में दुःखयुक्त होता है और वृद्धावस्था में सुखी होता है। ऐसा भृगुजी का वचन है इसमें सन्देह नहीं ॥ ११ ॥

अष्टमेशे व्ययस्थाने क्रूरे निर्घृणमानवः ।
व्यंगदेही प्रियाहीनः स्वल्पायुष्मान्नरो भवेत् ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकाल में अष्टश पापग्रह होकर द्वादश स्थान में हो वह मनुष्य दया से रहित, व्यङ्ग (न्यूनाधिकाङ्ग) वाला, स्त्री से विहीन और अल्पायु होता है ॥ १२ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावगताष्टमेशफलम् ।

अथ नवमेशफलम्

भाग्यनाथे विलग्नस्थे गुरुदेवार्च्चने रतः ।
कृपणो धनवांश्चैव राज्यकर्मरतः सदा ॥ १ ॥

जिसके जन्मकाल में नवमेश लग्न में हो वह मनुष्य गुरु तथा देवता के पूजन में परायण, कृपण, धनवान् और सदैव राजा के कार्यों में रत रहता है ॥ १ ।

नवमेशे धनस्थाने शीलवान् सत्यभाषणः ।
सत्कृतिः सुखभोगी च चतुष्पादेन पीडितः ॥ २ ॥

जिसके जन्मकाल में नवमेश द्वितीय स्थान में हो वह मनुष्य शीलवान् , सत्य बोलने वाला, उत्तम कार्य करने वाला, सुखी,

भोगी और चतुष्पाद (पशुओं) से पीड़ित होता है ॥ २ ॥

भाग्येशे सहजस्थाने तेजस्वी बन्धुवत्सलः ।
लोके सुकृतिविख्यातः पितृकार्यरतः सदा ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकाल में नवमेश तृतीय स्थान में हो वह मनुष्य पराक्रमी, बन्धुप्रेमी, संसार में सुकृति से विख्यात और पिता के कार्य में परायण होता है ॥ ३ ॥

भाग्यनाथे सुखे संस्थे पितृसेवी भवेन्नरः ।
बन्धुवर्गरतो नित्यं नारीणां प्रियकृद्भवेत् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मकाल में नवमेश चतुर्थ स्थान में हो वह मनुष्य पिता की सेवा करने वाला, बन्धुवर्गों में सदैव रत और स्त्रियों का प्रिय करने वाला होता है ॥ ४ ॥

धर्मनाथे गते पुत्रे गुरुभक्तिरतः सदा ।
वपुषा सुन्दरो दिव्यो रत्नभूपासमन्वितः ॥ ५ ॥

जिसके जन्मकाल में नवमेश पंचम स्थान में हो वह मनुष्य सदैव गुरु की भक्ति में परायण, शरीर से अत्यन्त दिव्य सुन्दर और रत्नों के भूषण (जेवर) से समन्वित होता है ॥ ५ ॥

भाग्येशे षष्ठगे यस्य शत्रवो लाभकारिणः ।
शत्रोर्भयं भवेत्तस्य भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकाल में नवमेश षष्ठ स्थान में हो वह मनुष्य शत्रुओं से लाभ करने वाला होता है किन्तु शत्रुओं के भय से युक्त रहता है, ऐसा भृगु जी का वचन है इसमें सन्देह नहीं ॥ ६ ॥

भाग्येशे द्यूनगे यस्य भार्या सत्यवती प्रिया ।
धनयुक्ता सुरूपा च पतिसेवनतत्परा ॥ ७ ॥

जिसके जन्मकाल में नवमेश सप्तम स्थान में हो उस मनुष्य की स्त्री सत्य बोलने वाली, मनोनुकूल प्रिय करने वाली, धन से युक्ता, सुन्दरी और पति सेवा में तत्पर रहती है ॥ ७ ॥

नवमेशे गते रन्ध्रे बन्धुविद्याविवर्जितः ।
सत्क्रियाविमुखो लोके नीचकर्मरतः सदा ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में नवमेश अष्टम स्थान में हो वह मनुष्य विद्या और बन्धुओं से रहित, उत्तम कार्य से विमुख और सदैव नीच कार्य में रत रहता है ॥ ८ ॥

धर्मनाथगते धर्मे धर्ममूर्तिर्विशालदृग् ।
बन्धुप्रियकरो नित्यं दातारो देवपूजकः ॥ ९ ॥

जिसके जन्म काल में नवमेश नवम स्थान में हो वह मनुष्य धर्म की मूर्ति, विशाल नेत्र वाला, बन्धुप्रियकारी, दानी और देवता में श्रद्धा रखने वाला होता है ॥ ९ ॥

धर्मनाथे गते कर्मे मातापित्रोश्च पूजकः ।
राजमानी प्रियायुक्तः राजद्वारा धनागमः ॥ १० ॥

जिसके जन्म काल में नवमेश दशम स्थान में हो वह मनुष्य माता और पिता की सेवा करने वाला, राजमानी, प्रिया से युक्त और राजद्वार से धन की प्राप्ति करने वाला होता है ॥ १० ॥

धर्मनाथे यदा लाभे हस्त्यश्वादिसमन्वितः ।
नृपतुल्यः स विज्ञेयो ह्यथवा राजमन्त्रिणः ॥ ११ ॥

जिसके जन्म काल में नवमेश एकादश स्थान में हो वह मनुष्य हाथी, घोड़े आदि से युक्त और राजा के समान धनी होता है, अथवा राजमन्त्री होता है ॥ ११ ॥

धर्मेशे द्वादशस्थाने सौम्ये विद्यासमन्वितः ।
क्रूरे धूर्त्तोऽतिमूर्खश्च भृगुणा परिभाषितम् ॥ १२ ॥

जिसके जन्म काल में नवमेश शुभग्रह हो और द्वादश स्थान में हो तो वह मनुष्य विद्वान् होता है, यदि नवमेश पापग्रह हो तो मनुष्य लम्पट, मूर्ख और चंचल होता है, ऐसा भृगुजी ने कहा है ॥ १२ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावस्थितनवमेशफलम् ।

अथ दशमेशफलम्

व्योमेशे लग्नगे यस्य मातापित्रोश्च सेवकः ।

क्रूरे बुद्धिविहीनश्च भृगुवाक्यं न संशयः ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश लग्न में हो वह मनुष्य अपने माता-पिता की सेवा करने वाला होता है। यदि दशमेश पाप ग्रह हो तो मनुष्य बुद्धिहीन होता है, ऐसा भृगुजी का वचन है ॥ १ ॥

व्योमेशे धनगे यस्य राजद्वाराद्धनागमः।
कफात्मकः सुखी सौम्यः चलचित्तः प्रतापवान् ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश द्वितीय स्थान में हो वह मनुष्य राज-द्वार से धन की प्राप्ति करता है और कफात्मक, सुखी, सौम्य (आनन्द से युक्त), चंचल प्रकृति वाला और प्रतापी होता है ॥३॥

विक्रमे व्योमनाथस्थे विक्रमी मनुजो भवेत्।
नृपसेवानुरक्तश्च सौम्ये वन्धुसमन्वितः ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश तृतीय स्थान में हो वह मनुष्य साहसी तथा राजसेवी होता है। यदि दशमेश शुभ ग्रह हो तो वह मनुष्य वन्धु-बान्धवों से युक्त होता है ॥ ३ ॥

कर्मनाथे गते तुर्ये मातापित्रोश्च सेवकः।
कीर्त्तिमान् धनवांश्चैव नृपाल्लाभो न संशयः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश चतुर्थ स्थान में हो वह मनुष्य माता और पिता की सेवा करनेवाला, कीर्तिमान्, धनवान् और राजा से धन लाभ करने वाला होता है ॥ ४ ॥

व्योमनाथे गते पुत्रे सौम्यवाक्यरतः सदा।
गीतनृत्यप्रियश्चैव राजद्वाराद्धनागमः ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश पञ्चम स्थान में हो वह मनुष्य मीठे वचन बोलने वाला, गीत तथा नृत्य प्रिय और राजद्वार से धन की प्राप्ति करने वाला होता है ॥ ५ ॥

व्योमेशे रिपुगेहस्थे सदा शत्रुभयान्वितः।
कृपणो क्लेशभागी च नीचवृत्तिरतः सदा ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश षष्ठ स्थान में हो वह मनुष्य सदैव शत्रुओं से भयभीत रहता है, कृपण, क्लेश भोगने वाला और सदैव नीच कर्मों से जीविका करने वाला होता है ॥ ६ ॥

व्योमेशो जायते द्यूने भार्या तस्य पतिव्रता।
सुभगा सौख्यसंयुक्ता रूपौदार्यगुणान्विता ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश सप्तम स्थान में हो तो उस मनुष्य की स्त्री पतिव्रता, सुभगा, सौख्ययुक्ता, सुन्दरी, उदार भाव से युक्ता और भी अनेक गुणों से युक्ता होती है ॥ ७ ॥

व्योमेशे छिद्रगे यस्य सदा रोगेण पीडितः।
आधिव्याधिसमायुक्तः गुप्तरोगेण पीडितः ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश अष्टम स्थान में हो वह मनुष्य सदैव रोग से पीड़ित रहता है, आधि-व्याधि से युक्त और गुप्त रोग से पीड़ित रहता है ॥ ८ ॥

व्योमेशे धर्मगेहस्थे सत्यवादी भवेन्नरः।
मातापित्रोश्च भक्तश्च धनधान्यसमन्वितः ॥ ९ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश नवम स्थान में हो वह मनुष्य सत्यवादी, माता और पिता का भक्त तथा धन-धान्य से युक्त होता है ॥९॥

व्योमेशो व्योमगेहस्थे विख्यातो विजयी भवेत्।
मनस्वी गुणवांश्चैव राजद्वाराद्धनागमः ॥ १० ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश दशम स्थान में हो वह मनुष्य लोक में प्रसिद्ध विजयी, मनस्वी, गुणवान् और राजा के यहां से धन-प्राप्ति करने वाला होता है ॥ १० ॥

व्योमेशे लाभगे यस्य धनधान्यसमन्वितः।
राजमान्यः सुविख्यातो भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ११ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश एकादश स्थान में हो वह मनुष्य धन-धान्य से युक्त, राजमान्य और लोक में प्रसिद्ध होता है। ऐसा भृगुजी ने कहा है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ११ ॥

व्योमेशे द्वादशस्थाने पितृकार्ये धनव्ययः ।
कदाचिद्दैवयोगेन परजायासु लम्पटः ॥ १२ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश द्वादश स्थान में हो वह मनुष्य पिता के कार्य में धन का व्यय करता है और कदाचित् दैव योग से पराई स्त्री से प्रेम करने वाला होता है ॥ १२ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावस्थितदशमेशफलम् ।

अथ एकादशेशफलम्

लाभेशे लग्नगे यस्य धनधान्यसमन्वितः ।
वाहनादिसुखं तस्य शुभखेटाच्छुभं वदेत् ॥ १ ॥

जिसके जन्म-काल में एकादेश लग्न में हो वह मनुष्य धन धान्य से युक्त और वाहनादि सुखों से भी सुखी होता है, यदि एकादशेश शुभ ग्रह हो तो अत्यन्त शुभ फल होता है ॥ १ ॥

लाभेशे धनराशिस्थे कृपणो धनसंचकः ।
कुटुम्बे प्रीतिकारी च वाहनादिसुखस्तथा ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश द्वितीय स्थान में हो वह मनुष्य कृपण (कंजूस), धन सञ्चय करने वाला, अपने परिवारों से प्रीति करने वाला और वाहनों के सुख से युक्त होता है ॥ २ ॥

लाभेशे सहजस्थाने बन्धुपूज्यो नरो भवेत् ।
बलवीर्यसमायुक्तः दासीदासादिसंयुतः ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश तृतीय स्थान में हो वह मनुष्य बन्धुओं से पूजित, बल-साहस से युक्त और दास-दासी से युक्त होता है ॥ ३ ॥

लाभेशे यस्य तुर्यस्थे मातापित्रोश्च सेवकः ।
पित्रा धनमवाप्नोति मुनिना परिभाषितम् ॥ ४ ॥

जिसके जन्म समय में एकादशेश चतुर्थ स्थान में हो वह मनुष्य माता-पिता की सेवा करने वाला और पिता से धन की प्राप्ति करने

वाला होता है, ऐसा भृगुजी ने कहा है ॥ ४ ॥

लाभेशे पञ्चमे याते पुत्रलाभो न संशयः ।
कृतज्ञो बहुलाभश्च मन्त्रयन्त्रविशारदः ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश पञ्चम भाव में हो वह मनुष्य निःसन्देह पुत्र लाभ करता है और स्वयं कृतज्ञ, बहुत लाभ करने वाला तथा मन्त्र-यन्त्र जानने वाला होता है ॥ ५ ॥

लाभेशे रिपुभावस्थे नृपचौरभयं वदेत् ।
मातुलं सुखदायी च महिषीधनसंयुतः ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश षष्ठ भाव में हो वह मनुष्य राजा और चौर से भय को प्राप्त करता है, मातुल (मामा) को सुख देने वाला होता है और महिषी (भैंस) के धन से युक्त होता है ॥६॥

लाभेशे सप्तमे यस्य स्त्रीधनेन समन्वितः ।
सुशीला सुन्दरी भार्या पत्युः प्रीतिकरी सदा ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश सप्तम स्थान में हो वह मनुष्य स्त्री के धन से सुखी होता है तथा उसकी स्त्री सुशीला सुन्दरी (रूपवती) और सदैव स्वामी से प्रेम करने वाली होती है ॥ ७ ॥

लाभेशो ह्यष्टमस्थाने नृपाल्लाभो न संशयः ।
व्यापारे धनप्राप्तिश्च विपाके रुक् प्रजायते ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टम स्थान में एकादशेश हो वह मनुष्य निःसन्देह राजा से धन का लाभ करता है और व्यापार से भी धन लाभ करता है तथा वृद्धावस्था में रोग को प्राप्त करता है ॥ ८ ॥

लाभेशो धर्मगो यस्य नाना लाभसमन्वितः ।
धर्मशीलः प्रतापी च बन्धुकार्यरतः सदा ॥ ९ ॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश नवम भाव में हो वह मनुष्य अनेक प्रकार से धन का लाभ करता है तथा धर्मशील, प्रतापशाली और बन्धुओं के कार्य में सदैव निरत रहता है ॥ ९ ॥

लाभेशे कर्मगे यस्य मातापित्रोश्च सेवकः।
नाना द्रव्यसमायुक्तः भृगुवाक्यं न संशयः॥ १०॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश दशम स्थान में हो वह मनुष्य माता और पिता की सेवा करनेवाला और अनेक द्रव्यों से युक्त होता है॥ १०॥

लाभेशे लाभगे यस्य वहुद्रव्यसमन्वितः।
नाना वाहनसंयुक्तः राजपूज्यो न संशयः॥ ११॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश एकादश स्थान में हो वह मनुष्य वहुत द्रव्य से और अनेक वाहनों से युक्त होता है तथा राजाओं से पूजित होता है॥ ११॥

लाभेशे व्ययगे यस्य मन्दलाभः प्रजायते।
कष्टेन धनप्राप्तिश्च विदेशे मरणं ध्रुवम्॥ १२॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश द्वादश स्थान में हो वह मनुष्य वहुत कष्ट से थोड़ा धन प्राप्त करता है और विदेश में उसकी मृत्यु होती है॥ १२॥

इति तन्वादिद्वादशभावस्थितैकादशेशफलम्।

अथ व्ययेशफलम्

द्वादशेशे गते लग्ने चित्तोदारो न संशयः।
महर्घवस्त्रधारी च सुमूर्त्तिश्च सुवेशवान्॥ १॥

जिसके जन्म काल में द्वादशेश लग्न में हो उस मनुष्य का चित्त निःसन्देह उदार, वहुमूल्य वस्त्र धारण करने वाला, सुन्दर स्वरूप वाला और सौभाग्यशाली होता है॥ १॥

रिःफेशे कोशगे यस्य पुरुषार्थे धनं व्ययेत्।
किञ्चित्काले वसेद् गेहे विदेशे गमनं भवेत्॥ २॥

जिसके जन्मकाल में द्वादशेश द्वितीय स्थान में हो वह मनुष्य पुरुषार्थ (प्रसिद्धि वा यश) के लिए धन को खर्च करता है तथा थोड़े काल के लिए गृह में निवास कर सदैव विदेश में रहता है॥२॥

द्वादशेशे तृतीयस्थे भ्रातुः सुखविनाशकः ।
विपाके देहनैर्बल्यं जायते नात्र संशयः ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादशेश तृतीय स्थान में हो उस मनुष्य को भाई का सुख नहीं होता है और विपाक (वृद्धावस्था) में शरीर की दुर्बलता होती है, इसमें संशय नहीं ॥ ३ ॥

रिःफेशः सुखसंस्थश्चेत् कष्टेन सुखमाप्यते ।
मातृकष्टं न सन्देहो विपाके मुनिरब्रवीत् ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादशेश चतुर्थ स्थान में हो वह मनुष्य वहुत कष्ट से अल्प सुख प्राप्त करता है तथा वृद्धावस्था में माता को कष्ट देनेवाला होता है, ऐसा भृगुजी ने कहा है ॥ ४ ॥

द्वादशेशः सुतस्थाने सन्ततेः कष्टदायकः ।
यदि कोऽपि शुभः खेटो न पश्यति सुतालयम् ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में किसी भी शुभ ग्रह से नहीं दृष्ट होकर द्वादशेश पंचम स्थान में हो तो उस मनुष्य की सन्तानों को द्वादशेश कष्ट देने वाला होता है ॥ ५ ॥

द्वादशेशो यदा षष्ठे शत्रुवर्गविनाशकः ।
राजद्वारेऽतिमानी स्याद्धनवान् सुविचक्षणः ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादशेश षष्ठस्थान में हो वह मनुष्य शत्रुवर्गों को नाश करनेवाला, राजद्वार में विशेष मानी, धनवान् और उत्तम पण्डित होता है ॥ ६ ॥

रिःफेशे यस्य द्यूनस्थे पत्नीकष्टप्रदायकः ।
निर्बलाः शत्रवस्तस्य भृगुवाक्यं न संशयः ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादशेश सप्तम स्थान में हो वह स्त्री को कष्ट देनेवाला होता है और उस मनुष्य का शत्रु स्वयं पराजित रहता है, ऐसा भृगुजी का वचन है ॥ ७ ॥

द्वादशेशो गते रन्ध्रे सुखसौभाग्यदायकः ।
किञ्चित्कष्टं भवेद्देहे ह्यारोग्यं जायते ध्रुवम् ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकाल में द्वादशेश अष्टम स्थान में हो उस को सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती है और शरीर में कुछ कष्ट होता है परन्तु वह कष्ट उसका निश्चय दूर हो जाता है ॥ ८ ॥

रिःफेशो धर्मसंस्थश्चेत्कष्टेन धर्मकार्यकृन् ।
विपाके धनहानिश्च भृगुणा परिभाषितम् ॥ ९ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादशेश नवम स्थान में हो वह मनुष्य बहुत मुश्किल से धर्मकार्य करने वाला होता है और वृद्धावस्था में उसके धन की हानि होती है, ऐसा भृगुजी ने कहा है ॥ ९ ॥

द्वादशेशो यदा कर्मे पितुरर्थविनाशकः ।
राजद्वाराद्धनाप्तिश्च सत्यं सत्यं न संशयः ॥ १० ॥

जिसके जन्म काल में द्वादशेश दशम स्थान में हो तो निःसंदेह वह मनुष्य पिता के धन का विनाश करने वाला होता है और राज-दरबार से धन पैदा करता है यह सत्य है, इसमें सन्देह नहीं ॥१०॥

द्वादशेशो यदा लाभे सन्ततेः कष्टदायकः ।
धनं न तिष्ठते गेहे यथा लाभस्तथा व्ययः ॥ ११ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादशेश एकादश स्थान में हो वह मनुष्य सन्तानों को कष्ट देनेवाला होता है और उसके घर में धन स्थिर नहीं रहता। जैसे लाभ होता है वैसे खर्च भी हो जाता है ॥ ११ ॥

द्वादशेशे व्ययस्थे च शत्रुहा निर्न संशयः ।
राजद्वारा धनं प्राप्य धनधान्यसमन्वितः ॥ १२ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादशेश दशम स्थान में हो उस मनुष्य के शत्रुओं का नाश होता है और राजद्वार से धन की प्राप्ति करके धन-धान्य से समन्वित होता है ॥ १२ ॥

इति ज्यौतिषाचार्य श्रीदीनानाथझाकृत-भाषाटीका समाप्ता ।

समाप्तोऽयं भृगुसंहितोक्तभावफलाध्यायः ।

अथ लोमशसंहितोक्त—

भावफलाध्याय:

अथ लग्नेशफलम्

तत्र लग्नगतलग्नेशफलम्—

यत्पादपङ्कजरजोलवमानयन्तो—
मौलौ सकृत्सुरगणाः क्षपयन्ति दैत्यान् ।
काले कलेर्विजयते भवसिन्धुपारं
भक्तो नरोऽतितरसा मनसा भजे ताम् ।
'जरिसो' ग्रामवासि 'श्रीअच्युतानन्द' संज्ञकः ।
करोमि 'विमला' नाम्नीं हिन्दीटीकां सुशोभनाम् ॥

लग्नेशे लग्नगे जन्तुः सुदेहः स पराक्रमी ।
मनस्वी चातिचाञ्चल्यो द्विभार्यापरिगाग्यसौ ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में लग्नेश लग्न में बैठा हो वह मनुष्य सुन्दर देह वाला, पराक्रमी, मनस्वी, अतिशय चञ्चल और दो स्त्रियों के साथ गमन करने वाला होता है ॥ १ ॥

द्वितीयैकादशगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे च धने लाभे लाभवान् पण्डितो नरः ।
सुशीलो धर्मविन्मानी बहुदारगणैर्युतः ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में द्वितीय या एकादश स्थान में लग्नेश बैठा हो वह मनुष्य आमदनी करने वाला, पण्डित, सुन्दर स्वभाव वाला, धर्म को जानने वाला, मानी और अनेक स्त्रियों से युत होता है ॥२॥

तृतीयषष्ठगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे सहजे षष्ठे सिंहतुल्यपराक्रमी ।
सर्वसम्पद्युतो मानी द्विभार्यो मतिमान् सुखी ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में तृतीय या षष्ठ स्थान लग्नेश स्थित हो वह मनुष्य सिंह के समान पराक्रमी, सब प्रकार के सम्पत्तियों से युत, मानी, दो स्त्रियों से युत, बुद्धिमान् और सुखी होता है ॥३॥

दशमचतुर्थगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे दशमे तुर्ये पितृमातृसुखान्वितः ।
वहुभ्रातृयुतः कामी गुणसौन्दर्यसंयुतः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में दशम या चतुर्थ स्थान में स्थित लग्नेश हो वह मनुष्य माता-पिता के सुख से युत, वहुत भाइयों से युत, कामी और गुण तथा सुन्दर स्वरूप से युक्त होता है ॥ ४ ॥

पञ्चमभावगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे पञ्चमे मानी सुतैः सौख्यं च मध्यमम् ।
प्रथमापत्यनाशः स्यात्क्रोधी राजप्रवेशिकः ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में पञ्चम भाव में लग्नेश स्थित हो वह मनुष्य मानी, लड़के से साधारण सुख पाने वाला, प्रथम सन्तान से रहित, क्रोधी और राजा के दरवार में प्रवेश करने वाला होता है ॥ ५ ॥

सप्तमभावगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे सप्तमे यस्य भार्या तस्य न जीवति ।
विरक्तो वा प्रवासी च दरिद्रो वा नृपोऽपि वा ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तम भाव में लग्नेश स्थित हो उसकी स्त्री नहीं जीती है अर्थात् वहुत जल्दी मरण को प्राप्त करती है ॥६॥ तथा वह मनुष्य विरक्त, परदेश में घूमने वाला, दरिद्र या राजा होता है ॥

अष्टमद्वादशभावगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे व्ययगे चाष्टे शिल्पविद्याविशारदः ।
द्यूती चौरो महाक्रोधी परभार्यातिभोगकृत् ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टम या द्वादश भाव में लग्नेश स्थित हो वह मनुष्य चित्रकारी विद्या में पण्डित, जुआरी, चोर, अतिशय क्रोधी

और दूसरे की स्त्री में अत्यन्त गमन करने वाला होता है ॥ ७ ॥

नवमभावगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे नवमे जन्तुः भाग्यवान् राजवल्लभः ।
विष्णुभक्तो पटुर्वाग्मी पुत्रदारधनैर्युतः ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में नवम भाव में लग्नेश स्थित हो वह मनुष्य भाग्यवान्, राजाओं का प्रिय, विष्णु भगवान् का भक्त, चतुर बोलने वाला और पुत्र, स्त्री, धन इन सबों से युक्त होता है ॥ ८ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावस्थितलग्नेशफलम् ।

अथ धनेशफलम्

तत्रादौ धनभावगतधनेशफलम् -

धनेशे धनगे जन्तुर्धनवान् गर्वसंयुतः ।
भार्याद्वयं त्रयं चापि सुतहीनोऽपि जायते ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में द्वितीय भाव में धनेश स्थित हो वह मनुष्य धनवान्, गौरव से युत और दो या तीन स्त्रियों से युत होकर भी पुत्र-रहित होता है ॥ १ ॥

तृतीयचतुर्थभावगतधनेशफलम्—

धनेशे सहजे तुर्ये विक्रमी मतिमान्गुणी ।
परदाराभिगामी च निश्चलो देवभक्तियुक् ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में तृतीय या चतुर्थ भाव में धनेश बैठा हो वह मनुष्य पराक्रमी, बुद्धिमान्, गुणवान्, पर स्त्री में गमन करने वाला, स्थिर प्रकृति वाला और देवताओं का भक्त होता है ॥ २ ॥

पञ्चमषष्ठभावगतधनेशफलम्—

धनेशे पञ्चमे शत्रौ धनप्राप्तिर्भवेद्ध्रुवम् ।
शत्रुतो वित्तनाशस्तु गुदे चौराद् भवेद्रुजा ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में पञ्चम या षष्ठ भाव में द्वितीयेश स्थित

हो तो उस मनुष्य को निश्चय करके धन की प्राप्ति होती है, किन्तु शत्रु या चोर से उसके धन का नाश होता है और गुदा-मार्ग में रोग होता है ॥ ३ ॥

सप्तमभावगतधनेशफलम्----

धनेशे सप्तमे वैद्यः परजायाभिगाम्यसौ ।
जाया तस्य भवेद्वेश्या मातापि व्यभिचारिणी ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तम भाव में धनेश स्थित हो वह मनुष्य वैद्य तथा पर-स्त्री में गमन करने वाला होता है। उसकी स्त्री वेश्या हो जाती है, और माता भी व्यभिचारिणी होती है ॥ ४ ॥

अष्टमभावगतधनेशफलम्—

धनेशे मृत्युगेहस्थे भूमिं द्रव्यमवाप्नुवात् ।
जायासौख्यं भवेदल्पं ज्येष्ठभ्रातृसुखं न हि ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टम भाव में द्वितीयेश बैठा हो तो वह मनुष्य भूमि तथा द्रव्य का लाभ करने वाला स्त्री से थोड़ा सुख पाने वाला और ज्येष्ठ भाई के सुख से रहित होता है ॥ ५ ॥

नवमैकादशभावगतधनेशफलम्----

धनेशे नवमे लाभे धनवान् धार्मिकः पटुः ।
वाल्ये रोगी सुखी पश्चात् यावदायुः समाप्यते ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में नवम वा एकादश भाव में द्वितीयेश स्थित हो तो वह मनुष्य धनवान्, धार्मिक, पण्डित, वाल्य काल में रोग युत, पीछे मरण-काल तक सुखी रहता है ॥ ६ ॥

दशमभावगतधनेशफलम्----

धनेशो दशमे यस्य कामी चापि स पण्डितः ।
वहुदारधनैर्युक्तो सुतहीनोऽपि जायते ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में दशम भाव में धनेश गत हो तो वह

मनुष्य कामी, पण्डित, बहुत स्त्री और धन से युत होने पर भी पुत्र से रहित होता है ॥ ७ ॥

व्ययभावगतधनेशफलम्----

धनेशे व्ययगे मानी साहसी धनवर्जितः ।
विक्रमी चातिमेधावी ज्येष्ठपुत्रसुखं न हि ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादश भाव में धनेश स्थित हो तो वह मनुष्य मानी, साहसी, धन से रहित, पराक्रमी, अतिशय बुद्धिमान्, और ज्येष्ठ पुत्र के सुख से रहित होता है ॥ ८ ॥

लग्नगतधनेशफलम्----

धनेशे च तनौ पुत्री स्वकुटुम्बस्य पोषकः ।
धनवान् निष्ठुरः कामी परकार्येषु तत्परः ॥ ९ ॥

जिसके जन्म काल में लग्न में धनेश बैठा हो तो वह मनुष्य पुत्र युत, अपने कुटुम्बों का पालन करने वाला, धनवान्, निष्ठुर, कामी और दूसरे के काम करने में संलग्न होता है ॥ ९ ॥

इति तन्वादिद्वादशभावस्थितधनेशफलम् ।

अथ तृतीयेशफलम्

तत्रादौ तृतीयगततृतीयेशफलम्----

तृतीयेशे तृतीयस्थे विक्रमी भृत्यसंयुतः ।
धनयुक्तो महाहृष्टो भुनक्ति सुखमद्भुतम् ॥ १ ॥

जिस जातक के जन्म काल में तृतीय भाव में तृतीयेश स्थित हो तो वह पराक्रमी, भृत्यों से युत, धन से युत, अतिशय हर्षित और सुख भोगने वाला होता है ॥ १ ॥

चतुर्थपञ्चमदशमभावगततृतीयेशफलम्---

तृतीयेशे सुखे खे च पञ्चमे वा सुखं सदा ।

अतिक्रूरा भवेद्भार्या धनाढ्यो मतिमान्महान् ॥ २ ॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थ, पञ्चम या दशम स्थान में तृतीयेश स्थित हो तो वह सदा सुखी, अतिशय दुष्टा स्त्री वाला, धन से युत और अत्यन्त बुद्धिमान् होता है ॥ २ ॥

षष्ठभावगततृतीयेशफलम्----

तृतीयेशे रिपौ यस्य भ्राता शत्रुर्महाधनी ।
मातुलानां सुखं न स्यान्मातुल्यां भोगमिच्छति ॥३॥

जिस जातक के जन्म काल में तृतीयेश षष्ठ भाव में स्थित हो तो उसका भाई शत्रु होता है, तथा वह खुद धनी, मातुल के सुख से रहित और मातुली (मामी) के साथ सम्भोग की इच्छा करने वाला होता है ॥ ३ ॥

द्वादशनवमभावगततृतीयेशफलम्----

तृतीयेशे व्यये भाग्ये स्त्रीभिर्भाग्योदयो भवेत् ।
पिता तस्य महाचौरः सुसेवी दुःखदः सताम् ॥ ४ ॥

जिस जातक के जन्म समय में द्वादश या नवम भाव में तृतीयेश बैठा हो तो उसको स्त्रियों से भाग्योदय होता है तथा उसका पिता अत्यन्त चोर, दास कर्म करने वाला और सज्जनों को दुख देने वाला होता है ॥ ४ ॥

सप्तमाष्टमभावगततृतीयेशफलम्----

तृतीयेशेऽष्टमे द्यूने राजद्वारे मृतिर्भवेत् ।
चौरो वा परगामी वा वाल्ये कष्टं दिने दिने ॥ ५ ॥

जिस जातक के जन्म काल में सप्तम या अष्टम स्थान में तृतीयेश बैठा हो तो वह राज-दरबार में मृत्यु पाने वाला होता है तथा चोर या दूसरे की स्त्री के साथ सम्भोग करने वाला और

बाल्य काल में कष्ट भोगने वाला होता है ॥ ५ ॥

लग्नैकादशभावगततृतीयेशफलम्—

तृतीयेशे तनौ लाभे स्वभुजार्जितवित्तवान् ।
सुखी कृशो महाक्रोधी साहसी जनसेवकः ॥ ६ ॥

जिस जातक के जन्म काल में लग्न या एकादश भाव में तृतीयेश बैठा हो तो वह अपने भुज-बल से धन पैदा करने वाला, सुखी, दुर्बल, अतिशय क्रोधी, साहसी और दूसरे लोगों का सेवक होता है ॥ ६ ॥

धनभावगततृतीयेशफलम् ----

गुदाभञ्जनकः स्थूलो परभार्याधने रुचिः ।
स्वल्पारम्भी सुखी न स्यात् तृतीयेशे धने गते ॥ ७ ॥

जिस जातक के जन्म काल में द्वितीय भाव में तृतीयेश बैठा हो तो वह गुद मार्ग को भजन करने वाला (लोण्डे बाज), मोटे शरीर वाला, पराई स्त्री तथा पराये धन की अभिलाषा करने वाला, थोड़े में काम को प्रारम्भ करने वाला और सुख से रहित होता है ॥७॥

इति तन्वादिद्वादशभावगततृतीयेशफलम् ।

अथ चतुर्थेशफलम्

तत्रादौ चतुर्थभावगतचतुर्थेशफलम्----

तुर्येशे तुर्यगे मन्त्री भवेत्सर्वजनाधिपः ।
चतुरः शीलवान् मानी धनाढ्यः स्त्रीप्रियः सुखी ॥१॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थेश चतुर्थ भाव में बैठा हो वह राजा का मन्त्री, राजा अथवा चतुर, सुन्दर स्वभाव वाला, मानी, धन से युत, स्त्री का प्रिय और सुखी होता है ॥ १ ॥

पञ्चमनवमभावगतचतुर्थेशफलम्----

तुर्येशे पञ्चमे धर्मे सुखी सर्वजनप्रियः ।

विष्णुभक्तिरतो मानी स्वभुजार्तिविनाशकृत् ॥ २ ॥

जिस जातक के जन्म काल में पंचम या नवम भाव में चतुर्थेश बैठा हो वह सुखी, सब जनों का प्रिय, विष्णु की भक्ति में स्नेही, मानी और अपनी भुजाओं के बल से क्लेश हटाने वाला होता है ॥ २ ॥

षष्ठभावगतचतुर्थेशफलम्----

सुखेशे शत्रुगेहस्थे तदाद्व स्याद्बहुमातृकः ।
क्रोधी वैरी व्यभिचारी दुष्टचित्तो मनस्व्यपि ॥ ३ ॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थेश षष्ठ भाव में गत हो तो वह बहुत माताओं से युत, क्रोधी, शत्रुता करने वाला, व्यभिचारी, दुष्ट अन्तःकरण वाला और मनस्वी होता है ॥ ३ ॥

लग्नसप्तमभावद्वयगतचतुर्थेशफलम्----

सुखेशे सप्तमे लग्ने बहुविद्यासमन्वितः ।
पित्रर्जितधनत्यागी सभायां मूकवद्भवेत् ॥ ४ ॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थेश सप्तम या लग्न में बैठा हो तो वह बहुत विद्याओं से युत, गुरु, पिता के अर्जित धन को त्याग करने वाला और सभा में गूँगे के समान होता है ॥ ४ ॥

दशमभावगतचतुर्थेशफलम्- --

सुखेशो दशमे यस्य मातृसौख्येन संयुतः ।
धनधान्यसमायुक्तो धर्मे प्रीतिश्च जायते ॥ ५ ॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थेश दशम भाव में बैठा हो वह माता से युत, धन-धान्य से युत और धर्म में प्रीति करने वाला होता है ॥ ५ ॥

द्वादशाष्टमभावगतचतुर्थेशफलम्----

सुखेशे व्ययरन्ध्रस्थे सुखहीनो भवेन्नरः ।
पितृसौख्यं भवेदल्पं दीर्घायुर्जायते ध्रुवम् ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादश या अष्टम भाव में चतुर्थेश बैठा

हो तो वह मनुष्य सुख से रहित, पिता से थोड़ा सुख पाने वाला और दीर्घायु होता है ॥ ६ ॥

तृतीयैकादशभावगतचतुर्थेशफलम् —

सुखेशे सहजे लाभे नित्यं रोगी धनी भवेत् ।
उदारो गुणवान् दाता स्वभुजार्जितवित्तवान् ॥ ७ ॥

जिसके जन्म समय में चतुर्थेश तृतीय या एकादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य सदा रोग युत, धनी, उदार, गुणवान्, दानी और अपनी भुजाओं से पैदा किया हुआ धन से धनी होता है ॥ ७ ॥

द्वितीयभावगतचतुर्थेशफलम्—

सर्वसंपद्युतो मानी साहसी कुसुखान्वितः ।
कुटुम्बैः संयुतो भोगी सुतेशे च द्वितीयगे ॥ ८ ॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थेश द्वितीय भाव में बैठा हो वह सब सम्पत्तियों से युत, मानी, साहसी, पृथ्वी को लेकर सुखी, कुटुम्बों से युत और भोगी होता है ॥ ८ ॥

इति "विमला" व्याख्यायां तन्वादिद्वादशभावगतचतुर्थेशफलम् ।

अथ पञ्चमेशफलम्

तत्रादौ पञ्चमभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशः पञ्चमे यस्य तस्य पुत्रो न जीवति ।
क्षणिकःक्रूरभाषी च धार्मिको मतिमान् भवेत् ॥ १ ॥

जिसके जन्म समय में पञ्चमेश पञ्चम भाव में बैठा हो उस मनुष्य का पुत्र नहीं जीता है । तथा क्षण मात्र समय को भी अपने काम में लाने वाला, बुरे वचन बोलने वाला, धर्मात्मा और बुद्धिमान होता है ॥ १ ॥

षष्ठद्वादशभावगतपञ्चमेशफलम् —

सुतेशे षष्ठरिःफस्थे पुत्रः शत्रुत्वमाप्नुयात् ।

मृत्युतो भ्रातृपुत्रो वा धनपुत्रोऽथ वा भवेत् ॥ २ ॥

जिसके जन्म समय में पञ्चमेश षष्ठ या द्वादश भाव में बैठा हो उस मनुष्य को पुत्र के साथ शत्रुता या पुत्र की मृत्यु हो जाती है, पुत्र मर जाने के बाद दत्तक या धन देकर पुत्र बनाता है ॥ २ ॥

सप्तमभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे कामगे मानी सत्यधर्मसमन्वितः ।
तुङ्गस्थिते जनस्वामी भक्तियुक्तैकतेजसा ॥ ३ ॥

जिस जातक के जन्म समय में पञ्चमेश सप्तम भाव में स्थित हो तो वह मानी, सत्य बोलने वाला और धर्मात्मा होता है ।

यदि उच्च स्थान गत पञ्चमेश हो तो भक्तियुत प्रताप से जनों का स्वामी (राजा) होता है ॥ ३ ॥

अष्टमद्वितीयभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे चायुषि वित्ते बहुमित्रो न संशयः ।
उदरव्याधिसंयुक्तो क्रोधयुक्तो धनान्वितः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म समय में पञ्चमेश अष्टम या द्वितीय भाव में बैठा हो वह मनुष्य बहुत मित्र वाला, पेट की बीमारी से युत, क्रोध युत और धनवान् होता है, इसमें संशय नहीं ॥ ४ ॥

नवमदशमभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे नवमे खे च पुत्रो भूपसमो भवेत् ।
अथवा ग्रन्थकर्ता च विख्यातो कुलदीपकः ॥ ५ ॥

जिसके जन्म समय में पञ्चमेश नवम या दशम भाव में बैठा हो उसका लड़का राजा के समान होता है । अथवा ग्रन्थ बनाने वाला प्रसिद्ध और अपने कुल को उज्ज्वल करने वाला होता है ॥५॥

एकादशभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे लाभभवने पण्डितो जनवल्लभः ।
ग्रन्थकर्त्ता महादक्षो बहुपुत्रो धनान्वितः ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में पंचमेश एकादश भाव में बैठा हो वह मनुष्य पण्डित, जनों का स्नेही, ग्रन्थ बनाने वाला, अतिशय चतुर, बहुत पुत्र वाला और धन से युत होता है ॥ ६ ॥

लग्नतृतीयभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे लग्नसहजे मायावी पिशुनो महान् ।
यशोऽपि दीयते नैव किञ्चिद्द्रव्यस्य का कथा ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में लग्न या तृतीय भाव में पंचमेश बैठा हो वह मनुष्य मायावी, चुगुलखोर, कोई कितना भी उपकार करे उसको यश न देने वाला और द्रव्य तो बिलकुल ही नहीं देने वाला होता है। ७।

चतुर्थभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे मातृभवने चिरं मातृसुखं भवेत् ।
लक्ष्मीयुक्तो सुबुद्धिश्च सचिवश्च गुरुस्तथा ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में पंचमेश चतुर्थ भाव में बैठा हो वह मनुष्य बहुत काल तक माता से सुख पाने वाला, लक्ष्मी से युत, सुन्दर बुद्धि वाला और राजा का मन्त्री या गुरु होता है ॥ ८ ॥

इति "विमला" व्याख्यायां लग्नादिद्वादशभावगतपञ्चमेशफलम्—

अथ षष्ठेशफलम्

तत्रादौ रिपुभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशे रिपुभावस्थे स्वज्ञातिः शत्रुवद्भवेत् ।
परज्ञातिर्भवेन्मित्रं भूमौ न चलति ध्रुवम् ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में षष्ठेश षष्ठ भाव में हो तो उसका अपना बन्धुवर्ग शत्रु के समान, तथा दूसरे का बन्धु वर्ग मित्र के समान होता है, और निश्चय करके वह पैदल नहीं चलता है ॥ १ ॥

सप्तमैकादशभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशे सप्तमे लाभे लग्ने वा पशुमान् भवेन् ।

धनवान् गुणवान् मानी साहसी पुत्रवर्जितः ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में षष्ठेश पंचम या एकादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य पशुओं से युत, धनवान्, गुणवान्, मानी, साहसी और पुत्रहीन होता है ॥ २ ॥

द्वादशाष्टमभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशेऽष्टमरिःफस्थे रोगी शत्रुर्मनीषिणाम् ।
परजायाभिगामी च जीवहिंसासु तत्परः ॥ ३ ॥

जिसके जन्म समय में अष्टम या द्वादश भाव में षष्ठेश बैठा हो तो रोगी, पण्डितों का दुश्मन, परस्त्रीगामी और जीवों का वध करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

नवमभावगतषष्ठेशफलम्----

षष्ठेशो नवमे यस्य काष्ठपाषाणविक्रयी ।
व्यवहारे क्वचिद्धानिः क्वचिद्वृद्धिर्भवेत्किल ॥ ४ ॥

जिस जातक के जन्म काल में षष्ठेश नवम भाव में बैठा हो वह लकड़ी और पत्थल को बेचने वाला होता है तथा उसको व्यापार से कहीं हानि कहीं वृद्धि होती है ॥ ४ ॥

द्वितीयदशमभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशे कर्मवित्तस्थे साहसी कुलविश्रुतः ।
परदेशी शुचिर्वक्ता स्वधर्मेष्वेकनिष्ठकः ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में षष्ठेश द्वितीय या द्वादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य साहसी, अपने कुल में प्रसिद्ध, परदेशी, पवित्र, वक्ता और अपने धर्म में विश्वास करने वाला होता है ॥ ५ ॥

तृतीयचतुर्थभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशे सहजे तुर्ये क्रोधनो रक्तलोचनः ।
मनस्वी पिशुनोऽधर्मी चलचित्तोऽतिवित्तवान् ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में षष्ठेश तृतीय या चतुर्थ भाव में बैठा

हो तो वह जातक क्रोधी, लाल आँख वाला, मनस्वी, चुगुल-खोर, अधर्मी, चञ्चल चित्त वाला और अत्यन्त धनी होता है ॥६॥

पञ्चमभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशः पञ्चमे यस्य चलं मित्रधनादिकम् ।
कफयुक्तःसुखी सौम्यःस्वकार्ये चतुरो महान् ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में षष्ठेश पञ्चम भाव में स्थित हो तो वह मनुष्य चञ्चल मैत्री और चञ्चल धन वाला, कफी, सुखी, सुन्दर स्वभाव वाला तथा अपने कार्य में अत्यन्त चतुर होता है ॥७॥

इति "विमला" व्याख्यायां तन्वादिद्वादशभावगतषष्ठेशफलम् ।

अथ सप्तमेशफलम्

तत्रादौ सप्तमभावगतसप्तमेशफलम्—

सप्तमेशे तनौ चास्ते परजायासु लम्पटः ।
निष्ठुरो वचसा धीरो वार्ता न स्थीयते हृदि ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश लग्न और सप्तम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य परस्त्रीगामी, बोलने में निष्ठुर, धीर और हृदय में किसी गुप्त बात को न रखने वाला होता है ॥ १ ॥

अष्टमषष्ठभावगतसप्तमेशफलम—

जायेशे चाष्टमे षष्ठे सरोषा कामिनी भवेत् ।
क्रोधयुक्तो भवेद्वापि न सुखं लभते क्वचित् ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश अष्टम या षष्ठ भाव में बैठा हो तो उसकी स्त्री रोष करनेवाली होती है अथवा स्वयं क्रोधी होता है और सदा सुखहीन रहता है ॥ २ ॥

द्वितीयनवमभावगतसप्तमेशफलम्—

द्युनेशे नवमे वित्ते नानास्त्रीभिः समागमः ।
आरम्भी दीर्घसूत्री च स्त्रीषु चित्तं हि केवलम् ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश द्वितीय या सप्तम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य अनेक स्त्रियों के साथ रमण करने वाला, छोटे कार्य को भी आरम्भ कर देर में समाप्त करने वाला और सदा स्त्रियों की तरफ मन रखने वाला होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थदशमभावगतसप्तमेशफलम्---

द्युनेशे दशमे तुर्ये तस्य जाया पतिव्रता ।
धर्मात्मा सत्यसंयुक्तः केवलं वातरोगवान् ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश चतुर्थ या दशम भाव में बैठा हो तो उसकी स्त्री पतिव्रता तथा स्वयं धर्मात्मा, सत्य बोलने वाला और सिर्फ वात रोग से दुखी रहता है ॥ ४ ॥

तृतीयैकादशभावगतसप्तमेशफलम्---

द्यूनेशे सहजे लाभे मृतपुत्रोऽपि जायते ।
कदाचिज्जीवति कन्या पश्चात्पुत्रोऽपि जीवति ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश तृतीय या एकादश भाव में बैठा हो तो उसका लड़का मर जाता है । अगर कहीं कन्या जन्म लेकर जीवे तो बाद पुत्र भी जीवित रहता है ॥ ५ ॥

द्वादशभावगतसप्तमेशफलम्—

द्वादशे सप्तमेशे तु दरिद्रः कृपणो महान् ।
चौरकन्याभवेद्भार्या वस्त्राजीवी च नीचधीः ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश द्वादश भाव में बैठा हो तो मनुष्य दरिद्र, अत्यन्त कृपण, चोर की कन्या से शादी करने वाला, वस्त्र का व्यापार करने वाला और नीच बुद्धि वाला होता है ॥ ६ ॥

पञ्चमभावगतपञ्चमेशफलम् -

सर्वैर्गुणैर्युतोमानी भवेत्सर्वगुणाधिपः ।
सदैव हर्षसंयुक्तः सप्तमेशे सुतस्थिते ॥ ७ ॥

जिस जातक के जन्म काल में सप्तमेश पंचम भाव में बैठा हो

तो वह सब गुणों से युत, मानी, सब गुणों का स्वामी और सदा आनन्दयुत रहता है ॥ ७ ॥

इति "विमला" व्याख्यायां तन्वादिद्वादशभावगतसप्तमेशफलम् ।

अथाष्टमेशफलम्

तत्रादावष्टमभावगताष्टमेशफलम्—

द्यूतश्चौरोऽन्यथावादी गुप्तनिन्दासु तत्परः ।
अष्टमेशेऽष्टमस्थाने भार्या पररता भवेत् ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश अष्टम भाव में बैठा हो तो वह जातक जुआ खेलने वाला, चोर, असत्य बोलने वाला और चुगलखोरी में तत्पर होता है तथा उसकी स्त्री दूसरे के साथ प्रेम करती है ॥ १ ॥

नवमभावगताष्टमेशफलम्—

अष्टमेशे तपस्थाने महापापी च नास्तिकः ।
सुताढ्या त्वथवा वन्ध्या भार्या परधनं हृदि ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश नवम भाव में स्थित हो तो वह मनुष्य महापापी और नास्तिक होता है । उसकी स्त्री कन्याओं को जननेवाली या वन्ध्या और दूसरे के धन की अभिलाषा करने वाली होती है ॥ २ ॥

चतुर्थदशमभावगताष्टमेशफलम्—

अष्टमेशे सुखे खे वा पिशुनो बन्धुवर्जितः ।
मातापित्रोर्भवेन्मृत्युः स्वल्पकालेन भीतियुक् ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश चतुर्थ या दशम भाव बैठा हो तो वह मनुष्य चुगलखोर, बन्धुओं से रहित, बाल्य काल में माता पिता दोनों की मृत्यु पाने वाला और भय से युत होता है ॥ ३ ॥

सप्तमैकादशभावगताष्टमेशफलम्—

अष्टेशे सप्तमे लाभे कृतौ वृद्धिः प्रजायते ।

द्रव्यं न स्थीयते गेहे स्थिरवृद्धिर्भवेच्च न ॥ ४ ॥

जिस जातक के जन्म काल में अष्टमेश सप्तम या एकादश भाव में स्थित हो तो वह मनुष्य कोई व्यापार करने से वृद्धि को पाता है, किन्तु द्रव्य उसके घर में नहीं ठहरता अतएव उसकी वृद्धि स्थिर-पूर्वक कभी नहीं होती है ॥ ४ ॥

द्वादशषष्ठभावगताष्टमेशफलम्----

अष्टमेशे व्यये षष्ठे नित्यरोगी प्रजायते।
जलसर्पादिकाद्घातो भवेत्तस्यैव शैशवे ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश षष्ठ या द्वादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य सदा रोगयुत और बाल्य काल में उसके ऊपर जल, सर्प आदि जीवों का आघात होता है ॥ ५ ॥

लग्नतृतीयभावगताष्टमेशफलम्----

अष्टमेशे तनौ सोत्थे भार्याद्वयं समादिशेत्।
विष्णुद्रोहरतो नित्यं व्रणरोगः प्रजायते ॥ ६ ॥

जिसके जन्म समय में अष्टमेश लग्न या तृतीय भाव में बैठा हो वह मनुष्य दो स्त्री वाला, विष्णु भगवान् का द्रोही और घाव सम्बन्धी रोग से युत होता है ॥ ६ ॥

द्वितीयपञ्चमभावगताष्टमेशफलम्----

अष्टमेशे धने ज्ञाने वलहीनः प्रजायते।
धनं तस्य भवेत्स्वल्पं गतं वित्तं न लभ्यते ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश तृतीय या पञ्चम भाव में बैठा हो वह मनुष्य निर्बल होता है। तथा उसके पास में थोड़ा धन रहता है और गया हुआ धन फिर लौटता नहीं है ॥ ७ ॥

इति "विमला" व्याख्यायां तन्वादिद्वादशभावगताष्टमेशफलम्।

अथ नवमेशफलम्

तत्रादौ नवमभावगतनवमेशफलम्—

धनधान्ययुतो नित्यं गुणसौन्दर्यसंयुतः ।
बहुभ्रातृसुखैर्युक्तो भाग्येशे नवमे स्थिते ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में नवमेश नवम भाव में बैठा हो वह मनुष्य सर्वदा धनधान्य से युत, गुणी, सुन्दर और बहुत भाई के सम्बन्धी सुख से युत होता है ॥ १ ॥

दशमचतुर्थभावगतनवमेशफलम्—

भाग्येशे दशमे तुर्ये मन्त्री सेनापतिर्भवेत् ।
पुण्यवान्पशुमांश्चापि साहसी क्रोधवर्जितः ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में नवमेश दशम और चतुर्थ भाव में बैठा हो वह मनुष्य मन्त्री या सेनापति होता है । तथा पुण्यवान्, पशुओं को रखने वाला, साहसी और क्रोध से रहित होता है ॥ २ ॥

पञ्चमैकादशभावगतनवमेशफलम्—

भाग्येशे पंचमे लाभे भाग्यवान् जनवल्लभः ।
गुरुभक्तिरतो मानी धीरोदारगुणैर्युतः ॥ ३ ॥

जिस जातक के जन्म काल में नवमेश पञ्चम या एकादश भाव में गत हो तो वह भाग्यवान्, सबों का प्रिय, गुरु की भक्ति में रत, मानी, धीर और उदार गुण से युत होता है ॥ ३ ॥

षष्ठाष्टमद्वादशभावगतनवमेशफलम्—

भाग्येशे मातुले रिष्फे भाग्यहीनस्तथाष्टमे ।
मातुलस्य सुखं न स्यात् ज्येष्ठभ्रातुः सुखं तथा ॥ ४ ॥

जिस जातक के जन्म काल में नवमेश षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में बैठा हो तो वह भाग्य रहित, मामा के सुख से रहित और अपने बड़े भाई से सुख पाने वाला होता है ॥ ४ ॥

लग्नसप्तमभावगतनवमेशफलम्—

भाग्येशे सप्तम कल्पे गुणवान्पशुमान् भवेत् ।
कदाचिन्न भवेत्सिद्धिर्यत्कार्यं कर्तुमिच्छति ॥ ५ ॥

जिस जातक के जन्म काल में नवमेश सप्तम या लग्न में बैठा हो तो वह गुणवान् और पशुओं वाला होता है तथा जिस काम को करने की इच्छा करे वह कदापि सिद्ध नहीं होता है ॥ ५ ॥

द्वितीयतृतीयभावगतनवमेशफलम्—

भाग्येशे सहजे वित्ते सदा भाग्यानुचिन्तकः ।
धनवान्गुणवान् कामी पण्डितो जनवल्लभः ॥ ६ ॥

जिस जातक के जन्म काल में नवमेश द्वितीय या तृतीय भाव में बैठा हो वह अपने भाग्य को सराहने वाला, धनी,गु णी, कामी, और सबका प्रिय होता है ॥ ६ ॥

इति "विमला" व्याख्यायां तन्वादिद्वादशभावगतनवमेशफलम् ।

अथ दशमेशफलम्

तत्रादौ चतुर्थदशमभावगतदशमेशफलम्----

दशमेशे सुखे खे वा ज्ञानवान्स च विक्रमी ।
गुप्तदेवार्चनरतो धर्मात्मा सत्यसंयुतः ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश चतुर्थ या दशम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य ज्ञानवान्, पराक्रमी, गुप्त रूप से देवताओं का पूजन करने वाला, धर्मात्मा और सत्यवादी होता है ॥ १ ॥

अष्टमभावगतदशमेशफलम्----

कर्मेशश्चाष्टमे यस्य चिन्तायुक्तो भवेन्नरः ।
धनादिकं सुखं मध्यं शरीरं कष्टसंयुतम् ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टम भाव में दशमेश बैठा हो तो वह मनुष्य चिन्ता से युत, धन आदि के सुख मध्यम रूप से और शरीर कष्ट से युत रहता है ॥ २ ॥

दशमैकादशभावस्थितदशमेशफलम्—

दशमेशे शुभे लाभे धनवान् पुत्रवान् भवेत् ।
सर्वदा हर्षसंयुक्तः सत्यवादी सुखी नरः ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश नवम या एकादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य धनवान्, पुत्रवान्, सर्वदा हर्ष से युत, सत्य बोलने वाला, और सुखी होता है ॥ ३ ॥

पञ्चमषष्ठभावगतदशमेशफलम्—

कर्मेशस्तनये षष्ठे धर्मकर्मसु तत्परः ।
देवद्विजेषु भक्तिश्च तीर्थयोगेषु तत्परः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश पञ्चम या षष्ठ भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य धर्म कर्म में लगा रहता है, तथा ब्राह्मण देवताओं में भक्ति करने वाला, तीर्थ स्थान में भक्ति रखने वाला और योग-क्रिया करने वाला होता है ॥ ४ ॥

द्वादशभावगतकर्मेशफलम्—

कर्मेशश्च व्यये यस्य शत्रुभिः पीडितः सदा ।
चातुर्यगुणसंपन्नः कदाचिन्न सुखी भवेत् ॥ ५ ॥

जिस जातक के जन्म काल में दशमेश द्वादश भाव में बैठा हो वह शत्रुओं से पीड़ित, चातुर्य्य गुण से युत, किन्तु सर्वदा सुख से रहित होता है ॥ ५ ॥

लग्नगतदशमेशफलम्—

दशमाधिपतौ लग्ने कवितागुणसंयुतः ।
बाल्ये रोगी सुखी पश्चादर्थवृद्धिर्दिने दिने ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश लग्न में बैठा हो तो वह मनुष्य कविता बनाने वाला, बाल्य काल में रोगी, किन्तु पीछे सुखी होता है। और उसको प्रतिदिन धन की वृद्धि होती है ॥ ६ ॥

ततो द्वितीयतृतीयसप्तमभावगतदशमेशफलम्—

धने मदे च सहजे कर्मेशो यदि संस्थितः।
मनस्वी गुणवान् वाग्मी सत्यधर्मसमन्वितः॥ ७॥

जिसके जन्म काल में दशमेश द्वितीय, तृतीय या सप्तम भाव में बैठा हो वह मनुष्य मनस्वी, गुणवान्, वक्ता, सत्य, और धर्म से युत होता है॥ ७॥

इति "विमला" व्याख्यायां तन्वादिद्वादशभावगतदशमेशफलम्।

अथैकादशेशफलम्

तत्रादावेकादशभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे संस्थिते लाभे स वाग्मी जायते ध्रुवम्।
पाण्डित्यं कविता चैव वर्द्धते च दिने दिने॥ १॥

जिस जातक के जन्म काल में एकादशेश एकादश भाव में बैठा हो तो उसका पाण्डित्य और काव्य-निर्माण करने की शक्ति प्रति दिन बढ़ती रहती है।॥ १॥

द्वादशस्थानगतैकादशेशफलम्—

प्राप्तिस्थानाधिपे रिष्फे म्लेच्छसंसर्गकारकः।
कामुको बहुकान्तश्च चणिकः कामलम्पटः॥ २॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश द्वादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य म्लेच्छों का संग करने वाला, कामी, बहुत सुन्दर, चञ्चल और काम से लम्पट होता है॥ २॥

लग्नगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे संस्थिते लग्ने धनवान्सात्त्विको महान्।
समदृष्टिर्महावक्ता कौतुकी च भवेत्सदा॥ ३॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश लग्न में बैठा हो वह धनवान्, बड़ा सात्त्विक, सब पर समान दृष्टि रखने वाला, बोलने वाला और क्रीड़ा करनेवाला होता है॥ ३॥

द्वितीयपञ्चमभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे च धने पुत्रे नानासुखसमन्वितः।
पुत्रवान् धार्मिकश्चैव सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश द्वितीय या पञ्चम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य नाना तरह के सुखों से युत, पुत्रवान्, धार्मिक और सब कामों को साधन करने वाला होता है ॥ ४ ॥

तृतीयचतुर्थभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे सहजे तुर्ये तीर्थेषु तत्परो भवेत्।
कुशलः सर्वकार्येषु केवलं शूलरोगवान् ॥ ५ ॥

जिस जातक के जन्म काल में एकादशेश तृतीय या चतुर्थ भाव में बैठा हो तो तीर्थ में जाने वाला, सब कामों में चतुर और शूल नामक रोग से युत होता है ॥ ५ ॥

षष्ठभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे षष्ठभवने नानारोगसमन्वितः।
सर्वं सुखं भवेत्तस्य प्रवासी परसेवकः ॥ ६ ॥

जिस जातक के जन्म काल में एकादशेश षष्ठ भाव में बैठा हो तो वह नाना प्रकार के रोग से युत, सब तरह के सुख पाने वाला, परदेश में रहने वाला और नौकरी करने वाला होता है ॥ ६ ॥

सप्तमाष्टमभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे सप्तमे रन्ध्रे भार्या तस्य स्वरूपिणी।
उदारो धनवान्कामी भूसुरो भवति ध्रुवम् ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश सप्तम या अष्टम भाव में बैठा हो तो उसकी स्त्री सुन्दरी होती है, तथा स्वयं वह उदार, धनी, कामी और निश्चय करके ब्राह्मण होता है ॥ ७ ॥

नवमदशमभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे गगने धर्मे राजपुत्रो धनाधिपः।

चतुरः सत्यवादी च निजधर्मसमन्वितः ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश नवम या दशम भाव में बैठा हो तो वह राजा के पुत्र अथवा धनों के स्वामी, चतुर, सत्य बोलने वाला और अपने धर्म से युत होता है ॥ ८ ॥

इति 'विमला' व्याख्यायां तन्वादिद्वादशभावगतैकादशेशफलम् ।

अथ द्वादशेशफलम्

तत्रादौ द्वादशषष्ठभावगतद्वादशेशफलम्---

व्ययेशेऽरिव्यये पापी मातृमृत्युविचिन्तकः ।
क्रोधी सन्तानदुःखी च परजायासु लम्पटः ॥ १ ॥

जिस जातक के जन्म काल में द्वादशेश षष्ठ या द्वादश भाव में बैठा हो वह पापी अपनी माता की मृत्यु को चाहने वाला, क्रोधी, सन्तान का सम्बन्ध लेकर दुखी और दूसरे की स्त्री के साथ मौज उड़ाने वाला होता है ॥ १ ॥

लग्नसप्तमभावगतद्वादशेशफलम्----

व्ययेशे मदने लग्ने जायासौख्यं भवेन्नहि ।
दुर्बलो कफरोगी च धनविद्याविशारदः ॥ २ ॥

जिस जातक के जन्म समय में द्वादशेश लग्न या सप्तम भाव में स्थित हो वह स्त्री सुख से रहित, दुर्बल, कफ रोग से युत, धनी और विद्याओं में निपुण होता है ॥ २ ॥

द्वितीयाष्टमभावगतव्ययेशफलम्----

व्ययेशे च धने रन्ध्रे विष्णुभक्तिसमन्वितः ।
धार्मिकः प्रियवादी च गुणैः सर्वैः समन्वितः ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में व्ययेश द्वितीय या एकादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य विष्णु भगवान् का भक्त, धार्मिक, प्रिय बोलने वाला और सब गुणों से युत होता है ॥ ३ ॥

तृतीयनवमभावगतव्ययेशफलम्—

भ्रातृद्वेषी प्रियद्वेषी गुरुद्वेषी भवेन्नरः।
व्ययेशे सहजे धर्मे स्वशरीरस्य पोषकः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में तृतीय या नवम भाव में व्ययेश बैठा हो तो वह मनुष्य भाई, गुरु और अपने मित्रों से शत्रुता करने वाला और अपने शरीर को पोषण करने वाला होता है ॥ ४ ॥

दशमैकादशभावगतव्ययेशफलम्—

व्ययेशे दशमे लाभे पुत्रसौख्यं भवेन्न हि।
मणिमाणिक्यमुक्ताभिर्धनं किञ्चित्समाप्नुयात् ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में व्ययेश दशम या एकादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य पुत्र के सुख से रहित तथा मणि, माणिक्य, मुक्ता आदि के क्रय विक्रय से कुछ धन पैदा करने वाला होता है ॥ ५ ॥

चतुर्थपञ्चमभावगतद्वादशेशफलम्—

व्ययेशे च सुते तुर्ये नीचबुद्धिर्भवेन्नरः।
गृहभूमिसुखैर्हीनो जनन्याः क्लेशकारकः ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में व्ययेश चतुर्थ या पञ्चम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य नीच बुद्धि वाला, गृह तथा भूमि के सुख से रहित और अपनी माता को क्लेश देने वाला होता है ॥ ६ ॥

सुविदित "दरभङ्गा" ख्ये प्रान्ते पत्रालये "बहेड़ा" ख्ये।
"जरिसो" नाम्ना नगरं भूदेवावलिसंवलितम् ॥
अकरोत्तत्र निवासी श्रीमद् "बलदेव" शर्मणस्तनयः।
श्रीलाच्युतादिनन्दो भावाध्यायार्थटीकनं हिन्द्याम् ॥
ज्यौतिषशास्त्रे काशीस्थायामुत्तीर्य राजकीयायाम्।
प्रतिखण्डं प्रथमायां श्रेण्यामाचार्यपश्चिमं खण्डम ॥

सर्वप्रथमायां तल्लब्धो "रीपन्" सुहेमपदकं च ।
अथ लब्धश्च विहारे ज्योतिष-साहित्य-शास्त्रयोर्मध्ये ॥

आचार्यस्य च पदवीं पोष्टाचार्याभिधानिकां काश्याम् ।
साम्प्रतमन्तेवसतोऽमुष्यामेवानुशास्मि भूयिष्ठं ॥

श्री'राम साधु' संज्ञक-संस्कृत-विद्यालये विद्वन् ! ।
इत्येवास्त्यस्माकं संस्तवज्ञानोत्क ! संस्तवः कश्चित् ॥

इति लोमशोक्त"भावफलाध्याये" "दरभङ्गा"मण्डलान्तर्गत"जरिसो" ग्राम-निवासि-ज्यौतिषाचार्य-पोष्टाचार्य-साहित्याचार्य-प्राप्त "रीपन्"स्वर्णपदक-काशीस्थ"श्रीराम साधु"संस्कृत महा-विद्यालय त्रिस्कन्ध ज्योतिष-साहित्य-शास्त्रद्वयप्रधाना-ध्यापक पं० श्री"अच्युतानन्द" झा शास्त्रिणा कृता "विमला" संज्ञकभाषाटीका समाप्ता ।

—: ० :—

समाप्तोऽयं लोमशसंहितोक्तभावफलाध्यायः ।

3376

॥ श्री ॥

ग्रह आणी ग्रहचा परिणाम

अथात्

ग्रह काय पदार्थ आहे आणी ग्रहांचा परिणाम भूमिस्थप्राणींच्यां वर्गावर कशा प्रकारानें कां होतो अशा प्रकारच्या पांच प्रश्नाच्या वर्तमान शैलांचे अनुसार सयुक्तिक उत्तरांच्या निबंध

श्री भारत धर्म महामंडळ प्रधान कार्यालय श्रीक्षेत्र काशीद्वारा उत्तम ठरविला

तोच

ज्योतिषरत्न पं० श्रीनिवास महादेवजी शर्म्मा राजज्योतिषी रतलाम निवासी यांनी

लोकोपकारार्थ स्वकीय श्री भुवनेश्वरीप्रिंटिंगप्रेस रतलाममध्यें छापून प्रकाशित केला

प्रथमवार ५०० मुल्य ॥) आठआणे

प्रस्तावना.

अलीकडे फल ज्योतिष शास्त्रावर सुशिक्षित लोकांचा अनुभव नसल्यामुळे भरँवसा नाहीं, या मुळे फल ज्योतिषशास्त्राची लोकां कडून लोक भ्रमामध्ये गणना होऊलागली. आणि अनुभव न घेतल्याने असा होणा स्वाभाविकचआहे. परंतु सूज्ञ मनुष्य विचार करून पाहतील तर त्यांना स्पष्ट असे दिसून येईल कीं, जर सूर्य चंद्राचे उदय ठराविक कालीहोतात, भरती ओहटी बरोबर वेळेवर होते ग्रहआपल्या नियमित गतीनें विवक्षित वेळांत आकाशांतून मार्ग क्रमण करितात. चंद्र सूर्याची ग्रहणे ग्रहांच्या गतीने नियमित कालींहोतात, सूर्योदयाने कमल विकासितहोतो चंद्रोदयाने कमोदिनी प्रफुल्लित होते चंद्राचे क्षय वृद्धिकलांचे अनुसार सोमलताचे पत्रांचा क्षय वृद्धित्व होतोच. इतकेच नाहींतर अशीं अनेक फळे फुलें देखील नियमितवेळींच येतात, तर बाकीच्या गोष्टीं अनियमित कालीं कशा घडतांत? सर्वगोष्टीं नियमित कालांच घडल्या पाहिजेत हाजर सिद्धांत आहे तर फलज्योतिष हे एक शास्त्र आहे हे हीं खरे आहे; म्हणून प्राण्यांचे जन्म मृत्यु, उत्कर्षापकर्ष, संतती संपत्ति मिळणे, वगैरे सर्व प्रकार कालानुरोधांने म्हणजे ग्रहांच्या विशिष्ठ प्रकारच्या स्थिति प्रमाणे घडले पाहिजेत यांत संशयनाहीं आणि विशेष लक्षपूर्वक पाहिले तर सामान्य विचारांनीं असे क्वचितच आढळेल

कीं, ज्यांची जन्म राशी किंवा जन्मलग्नापासून ज्यांदली गुरु ४। ८। १२ किंवा मंगल ४। ८। १२। ७ किंवा शनि ४। ८ तथा साढे सातीत आले असेल त्याचा दुःष्ट फलाचा प्रत्यक्ष अनुभव नाहीं आला क्वचितच असेल. जरसामान्यरित्या ग्रहांचा फलांचा अनुभव प्रत्यक्ष दृग्गोचर सर्वांस होतो तर विशिष्ट स्थितितजर ग्रहयेतांच विशिष्टफल कां होऊ नये? यांत ग्रहांची चूक नाहीं चूक आहे अनुभव घेणाराची जरसत्तव्यासंगांनी अनुभव घेतल्याने अनुभवास सत्यता न आलीतर फलितशास्त्र खोटें आहे असे मात्र म्हणण्यात हरकतनाहीं। परंतु सांप्रत ची विलक्षणस्थित अशी आहे कीं सत्या सत्य वरतूचा निर्णय केला नाहीं त्यांचाअनुभव घेतलानाहीं एकाने म्हटले फलित शास्त्र भ्रमाचा खेळआहे ऐकतांच दूसरापण गाडरिया प्रवाहा प्रमाणें सांगतोच फलित शास्त्र खोटंआहे दस त्यालाविचारा तुमि खोटें कशावरुन म्हटले तोम्हणतो अहो ते अमुक असेच सांगत होते बाबा तुम्हा अनुभव घेतला? नाहीं पणपहा तरखरे फलित ज्योतिषावर भरंवसा न ठेवणारे लोक आताच्या कालिंच आहेत असे नाहीं, पूर्वी देखील चांगल्या विद्वान मंडलीतसुद्धा असलोक होते. प्रसिद्ध संस्कृत काव्यग्रथ विश्वगुणादर्श याच्या कर्त्यांच्या फलज्योतिषावरविश्वास नव्हता तो णप—

विलसित सदर द्वा जन्मपत्रं जनानां फलति यदितदानीं दर्शयत्यात्म दाक्ष्यं। नफलाति यदि लग्न द्रष्टुरेवाह मोहम्हरातिघन-मिहैव हंत दैवज्ञपाशः ॥ १ ॥

असे म्हणतो. याकारणानी आमचाभरंवसानाहीं।

विचार करण्या सरखी गोष्ट आहे याश्लोकांत फलितशास्त्रावर कांहि काडीं मात्र आक्षेपनाहीं आक्षेप आहे आमेच सरखे अविचारि लट्टपटाध्यायि जोशांबुवावर जोशांबुवावरच आक्षपानी फलित शास्त्रावर दूषण येतनाहीं; आणी असेविद्वान शास्त्राला दूषण देत नाहींत कदाचित घटीकाभर असे पणमानलेकीं, विश्वगुणादर्शकार फलित शास्त्र मानीत नव्हत ता त्यांचे नमानण्यावर काहींफलित शास्त्र मिथ्याहोउ शकेल हेकदापिनाहीं पहा जर श्रीरामकृष्णादि अवतार होते त्यांनापण कोणि कलंक लावला कोणी मिथ्या वासुदेव वगैराम्हटले असे अनेक शत्रुत्वानें म्हणत होते त्या वरून काय रामाचे रामत्व आणी कृष्णचन्द्राचा कृष्णत्व अंशावतार स्वरूप असत्य होउनगेला?तसेच जर एकायाने हास्यांत नाटकांत कधी शास्त्रावरपण आक्षेपकेलाअसेल तो हास्यास्पदच आहे। अस्तु.

असा उत्तरानी जर निरुत्तर होते तर असा प्रश्न करते कि इतक्या लांबावर असणारे आकाशांतील ग्रह मनुष्यावर कसा परिणाम करूं शकतील! ग्रहांचा मनुष्यांसी काय संबंध आहे ते कां? शुभाशुभ फल देतात, ग्रह काय आहे त्यांच्या शांतीच्या योगानं फलांच्या परिणाम कां कसे बदलतात असे अनेक प्रश्न करतात, ते ऐकणारास खरें असे वाटतें व त्यांची कल्पनापण समाधानकारक उत्तर न मिळण्याने अशीच होते तसे झाल्या मुळे दिवसो दिवस अशा लोकाच्या संगती मुळे नव शिक्षिताचाफलितशास्त्रावर विश्वास कमी होत चालला हे पाहून.

अशा लोकांच्या शंकाचे समाधान अवश्यमेव कांही अंशी व्हावे म्हणून आम्ही या विषयावर निबंध लिहणारास बक्षीस लाविले.

सर्व हिंदुस्तानांतून मराठी, हिंदी, गुजराथी वगैरे भाषातून एकूण १४ निबंध आले ते श्रीक्षेत्र काशी येथील श्रीभारतधर्म महामंडल महा परिषदा मध्ये महा महोपाध्याय पंडित सुधाकर शास्त्रीद्विवेदीजी आदि करून विद्वान मंडली कडून तपासले जाऊन श्रीयुत ज्योतिर्विंद अब्दूलअजीजखान वजीरखान हल्लीचे निवास स्थान मुम्बई व श्रीयुत ज्योतिर्विंद पंडित कृष्णलालजी चोबे भेलसावाले यांचा दोन निबंध उत्तम ठरून त्यांस बक्षीसे देण्यात आली; त्यांपैकी श्रीयुत ज्यो० अब्दुलअजीजखान यांचा हा मराठी भाषेतील निबंध आम्ही छापून प्रसिद्ध केले आहे. छापखान्यांतील नोकर लोकांची भाषा मराठी नसल्यामुलें ळ च्या ठिकाणी ल आणी च्या चे ठिकाणी चा वगैरे दोष पुष्कल राहिले आहेत; परंतु ज्या चूका अशा आहेत कीं त्या मुलें मजकूर समजण्यास अडचण पडेल अशांचे शुद्धिपत्र निबंधा सोबत जोडले आहे. निबंध वचून फल शास्त्रा बद्दल वाचकांचे थोडे तरी समाधान झाल्यास प्रकाशकास अती समाधान वाटेल.

प्रकाशक,

ज्योतिर्विंद् श्रीनिवास महादेवजी शर्मा.
ज्योतिष रत्न, राजजोशि—रतलामवाले,

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध
१	६	वायेलें	वाटोळें
१	१०	शस्त्रांतले	शास्त्रांतले
१	१०	पहिलें	पाहिलें
२	१३	आणी	आणि
३	६	असातास्यांस	अशातांस्यांस
४	१३	तैयार	तय्यार
६	१०	ताज मुळें	तिज मुळें
७	६	तार्काच्या	तार्याच्या
१०	२	अगदा	अगदीं
११	११	आपत्यास	आपल्यास
११	२३	अगगाडी	आगगाडी
१३	१	याचा	त्याचा
१४	५	त्यांचा	त्यांच्या
१७	३	होता	होतो
२०	५	देवत	देवता
२०	१४	प्राकारें	प्रकारें
२०	२१	सूर्योभोयती	सूर्या भोंवतीं
२१	८	उळद	उलट
२२	११	व संपण्याचे	वसंत संपण्याचे
२४	४	म्हटळे	म्हटलें

पृष्ठ	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध
२६	१०	रशींच	राशींचे
२७	२२	अहेच	आहेच
२९	४	ग्रहांच्यी	ग्रहांच्या
३०	८	चालता	चालतो
३०	१६	राशी परत्यें	राशी परत्वें
३३	२०	मटवयांतील	मडक्यांतील
३८	१५	उद्योग धंधे	उद्योगधंदे
३८	१५	उध्योगांत	उद्योगांत
३८	१८	वैळी	वेळीं
३८	१८	पश्चात्य	पाश्चात्य
३९	१९	करघ्याचें	करण्याचें
४०	१२	टॅकऱ्या	टेकड्या
४५	३	अणी	आणि
४७	१०	प्राणी	प्राणीं
४९	२४	कल्पचा	कल्पना

१ ग्रह काय पदार्थ आहे ?

आपण अशी कल्पना करूं की, आकाशांत लक्षावधि मैल पर्यंत पसरलेलें धुकें आहे. हें धुकें थंड वाफेचें नसून अत्यंत उष्ण अशा वायूचें आहे. या मध्यें उष्णता इतकी आहे कीं ती आपल्यास अवगत असलेल्या कोणत्याही यंत्रानें मोजितां यावयाची नाहीं. हें धुकें जो वेग आपल्या कल्पनेच्या बाहेर आहे, अशा अघटित वेगानें वाटोळें गरगर फिरत आहे. अशा प्रकारें फिरत फिरत त्याची उष्णता कमी होत जाते, आणी त्याची मर्यादा सर्व बाजूनीं आंखडत जाऊन तें आपल्या मध्यबिंदूकडे ओढिलें जातें, आणी संकोच पावत असतें. आपणांस आतांपर्यंत गणित शास्त्रांतले जे शोध लागले आहेत, त्यावरून पहिलें तर हें धुकें जसे जसें आंखडत जातें तसे तसें अधिकाधिक वेगानें फिरूं लागतें. या वेगाच्या योगानें त्याची केंद्र-पराङ्मुख होण्याची शक्ति वाढून त्याचा मधून एके जागीं धुकें जमून त्याची बनलेली अशी वाटोळीं कड़ी उत्पन्न होतात, आणी तीं मध्य बिंदू पासून बाहेर निसटतात. अशी अनेक कड़ीं गुरुत्वाकर्षणाच्या नियमानें एकत्र होऊन त्यांचे गोल बनतात. हे गोल अत्यंत उष्ण अशा धुक्याचेच प्रथमतः असतात. असा एकादा मध्यवर्ती प्रचंड गोल असून त्याचामधून निसटलेल्या शाखीं कड्याचा एकेक असे आणखी गोल बनतात,

आणी ते स्वतःच्या अंगच्या म्हणजे केंद्रोन्मुख आकर्षण शक्तीनें आणी मध्यवर्ती प्रचंड गोलाच्या आकर्षणानें त्या मध्यवर्ती गोला भोंवतीं फिरत राहतात. मध्यवर्ती गोल अत्यंत उष्णतेनें केवळ वायु मय बनून सारखे जळत आहेत अशा पदार्थांचा बनलेला असतो. मध्य गोला पासून निघालेले जे अल्पगोळ तेही प्रथमतः अशाच तऱ्हेचे असतात; पण ते लवकर निवत जातात. या लहान गोला मधून आणखी कडीं निघून तीं तशींच त्यांच्या भोंवतीं फिरत राहतात, अथवा त्यांचे गोल बनून ते या लहान गोला भोंवतीं उपग्रह म्हणून फिरतात. मध्यवर्ती मुख्य धूम्रमय गोल किंवा निरंतर पेटणारी प्रचंड भट्टी म्हणजे सूर्य होय. त्या मधून निघूनबनलेले लहान गोल हे ग्रह होत. त्यांतील कित्येकांभोवतीं धूम्रमय कडीं फिरत आहेत;–उदाहरणार्थ शनी. कित्येकां भोंवतीं या कड्यांचेच बनलेला लहान गोल म्हणजे उपग्रह फिरत आहेत. या लहान आणी मध्यम गोलां पैकीं कित्येक अगदी थंड असे मृण्मय गोले बनले आहेत. उदाहरणार्थ आपला चंद्र. कित्येकांचा पोटांत उष्णतेच्या योगानें सर्व पदार्थ धूम्रमय अथवा रसमय आहेत, परंतु बाहेरच्या बाजूला थंड झालेल्या पदार्थांचे कवच धरलें आहे. त्यावर जीवांची वस्तीही झाली आहे. आपली पृथ्वी, मंगळ व कदाचित् शुक्र आणि बुध हे ग्रह अशा प्रकारचे आहेत. कित्येक अद्याप बहुतेक धूम्रमय असून उष्ण आणि प्रकाशमय आहेत. जसे गुरु आणि शनी. शनीचीं कडीं तर केवळ धूम्रमय आहेत. शनीचे व गुरूंचे उपग्रह–निदान त्यापैकीं काहीं तरी–पृथ्वी सारखे निवालेले असतील. ।

———

आकाशाचे कांहीं भाग जसे डोळ्यानीं तसेच दुर्बिणीने ही दिसतात. म्हणजे जणूंकाय तेथें स्वयं प्रकाश मेघाचे तुकडेच आहेत, किंवा तेजो रूप धूलीनें ते भरून गेले आहेत. त्यामध्यें प्रथक् २ तारे मुळींच दिसत नाहींत. अशा आकाशातील ज्योतीप धूमावर्त हे नांव देऊं. कित्येक तारे ही असे आहेत कीं, त्या भोंवती प्रकाश मान धूमांचे मोठेआवरण दिसतें. असातार्यांस धूमावृत्त १ तारे असेंम्हणूं.

धूमावर्तांपैकीं काहींच्या आकृति वर्तुळ किंवा दीर्घवर्तुळ आहेत, व कांहीं वेडया वांकडया आकृतीनी अंतराळांत पसरलेले आहेत. ताऱ्याची मूळ उत्पत्ति धूमावर्तां पासून झाली असावी असा ज्योतिष शास्त्र वेत्त्यांचा तर्क आहे. सर्व तारे एक वेळ धूमावर्तांच्या स्थितींत होते. रंगपट्ट दर्शक यंत्रानें धूमावर्तां कडे पाहिले असतां असे दीसून येतें कीं, ते वायुरूप पदार्थांचे बनलेले आहेत, व त्यांमध्ये हैड्रोजन व नैट्रोजन यांचे विशेष प्राचूर्य आहे. हे वायु तापून स्वयं प्रकाश झालेले आहेत असे या गोष्टींवरून सिद्ध होतें. प्रथम एक धूमावर्त स्वतःभोंवती फिरत आहे असें कल्पिल्यास कालांतरानें तो जसजसा थंड होत जाईल तसतसा त्याचा संकोच होतजाईल, व त्यांच्या मध्यापाशीं विशेष घट्ट व म्हणून विशेष तेजस्वी असा वायु गोल उत्पन्नहोईल. या मध्याकडे इतर सर्व भाग ओढिले जातील, व जों जों त्याचें संकोचन होत जाईल तों तों त्याची सांद्रता वाढेल, व त्याचें तेज अधिक प्रखरहोईल. असें झाल्यानें मध्येएक अतिसांद्र वायुरूप सूर्य व त्या भोंवती तप्त वायूचे आवरण अशी त्या धूमावर्तास स्थिति येईल. म्हणजे त्यापासून धूमावृत तारा उत्पन्न होईल।

या पुढें तो धूमावर्ताच्या मधील तारा व शिल्लक राहिलेला धूमभाग फिरतां २ चपटा व कांठांशीं पातळ असा होईल मधल्या ताऱ्या भोंवतीं त्याचें एक "कडें" बनेल, व तें कडें अधिकच वेगानें फिरूं लागेल. कडया पासून अंशुविक्षेप सुरू असल्यानें ते लवकरच थंड होईल, व त्याचा यदृच्छेनें जो भाग प्रथम अधिक सांद्र होईल त्याभोंवतीं कडयाचे सर्वभाग आकर्षिले जाऊन त्याचा एक गोल बनेल, हा गोल जो पर्यंत वायुरूप असेल तोपर्यंत त्याच्या संकोचानें त्याची उष्णता व तेज हीं वाढतील, व त्याची स्थिती मध्य गोला प्रमाणेंच बहुतेक असेल. या रीतीनें मधल्या सूर्याभोंवतीं हा ग्रह उत्पन्न होईल. तो प्रथम सूर्यसदृशच असेल, व तो मोठा असेल तर त्या पासून याच रीतीनें एक किंवा अधिक उपग्रह उत्पन्न होतील. मधल्या सूर्यभोंवतींही याच रीतीनें एका मागून एक अनेक ग्रह उत्पन्न होतील, व या प्रमाणें सूर्य ग्रहमाला तयार होईल, आपल्या सूर्य मालेची अशा प्रकारें धूमावर्तापसून उत्पत्तीझाली असावी।

तारे किंवा सूर्य व त्याभोंवतालच्या ग्रहोपग्रहमाला यांची या प्रकारें धूमावर्ता पासून उत्पत्ती झाली असावी, असें लाप्लेसनामक जो नामांकित गणिती होऊन गेला त्यानें प्रथम कल्पुन गणितानें या कल्पनेची सुसंभाव्यता दाखवीली. हल्लीं या विषयासंबधानें थोडा अधिक शोध लागला आहे, व मूळ धूमावर्तकसा उत्पन्न होत असावा या विषयीं एक उपपत्ती स्थापित होत चालली आहे. ती अशीः—
" विश्वाचे सर्वभाग आरंभीं द्रव्यखंडांनीं भरलेले असावे. या द्रव्य खंडांचे आकार भिन्न भिन्न असावे, म्हणजे, कांहीं द्रव्यखंडें सुक्षम, कांहीं स्थूल, व कांहीं मध्यम आकाराची असावी. जरी कोणत्याही

एका क्षणीं हीं द्रव्यखंडे स्वस्थानीं स्थिर होतीं असें कल्पिलें, तरी परस्पराच्या गुरुत्वाकर्षणाची क्रिया त्यांवर घडून त्यांमध्यें गति उत्पन्न झालीच पाहिजे. या गतींमूळें जवळ जवळचीं द्रव्यखंड परस्पराकडे आकर्षिलीं जाऊन त्यांचे मोठे समूह बनतील, व भिन्न समूह एकमेकांकडे आकर्षिले जाऊन त्यांचे ओघ दिगंतरांत वाहूं लागतील. या कारणानें आरंभा पासून विश्वाच्या सर्व भागांत द्रव्य खंडांच्या समूहांचे लहान मोठे प्रवाह सदोदित वाहत राहिले असावे कोणत्याही एका समूहांतील द्रव्यखंडें परस्परांवर आघात पावून त्या योगें उष्णता उत्पन्न होत असावी. या उष्णतेमुळें कांहीं द्रव्यखंडें वायूरूप होत असावीं, कांहींचे आंतील भाग द्रवरूप राहून त्यांभोंवतीं वायुरूप वेष्टन उत्पन्न होत असावें, व या कारणानें द्रव्यखंडांच्या समूहास उष्णते मुळें स्वयंप्रकाशत्व प्राप्त होत असावें. जेव्हां एका समूहाच्या ओघ दुसऱ्याच्या ओघाशीं आघात पावेल, तेव्हां तर त्या आघातापासून फारच तीव्र उष्णता उत्पन्न होईल व विश्वाच्या एका प्रदेशांतील सर्व समूह एकमेकांवर आपटून एक वट झाल्यास उत्पन्न झालेल्या उष्णतेनें त्यांच्या सर्व द्रव्यांस वायू रूपता येईल. या प्रकारें एक मोठा धूमावर्त उत्पन्न होईल याप्रमाणें अंतरालाच्या भिन्न प्रदेशांत द्रव्यखंडाच्या प्रचंड ओघां पासून आरंभी अनंत धूमावर्त उत्पन्न झाले असावे, व त्यापासून पुढें तारे उत्पन्न झाले असावे. अद्यापिही अनेक धूमावर्त नवे उत्पन्न होत असतील, व जे अति विस्तृत धूमावर्त हल्लीं आहेत त्यांपासून ताऱ्यांची उत्पत्ति चालूच असेल. तसेंच द्रव्यखंडाचे अनेक विशाल

ओघ अद्यापि स्वतंत्रपणे ठिकठिकाणीं मोठ्या वेगानें वहात असतील, व कित्येक ठिकाणीं दूरदूरची अवशिष्ट द्रव्यखंडे एकमेकांकडे वळून त्यांचे नवीन समूहही उत्पन्न होत असतील. ज्यांस आपण धूमकेतु अशी संज्ञा देतों ते या प्रकारचे ओघाळ्यानें वाहणारे द्रव्य खंडांचे समूहच आहेत, असें अनेक प्रमाणावरून सिद्ध होतें. कित्येक प्रसंगीं आकाशांत अकस्मात् एकादा नवा स्वयंप्रकाश तारा कांहीं दिवस दीसतो. अशा ताऱ्याची एका एकीं उत्पत्ति होण्याचें कारण असें दिसतें कीं, समोरासमोरून येणाऱ्या दोन द्रव्य खंड समूहांच्या वेगवान् प्रवाहांची एकाएकीं टक्कर होत असावी, व तीज मुळें प्रखर उष्णता उत्पन्न होऊन त्यांचीं द्रव्यें स्वयं प्रकाश वायुरूप होत असावीं.,,

या प्रमाणें द्रव्यखंडापासून धूमावर्त, धूमावर्तापासून धूमावृत्त तारे, त्यां पासून सूर्य व ग्रहमाला, अशी क्रमेंकरून उत्पत्ति होत असावी असें पुष्कळ प्रसीद्ध ज्योतिःशास्त्रवेत्त्यांचें मत आहे, व तें हल्लीं सर्वत्र ग्राह्य होत चाललें आहे ।

हे जे फेरफार घडत आहेत, ते फार सावकाश घडून येतात. असे प्रकार रोजचेरोज आढळुन येत नाहींत. कित्येक धूमकेतु नवे झाले आणि कित्येक कोठें नाहींसे झाले असें आढळून आलें आहे. कित्येक तारेही नष्ट झाले आणि कित्येक पहिले नसतांना नवे दिसूं लागले, असें ही दिसतें. त्याच प्रमाणें कित्येक ताऱ्यांचे रंग फिरले, कित्येकांचें तेज कमी झालें, आणि कित्येकांचें तेज वाढलें असेंही दिसून आलें आहे. कित्येक ताऱ्यांचें तेज कांहीं दिवस नियमित पणें वाढत जातें आणि कुगतें तसेंच कमी होत जातें असेंही आ-

हळतें. परंतु प्रथमतः उष्ण धुकें दिसत असून मग त्याच्या पासून निरानिराळे गोल बनत जाणें, म्हणजे एकादी नवीनच सूर्यमाला बनणें हें मानवी जातीच्या एकंदर आयुष्यांत ही दिसून येणें अशक्य आहे. कारण ही घडामोड हळूहळू कोटयावधी वर्षें चालू असते.

दुसरें असें आहे कीं, तारे हे एकमेकांपासून प्रचंड अंतरावर असतात. यामुळें एका ताऱ्याच्या प्रदेशांत कांहीं प्रचंड घडामोड जरी होत असली तरी ती दुसऱ्या ताऱ्याच्या प्रदेशांत दिसण्याचा संभव नाहीं. प्रत्येक ताऱ्याचे सभोंवतीं ग्रहमाला खास असली पाहिजे; पण ती आपण कल्पनेनेंच जाणावयाची आहे. अद्याप एकाही अन्य सूर्याचा ग्रह आपल्यास दृश्यझालेला नाहीं. न जाणों, कदाचित् हल्लीं पेक्षां अत्यंत जास्त शक्तीच्या अशा दुर्बिणी आणी इतर यंत्रें निघून या गोष्टीही आपल्यास दृश्यमान होतील !

आकाशा मध्यें लहान मोठे असे सतेज धूम्रप्रदेश अनेक आहेत. त्यांस इंग्रेजीमध्यें "नेब्यूला" असें म्हणतात त्यांस देशी भाषेंत नीहारिका असें नांव सुचविलें आहे. मृग नक्षत्रा मध्यें अशी एक मोठी नीहारिका आहे. आकाशगंगे मध्यें तर असल्या नीहारिका पुष्कळच आहेत. प्रथमतः अशी कल्पना केली होती कीं, ह्या नीहारिका म्हणजे फार जवळ जवळ असलेल्या किंवा दिसणाऱ्या ताऱ्यांचे समुदाय होत. डोळ्यांनीं तसें दिसतें खरें आणि कांहीं नीहारिका तशा आहत ही. साधारण शक्तिच्या दुर्बिणीतून पाहिलें असतां या नीहारिका म्हणजे जवळ जवळ थाटलेले असंख्य तारे असावे असा भास होतो; परंतु मोठया शक्तीच्या दुर्बिणीतून अवलोकन केल्यानें आणि दुसऱ्या नवीन यांत्रिक शोधांनीं पाहिल्या

मे आता अंतरिक्ष आलें आहे कीं, आपल्यास दृश्यमान असणा-या बऱ्याच नीहारिका केवळ धूम्रमय आणि तेजोमय पदार्थसंचय आहेत. प्रथमतः या संबंधानें ज्योतिषांनीं केवल कल्पनाच केल्या होत्या. या कल्पना जरी बऱ्याच अंशीं खऱ्या अशा भासत होत्या तरी त्यांचा उलगडा नुसती दुर्बीण जरी कितीही मोठ्या शक्तीची असली तरि तिच्यावरून स्पष्टपणें होणें अशक्य आहे. यामुळे शनीच्या कड्यांचें प्रत्यक्ष प्रमाण जरी ज्योतिषांच्या पुढे होतें तरी तारे, सूर्य आणि त्यांच्या ग्रहमाला हें काय आहे आणि हें प्रचंड गारुड बनलें कसें, याची खरी कल्पना करण्याचें धाडस कोणी केलें नव्हतें. परंतु आतां शोधांची, कल्पनांची. यंत्रांची. आणि नाना युक्तींची मर्यादा फार वाढली आहे. "स्पेक्ट्रोस्कोप" म्हणजे पदार्थांपासून पडलेल्या प्रकाशांतील रंगावरून पदार्थ ओळखण्याचें यंत्र आणि फोटोग्राफी यांच्या साह्यानें अनेक नवीन शोध लागले आहेत. आणि तारे कसे बनले असावे, या संबंधाच्या शोधास या दोन पद्धतींचें मोठेंच साह्य झालें आहे. या नवीन शोधाचें सर्व श्रेय सर बुईलियम हयुजिनस आणि त्यांची उद्योगी पत्नी यांकडे आहे. या दोघांनीं या संबंधाचे सर्व शोध केले आहेत.

आकाशांतील धूम्रमय उष्ण वायुसंचय किंवा नीहारिका यांतून प्रथमतः कडीं किंवा वलयें झालीं, आणि तसलीं शेकडों वलयें एकत्र होऊन त्यांचे गोल बनले या म्हणण्यास आधार काय? असा प्रश्न उत्पन्न होईल तर याचें उत्तर स्पेक्ट्रोस्कोप या यंत्राच्या साह्यानें केलेल्या शोधांवरून मिळेल. जळणाऱ्या पदार्थांच्या ज्वा

ळेच्या रंगावरून तो पदार्थअमुक असावा असे ठरवितां येतें. तेव्हां स्पेक्ट्रास्कोप या यंत्राच्या साह्यानें सूर्यावर, कोणत्याही ताऱ्यावर अथवा धूमकेतूच्या शरीरांत जळणारे पदार्थ कोणते आहेत हें सांगतां येतें, त्याच प्रमाणे त्यायंत्राच्या साह्यानें एकादि नीहारिका म्हणजे धूम्रसंचय यांत जळगारे पदार्थ कोणतें आहेत आणि त्यांतून उत्पन्न झालेल्या वलयांमध्यें पदार्थ कोणतें आहेत हें ही सांगता येतें. यायंत्रानें केलेल्या शोधांवरून असे दिसून आलें आहे किं, या सर्वांमध्ये जे पदार्थ जळत आहेत ते अगदीं एकच आहेत. तेव्हा यावरून या सर्वांचें मूळस्वरूप एकच असून तारा, सूर्य, धूमकेतु, नीहारिका, धूम्रवलय, आणि त्यांपासून त्यांचीं अंगे निघून बनलेले ग्रह आणि उपग्रह या सर्वांचे घटकावयव एक सारखेच आहेत, अर्थात त्यांची घटना सर्वांशीं सारखीच आहे असें ज्योतिःशास्त्र वेत्त्यांनीं सिद्ध केलें आहे.

या गोष्टींचा शोध करणारांनीं आकाशांतीलठळक नीहारिका जी मृगनक्षत्रामध्यें आहे तिचें श्रमपूर्वक आणि मोठ्या काळजीनें निरीक्षण केले आहें. या धूमावर्तांनी मध्यें एक फार चकचकीत ठिकाण दिसतें, तें उत्तम दुर्बिणींतून पहिलें असतां तेथें चार मोठाले ठळक तारे आहेत असें दिसून येतें. हा प्रत्येक तारा आपल्या सूर्याएवढा तरी खास आहे. या प्रत्येक ताऱ्याबरोबर एकेक ग्रहमाला असलीच पाहिजे. मागें सांगितल्याप्रमाणे या मूळच्या धूमावर्तांचा कांहीं भाग एकत्र होऊन त्याचे हे चार तारे आणी त्यांचे सर्व लटांबळ बनले आहे यांत शंका नाहीं. याचें कारण हे

तारे आणि त्यांच्या भोंवतीं असणारे धुकें यांत जळणारे वायू अगदा एकाच प्रकारचे आहेत शिवाय असें दिसून आलें आहे कीं, या प्रत्येक ताऱ्याभोंवतीं बऱ्याच अंतरापर्यंत नीहारिका किंवा धूम्राभ्र अगदीं नाहींसे झालें आहे, आणि त्या ठिकाणीं अगदी काळेंभोर आभाळ दिसतें. यावरून या भागांतले धूम्राभ्र एकत्र जुळून त्याचे हे तारे बनले आहेत. हे तारे ज्या जळणाऱ्या पदार्थांचे झाले आहेत ते आणि भोंवतालच्या धूम्राभ्रप्रदेशांतील जळणारे पदार्थ हें अगदी एकच आहेत असें स्पष्ट कळून आल्यावर हे तारे त्यातूनच बनले या बद्दल मुळींच शंका राहत नाहीं. ।

जळणारा धूर एकत्र होऊन जेव्हां एकादा तारा बनत असतो तेव्हां त्याचें उष्णतामान फार वाढतें; आणि त्यामुळें त्या ताऱ्याच्या रंगांत आणि त्याचें स्पेक्ट्रास्कोप मधून जें स्वरूप दिसतें त्यामध्यें फरक होतात. तापून लाल झालेला एकादा लोखंडाचा तुकडा घेतला तर त्यापेक्षां तापून पांढरा झालेला तुकडा उष्णता मानांत जास्त असतो. हा उष्णतेच्या फरक तापत असलेल्या लोखंडाचें स्वरूप पाहून लोहारास बारीक रीतीनें सांगता येतो. अशाच तऱ्हेनें ज्योतिष्यांना ताऱ्यांचा रंग आणी त्यांच्यावर केलेले स्पेक्ट्रास्कोप मधून पाहण्याचे प्रयोग यांच्या साह्यानें एकादा तारा नुकताच बनत आहे, बनून पूर्ण झाला आहे अथवा निवत चालला आहे, अशा रीतिनें ताऱ्याचें वय ठरविता येतें.

ताऱ्याची अंगची उष्णता अत्यंत जास्त केव्हां असते, या संबंधानें ज्योतिःशास्त्र वेत्त्यांमध्यें अद्यापि एकवाक्यता नाहीं. तथापि इतकी गोष्ट ठरलेली आहे कीं, ताऱ्यामधील पदार्थ ज्या

वेळीं झपाट्यानें संकुचित होण्याच्या स्थितींत असतात तेव्हां त्यांच्या अंगीं उष्णता अत्यंत असते. सूर्य हा सांप्रत अत्यंत उष्णता मानाच्या स्थितींत आहे. परंतु या वरून कोणीं असें समजूं नयें कीं, ही स्थिति नुकतीच प्राप्त झाली आहे आणि तिचा काल लवकरच संपेल. ही गोष्ट होण्यास फार कालावधी लागतो. सूर्य या स्तितीला आल्यास कित्येक लाख—किंवा कोटी—वर्षें ही झालीं असतील; आणी यापुढें तशींच कित्येक कोटी वर्षें जातील. या साठीं सूर्याची उष्णता आतां कमी होऊं लागेल, आणि मग आपलें काय होईल, ही काळजी करण्याचें आपणांस कारण नाहीं ! कारण सूर्य जरी निवत असला, तरी ती गोष्ट अत्यंत सावकाश पणें आणि फार कालांतरानें होणारी असल्यामुळें ती आपल्यास कळणार नाहीं. शिवाय त्या बरोबर आपल्या परिस्थितींत ही फरक पडत जाणाराच. या मुळें सूर्य जस जसा निवत जाईल त्या मानानें पृथ्वी आणि इतर ग्रह यां वरील प्राणिमात्रही कमी उष्णतेंत राहण्यास योग्य असे बनत जाणार नाहींत कशा वरून!।

असें एक सूक्ष्म यंत्र निघालें आहे कीं, त्यावरून एकाद्या पदार्थमधून किती उष्णता बाहेर पडते हें मोजितां येतें. या यंत्रानें एकाद्या माणसा पासून अर्ध्या मैलाच्या अंतरावर त्याच्या अंगातून किती उष्णता जातें हें ही सांगतां येतें! या यंत्राच्या साह्यानें अभिजित नक्षत्र आणि स्वातीचा तारा यांचें उष्णतामान ज्योतिष्यांनीं मोजिलें आहे.यादोहोंपैकीं अभिजित तारा आपल्यासजवळ आहे. जवळ म्हणजे किती, तर आपण पृथ्वीवरून तासास साठ मैल चालणारी आगगाडी सोडिली, तर तिला अभिजित नक्षत्रावर

पोहोंचण्यास तीन महापद्म वर्षे लागतील ! स्वाती नक्षत्र याहून सहापट दूर आहे एकादी मेणवत्ती आपल्या पासून सहा मैलांच्या अंतरावर असली तर तिच्यापासून जितका प्रकाश मिळेल तितका प्रकाश आपल्यास स्वातीच्या ताऱ्या पासून मिळतो. तथापि आपल्यास स्वाती नक्षत्रापासून जो प्रकाश मिळतो त्यापेक्षां अभिजित नक्षत्रापासून फार कमी मिळतो. याचें कारण स्वातीचा तारा पूर्ण बनला आहे; अभिजित तारा अद्याप पूर्ण बनला नाहीं. अभिजित याचें उष्णतामान मात्र स्वातीच्या ताऱ्याच्या उष्णतामानाहून जास्त आहे. अभिजित तारा अद्याप बालवयांत आहे. आपला सूर्य तारुण्याच्या पूर्ण भरांत आहे. स्वाती नक्षत्राच्या उतारवयास आरंभ झाला आहे.!

ताऱ्याचें उष्णतामान कमी होऊन तो जसजसा निवत जातो तसतसें त्याच्यांतील वायुरूप पदार्थांचें वर्चस्व कमी होऊन धातुरूप पदार्थ जास्त स्पष्ट भासूं लागतात. प्रथमतः कारबन दिसावयास लागतो. अर्थात् निखारा विझून गेल्यावर जसा कोळसा बनतो, तद्वत स्थिति होते. अशा रीतिनें प्रत्येक तारा निवत चालला आहे पण हें निवण्याचें मान इतकें सूक्ष्म आहे कीं, एकादा तारा अगदीं निवून जाण्यास कोट्यानकोटी वर्षे लागतात. शिवाय अशा निवणाऱ्या ताऱ्याची शक्तीही कमी होते; यामुळे तो दुसऱ्या एकाद्या पूर्ण तारुण्यांत असलेल्या ताऱ्याच्या सपाट्यांत सांपडून पुन्हा त्याच्या भट्टींत जाऊन पडत नसेल कशावरून? मिळून हें सृष्टीचक्र एकसारखें अनंत काळ चालत रहावयाचें! ताऱ्यातून म्हणजे मूळच्या सूर्यांतून एकादा लहानसा तुकडा उडाला तरतो निवत जाऊन

याचा ग्रह बनतो. चंद्र ही एकाद्या ताऱ्याची किंवा त्यापासून सु-टलेल्या कणाची होणारी अगदी अंतिमस्थिति आहे. चंद्र अगदी थंडगार आहे. त्यावर हवा पाणी यांतलें कांहीएक स्वाभाविक स्थि तींत नाहीं. तो केवल प्रेतवत् झाला आहे. ।

धूमावर्त हें आकाशस्थ ज्योतींचे पूर्वरूप आहे; या बद्दल इंग्लडांतील लॉकियर नामक ज्योतिषाचें मत असें आहे--धूमावर्त, तारा, ग्रह, धूमकेतु, अशनि ह्यांची घटना मुख्यतः एकाच द्रव्यानें झाली आहे. आरंभीं आकाशांत एका प्रकारच्या जड द्रव्याचे अति सूक्ष्म परमाणू पसरले होते. त्यांपासून पुढें हायड्रोजन हा अथवा हायड्रोजनसारखा उग्र.था वर्णलेख निघतो असा वायू उत्पन्न झाला. ह्यांतलें पहिले तत्व धूमावर्तामध्यें आणि सूर्याच्या अत्युष्ण भागामध्यें हायड्रोजनेशीं युक्त झालेलें वर्णलेखावरू आढळतें. पृथ्वी वरील द्रव्यास अतिभ य उष्णता लावून पाहिली असतांही तें उत्पन्न होत नाहीं. असो, या दोन तत्वां पासून सूक्ष्म रजःकण उत्पन्न झाले. त्यांत मॅग्निशिअम्, कार्बान, आक्सिजन, लोखंड, सिलिकान, गंधक हीं तत्वें उत्पन्न झालीं. हे रजःकण सांप्रतही आकाशांत थोडथोडके नाहींत. सुमारें दोन कोटि अशनि आकाशांतून पृथ्वीवर पडतात. त्याचें चूर्ण करून व तें अतितप्त करून त्यांचा वर्ण लेख घेतला असतां त्यांत हाइ-ड्रोजन आणि वर लिहिलेलीं तत्वें आढळून येतात. आकाशांत हे जे रजःकण उत्पन्न झाले त्यांस आपण अशनि परमाणू म्हणू. ते सारख्याच आकाराचे आहेत असें नाहीं. त्यांत आकर्षण गति असल्यामुळें त्यांचे निरनिराळे समुदाय बनून त्यांच्या अंगीं अध

भ्रमणगति उत्पन्न होते. या रजःकणसमुदायाचें आकुंचन सु- होउन त्यामुळें, आणि निरनिराळ्या समुदायांचें मेलन होताना त परस्परांवर आदळल्यामुळें त्यांत उष्णता उत्पन्न होऊन तिचें घनीभवन सुरूं होतें. अशा रजःकण समुदायांचे धूमावर्त बनले आहेत. आणि पुढें त्यांचा तारा बनतात. काहीं तारांच्या वर्ण लेखांवरून दिसून आलें आहे कीं, त्यांचे घटक अशनि परमाणु ३०।४० मैल अंतरावर आहेत. या वरून धूमावर्तां पासून तारा बनतात या म्हणण्यास बळकटी येते. कांहीं तारांचे वर्ण लेख धूमावर्तांप्रमाणें असतात. या वरून त्या तारा धूमावर्तांपासून बनून फार काळ लागला नाहीं असें दिसतें, धूमावर्त, धूमकेतु आणि व अशनिकण यांच्या वर्णलेखांमध्यें अतिशय सादृश्य असतें. सारांश एका अतिसूक्ष्म तत्वा पासून हायड्रोजन, त्यापासून अशनि परमाणु, त्यापासून धूमावर्त, आणि त्या पासून तारा व ग्रह उत्पन्न झाले आहेत. अत्युष्ण वायुरूपस्थितींत असलल्या गोलांचे घनी भवन होऊन पाणी व जमीन वगैरे होतात. निरनिराळीं तत्वें हीं हायड्रोजनचीं रूपांतरें आहेत किंवा त्यांचे सर्वांचे मूळ एक तत्वआहे.

रात्रीं आकाशाकडे पाहिलें असतां तारा तुटता तशा वाटतात त्यांस उल्का म्हणतात. अशाच प्रकारच्या मोठ्या उल्कांनीं कधीं कधीं पृथ्वीवर दगडांचीं वृष्टि होते ह्या दगडांस अशनी म्हणतात. आपल्यास आकाशस्थ गोलांच्या द्रव्याचें प्रत्यक्ष ज्ञान होण्याचे साधन काय ते हे अशनी होत. बाकी त्या संबधें आपलें सर्व ज्ञान अप्रत्यक्ष आहे म्हणून हे अशनि फार महत्वाचे होत. ह्याकरितां त्यांचा संग्रह करून त्यांची परीक्षा करण्याचे प्रयत्न सांप्रत कांहीं

चालू आहेत. अशनींचें रसायन पृथक्करण केल्यावरून असें दिसून आलें आहे कीं, त्यांत जरी पृथ्वीवरील तत्त्वांहून निराळीं तत्त्वें नसतात, तरी त्यांचे संयोग पृथ्वीवर आढळत नाहींत असे असतात. हिंदुस्तान, युरोप, अमेरिका अशा निरनिराळ्या स्थळीं पडलेल्या अशनींचीं द्रव्यें बहुधा एक सारखीं असतात. त्यांत १०० भागांत ४० भाग सिलिका, ३५ भाग घनवर्धनीय लोखंड, ६ पासून ८ भाग निकेल आणि थोडेंसे अशोधित लोखंड असतें व दुसरीं सात तत्त्वें निरनिराळ्या मानानीं असतात. ।

वर लिहिलेल्या वर्णनावरून ग्रह कसे झाले, कशाचे झाले व ग्रह काय पदार्थ आहे याची कल्पना होईल. असो, तर ही ग्रहादिकांची उत्पत्तिपरंपरा वेदादिकांतल्या जगदुत्पत्तिसरणीशीं मिळते. आकाशापासून वायु, वायूपासून अग्नि (तेज), अग्नी पासून उदकें, आणि त्यांपासून पृथ्वी अशी उत्पत्ति वेदादिकांत आहे. ।

ग्रह म्हणजे काय? ग्रह धातूचा अर्थ " घेणें " असा आहे. या वरून जे सूर्यापासून प्रकाश घेतात, ते ग्रह असें उघड ठरतें. म्हणून मङ्गळ, बुध, गुरु, शुक्र व शनि, त्याचप्रमाणें आपली पृथ्वी व तिच्या भोंवतालीं फिरणारा चंद्र हे सर्व ग्रह आहेत; या सर्वांस सूर्यापासून प्रकाश मिळतो म्हणून ते दृष्टिगोचर होतात. फल ज्योतिषांत सूर्य, राहु व केतु यांस ही ग्रह म्हणतात. यांत सूर्य स्वयंप्रकाश गोल आहे व राहु, केतु हे चन्द्राचा पृथ्वीभोंवतीं फिरण्याचा मार्ग व पृथ्वीचा सूर्याभोंवतीं फिरण्याचा मार्ग हे दोन्ही मार्ग एकमेकांस दोन टिकाणीं ज्या बिंदुंत मिळतात, ते दोन अदृश्य व काल्पनीक बिंदु आहेत: पूर्वींचे जे फल ग्रंथ आहेत त्यांत

राहु व केतु यांचा फल ज्योतिषांत स्वीकार केलेला नाहीं. उदाहरणार्थ बृहजातक पहा. ।

२ ग्रहांचीं नांवें, स्वभाव, गुण, निरनिराळ्या राशींचें स्वामित्व इ०ची कल्पना कोणत्या आधारावर केली?

आकाशस्थ ग्रहांस जीं नांवें दिलीं आहेत, तीं उगीच कांहीं तरी दिलीं नसून त्यांच्या गुणांवरून रूपावरुन वगैरे दिललीं असलीं पाहिजेतअसें वाटतें. अमुक गृहस्थानें अमुक ग्रहाचा शोध लाविला म्हणून त्याचें नांव त्या ग्रहास द्या. असा प्रकार पूर्वी झाला नसावा. कारण ग्रहांचीं हल्लींचीं जीं नांवें आपणांस माहित आहेत त्यांना कांहिं तरी अर्थ आहे, व त्या नांवाचा जो अर्थ होतो तशा प्रकारचा गुण त्या ग्रहाच्या अंगी आहे, असें प्रत्ययास येते. पुढे ग्रहांचीं काहीं नांवें पडण्याचीं कारणें दिलीं आहेत त्यांवरून बाकीचीं नांवें देखील कां पडलीं असावी याबद्दल तर्क करण्यास वाचकांस सोपें पडेल. सूर्यास खग, तपन दिनकृत वगैरे बरीच नांवें आहेत-

सूर्य रोज सकाळीं उगवतो व सायंकाळीं मावळतो. तो जरी स्थिर आहे तरी पृथ्वीच्या दैनंदिनगतीमुळे आकाशांतुन चालतोसा दिसतो. ख म्हणजे आकाश व ग म्हणजे गमन करणारा यावरून त्यास खग असें नांव पडलें असावें.

सूर्याच्या अंगच्या उष्णता देण्याच्या गुणा मुळें त्यास उष्ण हें नांव पडलें असावें.

सूर्य उगवला असतां चोंहोंकडे प्रकाश पडून दिवस होतो म्हणून त्यास दिनकृत हें नांव पडले असावें.

चंद्रास सोम, शीतद्युति, उडुपति, रजनीवल्लभ वगैरे वरीच नांवें आहेत.

सोम शब्दचा अर्थ अमृत असा आहे. आकाशांत दिसणाऱ्या सर्व तेजस्वी पदार्थांत चंद्राइतका रमणीय दुसरा पदार्थ नाहीं त्या तूनही उष्ण कटिबंधांतील लोकांस सूर्याचा दुःसह ताप दिवसभर अनुभविल्यावर चंद्राच्या सौम्य प्रकाशानें जो अल्हाद होतो, तो वर्णन करितां येत नाहीं. भारतवर्षांतील कवींनीं चंद्राचें अनुपम सौंदर्य वर्णन करण्यांत आपलें सर्व वाक्चातुर्य खर्च केलें आहे. चंद्रलोकीं अमृत आहे, अशी कल्पना आहे. त्याचा अर्थ इतकाच कीं, अमृत हें जसें आनंददायक मानितात तसें चंद्रबिंबही आनंददायक आहे; म्हणुन त्यास सोम असं नांव पडले असावें. उडुपति या शब्दाचा अर्थ नक्षत्रांचा राजा असा आहे. उडु म्हणजे नक्षत्रें व पति म्हणजे राजा किंवा मालक निरभ्र रात्रीं आकाशांतील पूर्ण प्रकाशलेल्या चंद्राकडे पाहिल्यास तो नक्षत्रांचा राजा किंवा मालक आहे अशी कोणाची कल्पना होणार नाहीं? अवश्य झालीच पाहिजे. व त्या वरुनच त्यास उडुपति हें नांव पडलें असावें.

शीत द्युति हें नांव चंद्रप्रकाशाच्या शीतलतेमुळें पडलें असावें चंद्र हा रात्रीस प्रकाश देणारा व शोभा देणारा आहे, म्हणुन

रजनी रूपी स्त्रीचा तो पतीच आहे; अशा कल्पनेनें त्यास रजनी वल्लभ हें नांव पडलें असावें.

मंगळास अंगारक, रुधिर, अग्नि, क्रूरनेत्र, भौम वगैरे वरींच नांवें आहेत.

मंगळाचा रंग तांबडा दिसतो म्हणून तो रजनीरूपी स्त्रीनें सौभाग्यसूचक मंगळ तिलकच लाविला आहे कीं काय! अशा कल्पनेनें त्यास मंगळ हें नांव पडलें असावें.

अंगारक, रुधिर, अग्नि हीं नांवें त्याच्या तांबूस वर्णावरून त्यास दिलीं गेलीं असावीं.

फल ज्योतिषशास्त्रांत मंगळ हा क्रूर ग्रह मानिला आहे, तें त्याच्या रक्ततेस अनुसरून आहे. प्राचीन पाश्चात्य लोकांनीं तर ह्याला युद्धाची देवता अशा अर्थाचें "मार्स" हें नांव दिलें आहे, व याच त्याच्या स्थितीवरून त्यास क्रूर नेत्र हें नांव पडलें असावें.

मंगळावर पृथ्वीप्रमाणें जमीन, पाणी, हवा मेघ, पर्जन्य वगैरे अनेक गोष्टी आहेत. मंगळाचें व पृथ्वीचें बरेंच साम्य आहे मंगळावर प्राण्यांची वस्ती असावी अशी हल्लींच्या मोठ मोठ्या ज्योतिषशास्त्रज्ञ लोकांची कल्पना आहे. मंगळ पृथ्वीपेक्षां लहान आहे, व मंगळांत आणी पृथ्वींत बरेंच साम्यही आहे, म्हणून त्यास भौम म्हणजे पृथ्वीपुत्र हें नांव पडले असावें.

बुधास सौम्य, इंदुपुत्र, रोहिणेय वगैरे वरींच नांवें आहेत. बुध हा शब्द संस्कृत बुध् [जाणणें]या धातू पासून झाला आहे बुध शब्दाचा अर्थ विद्वान शहाणा असा आहे. यास बुध म्हणण्याचें कारण त्याचें सूर्याशीं सान्निध्य हें असावें, सूर्य ग्रहमालेचा

राजा आहे तेव्हां त्याचे जवळ सदोदित राहून सृष्टिनियमाला मदत करण्याचें काम म्हणजे कौन्सिलराचें काम करण्यासारखेंच होय

सौम्य व इंदुपुत्र याशब्दांचा अर्थ एकच आहे. चंद्राचा पुत्र ज्याअर्थी बुधांस मानिला आहे त्या अर्थी बुधांत व चंद्रात बरेंच साम्य असलें पाहिजे. आतां त्यादोहोंत काय साम्य आहे ते पाहूं अलीकडील शोधांवरुन असें समजलें आहेकीं, चंद्रावर जसें वातावरण नाहीं तसे बुधावरही नाहीं चंद्रास जशा कलाहोतात तशा बुधालाहीं होतात चंद्रावर जसे मोठ मोठाले पर्वत आहेत तसें बुधावरही आहेत.

चंद्र आकाशांतून चालत असतां कांहीं नक्षत्रांचें कधीं कधीं आच्छादन करितो; या आच्छादनास पिधान म्हणतात. बुधाला रोहिणेय असें एक नांव आहे, या गोष्टीचें मुळ या पिधानांत आहे बुध आणि रोहिणी यांचे एका काळीं पिधान झाले असतां त्यावेळीं चंद्रबिंबातून बुध बाहेर पडला असें पाहून रोहिणी चंद्र समागमापासून बुध हा पुत्र झाला अशा कल्पनेनें त्यास रोहिणेय हें नांव पडलें असावें. गूरूपत्नी तारा हिचें हरण चंद्रानें केलें आणि तिला बुध हा पुत्त झाला. या कथेंतली तारा म्हणजे वस्तुत: रोहिणी नामक जी तारा ती होय.

गुरूचा आकार पृथ्वीहून सुमारें १३०० पट मोठा आहे. त्याचा व्यास पृथ्वीच्या व्यासापेक्षां सुमारें ११ पटीनें मोठा आहे. जर तो आपणांपासून चंद्राइतक्यांच अंतरावर असता तर तो पृथ्वीवरून सहस्रपूर्णचंद्राइतका मोठा दिसला असता. एकंदरींत सूर्य खेरीज करून इतर सर्व ग्रहांपेक्षां गुरु फार मोठा आहे. म-

पूर्वच त्यास गुरु म्हणजे मोठा हें नांव पडलें असावें; व तें त्यास शोभतें ही.

रात्रीं प्रकाशणाऱ्या सर्व आकाशस्थ ज्योतींमध्यें शुक्राइतका तेजस्वी व सुन्दर दुसरा क्वचित् सांपडणार नाहीं. पाश्चात्य लोकांत शुक्राला " सौंदर्याची देवता " अथवा " प्रीतीची देवत " अशा अर्थाचें " वीनस " असें नांव आहे, तें यथार्थ आहे.

संस्कृत भाषेंत तेजाला शुक्र असें एक नांव आहे. यावरून यास शुक्र असें नांव पडलें असावें.

शुक्रास दैत्यगुरु असेंही म्हणतात. अनीतीनें दुसऱ्याचा नाश करणाऱ्या दैत्यांस निशाचर म्हणतात. चोर निशाचरच आहेत कारण ते बहुतेक रात्रींच लोक बेसावध असतां चोऱ्या करितात. शुक्र हा सूर्यापासुन परम अंतरावर असतो तेव्हां रात्रीं १० वाजतां मावळतो. साधारणपणें १० वाजेपर्यंत लोकजागृत असतात. हा मावळतो म्हणजे चोरांस एक प्रकारें सुचनाच देतो कीं, आता तुम्ही आपल्या उद्योगास लागा, कारण आतां बहुतेक लोक निजले. शुक्र पहाटेस क्षितिजावर दिसूं लागतो तेव्हां तो चोरास जणुं सूचनाच देतो कीं, आतां आपले काम आटोपा, कारण लोक जागे होतील. यावरुन त्यास दैत्यगुरु हें नांव पडले असावें.

शनीस मंद, आर्कि, सूर्यपुत्र वगैरे बरींच नांवे आहेत. शनी व मंद या दोन्ही शब्दांचा अर्थ एकच आहे. आकाशांतील त्याच्या मंद गतीवरून त्यास हीं नांवें दिलीं गेलीं असावी. त्यास सूर्याभोंवती एक प्रदक्षिणा करण्यास २९०४६ वर्षें लागतात.

आर्कि व सूर्य पुत्र या दोन्ही शब्दांच्या अर्थ एकच आहे.

शनीला ज्या अर्थी सूर्याचा पुत्र मानिला आहे, त्या अर्थी सूर्यांत व शनींत कांहीं तरी साम्य असलेंच पाहिजे. सूर्यमालेंत सूर्य खेरीज करून एकंदर आठ ग्रह आहेत. त्याच प्रमाणे शनीलाही आठ उपग्रह असून ते त्याच्या भोंवती प्रदक्षिणा करितात. यावरून त्यास सूर्यपुत्र हें नांव पडलें असावें.

राहूस सर्प फणि वगैरे दरींच नांवें आहेत.

सर्पास अगदीं सरळ चालतां येत नाहीं त्याप्रमाणे याचीही गति इतर ग्रहा प्रमाणें नसून उलट आहे, म्हणून त्यास सर्प फणि हीं नांवें पडलीं असावीं.

केतूस ध्वज, शिखी अशीं नांवें आहेत.

वरील नांवांवरून पाहतां त्याचा आकार आपणास धूमकेतु प्रमाणे आकाशांत दिसला पाहिजे, परंतु तो मुळींच दिसत नाहीं; कारण राहु, केतु हे ग्रह नसून काल्पनिक बिंदु आहेत. बहुतक धूमकेतु च्या आकारावरूनच त्यास ध्वज शिखी अशीं नांवें पडलीं असावीं

ग्रहांचे गुण, स्वभाव व स्वरूप.

रवि—सत्वगुणी, पराक्रमी, बांधेसूद, काळसर तांबूस पित्तप्रकृति आहे.

दया, क्षमा, शांति, खरेपणा इत्यादि गुणांचा दर्शक जो गुण त्यास सत्वगुण म्हणतात. " मनुष्यांचा व ग्रहांचा संबंध काय? आणि ते मनुष्यावर काय म्हणून अंमल चालवितात ? " या प्रश्नाचे उत्तरांत सूर्यापासून मनुष्यांस कोणकोणत्या प्रकारचे फायदे होतात व सूर्य नसल्यास किती नुकसान होईल, याचें वर्णन केलें आहे. त्यावरून सूर्याचे अंगीं दया, परोपकार वगैरे अनेक सद्गुण

असल्यांचें वाचकांस दिसून येईल. या वरून सूर्यास सत्वगुणीच कां ठरविलें याचें कारण सहज समजून येईल. सूर्याच्या उष्णता देणाच्या शक्तिवरून व त्याच्या उष्णतेच्या व प्रकाशाच्या होणाऱ्या कार्यावरून तो पराक्रमी कां आहे हें सांगावयास पाहिजे असें मुळींच नाहीं. सूर्यबिंब सुरेख व गोल दिसतें त्यावरून त्यास शांधेसूद म्हटलें आहे. त्याचा रंग तांबूस आहे पण सूर्यावर काळे डाग दिसतात असें अलिकडे खात्रीपूर्वक सिद्ध झालें आहे, म्हणून त्यास काळसर तांबूस म्हटलें आहे. उन्हांतून आल्याबरोबर आपणास तहान लागते व पुष्कळ पाणी प्यावेसें वाटतें, पण उन्हांतून आल्याबरोबर कांहीं एक न खातां पाणी प्यालास पित्त वाढतें असा अनुभव आहे. उन्हाळयांत, उन्हाळा लागण्याचे सुमारास वसंपण्याचे सुमारास असा प्रकार वारंवार घडून येतो; या वरून त्यास पित्तप्रकृति ठरविलें असावें.

चंद्र—सत्वगुणी, नेत्रसुन्दर, प्रवासी गोंडस कफवातप्रकृति आहे.

चंद्राच्या आकर्षणामुळें होणाऱ्या भरती ओहटी पासून समुद्राचें पाणी स्वच्छ राहण्यास किती उपयोग होतो, चंद्रप्रकाशापासून कसें सुख होतें, या अनुभवावरून त्याचें अंगी सत्वगुण नाहीं असें कोण म्हणेल? चंद्रबिंब आपल्या डोळयांस सुंदर दिसतें म्हणून त्यास नेत्रसुंदर म्हटलें असावें. चंद्रास आपल्या कक्षेतून पृथ्वीभोंवती नेहमी फिरावें लागतें, यावरून त्यास प्रवासी म्हटलें आहे. चंद्रबिंबास गोंडस कां म्हटलें आहे, हें त्याच्याकडे पाहिल्यांन सहज दिसून येईल. मनुष्य सुखावल्यास वात होतो व थंडीनें कफ होतो हें सर्वांस माहित आहेच चंद्रप्रकाशाचे

अंगी सुख देण्याचें सामर्थ्य आहे, व चंद्रप्रकाशांत शीतता आहे यावरुन त्यास कफवातप्रकृति म्हटलें असावें.

मंगळ — तमोगुणी' नेत्रक्रूर, तांबुस गोरा, अवयव सुंदर व पित्तप्रकृति आहे.

अज्ञानानें किंवा क्रोधादिकांच्या आवेशानें कर्तव्याकर्तव्य विचार न राहण्याची अवस्था ज्यांत असते त्यास तमोगुण म्हणतात. त्याच्या रक्ततेस अनुसरुन तो क्रूर ग्रह मानिला आहे, हें मागें सांगितलेंच आहे;व त्यावरुन त्यास तमोगुणी ठरविलें असावें. नेत्र क्रूरही म्हणण्याचें कारण तेंच आहे. तो आकाशांत प्रत्यक्ष तांबूस दिसतो, म्हणून त्यास तांबूस गोरा म्हटलें आहे. तो रजनीरूपी स्त्रीचा सौभाग्यसूचक तिलकच आहे कीं काय अशा कल्पनेनें त्यास अवयवसुंदर म्हटले असावें. मंगळाच्या रक्तवर्णावरुन त्यास अग्नितत्व मानिले आहे व याच कारणावरुन त्यास पित्तप्रकृति ठरविले असावें.

बुध—रजोगुणी, श्यामवर्ण, कृश, संपत्तिमान, बुद्धिमान, विद्वान व कफवातप्रकृति आहे.

कामेच्छा, लोभ' गर्व असत्यता इत्यादि गुणांचा दर्शक जो गुण त्यास रजोगुण म्हणतात मोठ्या संपत्तिमान लोकांच्या भोंवतीं घिरट्या घालणारी मंडळी कोणत्या प्रकारची असते, हांजी हांजी करुन यजमानाची मर्जी खुश ठेवून आपल्या स्वार्थ साधण्यांत कशी पटाईत असते, हें सांगण्यास पाहिजे असें मुळींच नाहीं बुध हा सूर्यापासून फार जवळ आहे म्हणजे तो ग्रहमालेचा राजा जो सूर्य त्याचे जवळ नेहमी असतो, म्हणून त्यास रजोगुणी म्ह-

टलें असावें बुध हा ग्रह लहान असल्यामुळें चांगला तेजस्वी अ-सा दिसत नाहीं म्हणून त्यास शामवर्णी म्हटलें असावें. सूर्याची उष्णतारूप संपत्ति त्यास सर्व ग्रहांपेक्षां जास्त मिळते म्हणून त्या-स संपत्तिमान म्हटले असावें. त्याचें सूर्याशीं सान्निध्य असल्या-मुळें त्यास बुद्धिमान व विद्वान म्हटलें आहे त्याचे अंगी दुसऱ्या-स उष्णता देण्याचें सामर्थ्य नाहीं परंतु तो ग्रहमालेच्या राजाची त्याचें जवळ राहून नेहमी सेवा करितो म्हणजे दुसऱ्यास सुख दे-तो सुखानें व थंडीनें कोणती कार्यें होतात, हें चंद्रास कफवातप्रकृ-ति कां म्हटले आहे त्यांत सांगितले आहें. व याच कारणामुळें बुधासही कफवातप्रकृत्ति ठरविलें असावें.

गुरु—सत्वगुणी, पोट मोठें, पिवळसर, कफ प्रकृति आहे. सूर्य खेरीज करून सर्व ग्रहांत गुरु आकारमानानें मोठा आहे. चंद्र इतका लहान असूनही त्याचा पृथ्वी वर परिणाम होतो. (मनुष्यांचा व ग्रहांचा संबंध काय ? आणि ते मनुष्यावर काय म्हणुन अंमल चालवितात या प्रश्नाचें उत्तर पहा.) तेव्हां गुरु जरी पृथ्वीपासून लांब असला तरी त्याच्या आकारमानानें पृथ्वी वर कांहीं तरी अनुकूल परिणाम होत असलाच पाहिजे; म्हणून त्यास सत्व गुणी म्हटलें असावें. त्याचा आकार फार मोठा अस-ल्यामुळें त्याचें पोट मोठे मानिले आहे. तो शुक्रा सारखा पांढरा व तेजस्वी दिसत नाहीं किंचित पीवळसर दिसतो, म्हणून त्यास पिवळसर म्हटलें आहे. त्यास सूर्यां पासून पृथ्वीच्या $\frac{१}{२७}$ उष्णता

मिळते, व त्याच्या पासूनही इतरास फारशी उष्णता मिळत नाहीं; म्हणून त्यास कफप्रकृति म्हटलें आहे.

शुक्र— रजोगुणी, सौंदर्यवान, संपत्तिमान, वातकफप्रकृति आहे

ग्रहमालेंत बुध व शुक्र हेच सूर्याच्या जास्त जवळ आहेत. बुधास ज्या कारणामुळें रजोगुणी ठरविलें आहे, त्याच कारणामुळे यासही रजोगुणी ठरविलें असावें. तो डोळयांस प्रत्यक्ष सुंदर दिसतो म्हणून त्यास सौंदर्यवान म्हटलें आहे. शुक्रास सूर्यापसून पृथ्वीपेक्षां जास्त प्रकाश व उष्णतारूपी संपत्ति प्राप्त होते म्हणून त्यास संपत्तिमान म्हटलें आहे शुक्राकडे पाहिल्यास तो आपल्या डोळयांस सुंदर दिसतो व मनास आल्हाद देतो. काळोख्या रात्री शुक्राचे थोडेसें चांदणं पडतें म्हणजे एकंदरींत लोकांस सुख देण्याचें त्याचें अंगीं सामर्थ आहे, परंतु उष्णता देण्याचें मात्र सामर्थ्य नाहीं म्हणून त्यास वातकफप्रकृति ठरविलें असावें.

शनि— तमोगुणी, अवयवकृश, काळा आळशी व कफवातप्रकृति आहे.

प्राचीन युरोपियन लोकांनी यास क्रुर मंद अविवेकी असा सॅटर्न नामक देवतेचं नांव दिलें आहे. हा गतीनें मंद, तेजानें हीन, मागें पुढें जाऊन एकेका नक्षत्राचा पिच्छा पुरविणारा असा आहे; म्हणुन त्यास तमोगुणी म्हटलें असावें शनीच्या भोंवतीं वलयें आहेत व तीं वलयें शनीचा भाग असल्याप्रमाणें त्यास सोडून कधीं जात नाहींत. म्हणून त्यास अवयवकृश म्हटलें आहे. त्याच्या मंद गतीवरून त्यास आळशी म्हटलें आहे. शनीस सूर्यापासून उष्णता व प्रकाश हीं पृथ्वीच्या फक्त $\frac{१}{९१}$ मिळतात. शनी

भोंवतालचीं वलयें व स्वतः शनि हीं अद्याप वायुरूप स्थितींत आहेत म्हणजे शनी वाततत्त्व आहे. या कारणावरून त्यास कफवात प्रकृति ठरविलें असावें.

निरनिराळ्या राशींचें स्वामित्व ।

आपल्या ग्रहमालेंत सूर्य हा मध्य असून त्याच्या भोंवतीं पृथ्वी खेरीज करून बुध, शुक्र, मंगळ, गुरु, शनि हे ग्रह फिरत आहेत. फल ज्योतिषांत घेतलेल्या नवग्रहांपैकीं राहु, केतु हे काल्पनिक बिंदु आहेत. बाकी राहिले सात ग्रह; हे बारा राशींचे स्वामि आहेत. खगोळशास्त्रांत ग्रहांचा जो क्रम दिला आहे, त्याच क्रमानें राशींचे विभाग करून त्यांचें स्वामित्व ग्रहांस दिलें असावें; असें खालील कोष्टकावरून दिसून येईल.

शनि	गुरु	मंगळ	शुक्र	बुध	चंद्र	रवि	बुध	शुक्र	मंगळ	गुरु	शनि
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
कुंभ.	मीन.	मेष.	वृषभ.	मिथुन	कर्क.	सिंह.	कन्या.	तूळ.	वृश्चिक	धन.	मकर.

आतां कोणी असें म्हणेल कीं, मंगळाच्या वांट्यास पहिला भाग जो मेष राशी ती कशी आली? मंगळ हा ग्रह ग्रहमालेंस-ला कांहीं पहिला ग्रह नाहीं. ' र याचे कारण असें आहे कीं, मंगळाचा रंग तांबडा आहे, मेष राशीचा रंग तांबडा आहे. मंग-ळ उग्र ग्रह आहे, मेष उग्र राशी आहे. मंगळ [illegible] आहे, मेष

राशी क्षत्रिय आहे मंगळाचा स्वभाव क्रूर आहे, मेष राशीचा स्वभाव क्रूर आहे. असें दोहोंतहीं साम्य असल्यामुळें मंगळास मेष राशीचे स्वामित्व दिले असावें त्याच प्रमाणे कोणी असें म्हणतील कीं, सूर्य ग्रह मालेचा मध्य असतां त्याचे वांटयास पांचवा भागची सिंह राशी तो कशी आली! त्याचें कारण असें आहे कीं सूर्य ज्या वेळी सायन सिंह राशींत प्रवेश करितो त्यावेळीं वर्षा ऋतुस आरंभ होतो. या वेळेपर्यंत सूर्यानें आपल्या प्रखर तेजाच्या योगाने पाण्याची जी वाफ केलेली असते ती या वेळेस पर्जन्यरूपानें खालीं पडत असते; म्हणजे सूर्य किरणांचा पराक्रम प्रत्यक्ष अनुभवास येत असतो यावरून सिंह राशी व सूर्य यांच्या पराक्रमसादृश्यावरून सिंह राशींचें स्वामित्व सूर्यास दिले असावें वरील विवेचनावरून बाकींच्या राशींच्या स्वामित्वाबद्दलही तर्क करण्यास वाचकांस सोपें पडेल.

ग्रहांचे वयोमान ।

मंगळ—बाल. बुध—कुमार. गुरु—३० वर्षांचा. शुक्र—१६ वर्षांचा. रवि—५० वर्षांचा. चंद्र—७० वर्षांचा. शनि, राहु, केतु— हे १०० वर्षांचे.

यांत रवि५० वर्षांचा मानिला आहे, मनुष्यजातीच्या किंबहुना सृष्टीच्या उत्पत्तीपासून सूर्याचें अस्तित्व अहे; हें सर्वांस कबुल करावें लागेल इतक्या लांबची जरी कल्पना करण्याचे कोणास कठिण वाटलें तरी निदान चार पांच हजार वर्षांपासून सूर्य खात्रीनें अहेच, याबद्दल इतिहास देखील साक्ष देईलच. ग्रह काय

पदार्थ आहे या प्रश्नाचें उत्तरांत सूर्य हल्लींच्या स्थितींत आस्थास कित्येक लाख— किंवा कोटी— वर्षें झालीं असतील, व पुढेंही अशींच कित्येक कोटी वर्षें जातील असें म्हटलें आहे असें असतां सूर्य पन्नास वर्षांचा कसा! आयुष्यमर्यादा १०० वर्षें धरिल्यास या गोष्टीचा खुलासा सहज होईल. १०० वर्षांच्या आयुर्मर्यादेच्या मानानें पाहतां आपला सूर्य अगदीं मधल्या स्थितींत आहे म्हणजे जळण्याच्या पूर्ण भरांत आहे आता येथून पुढे त्यास उतरती कळा लागणार (यांत आतां येथून जरी म्हटलें आहे तरीतें देखील कित्येक कोटी वर्षें लागतील) म्हणुन तो ५० वर्षांचा मानिला असावा चंद्र अगदीं थंडगार झाला आहे त्यावर हवा, पाणी यांतले कांहीं एक स्वाभाविक स्थितीत नाहीं तो जीर्ण झाला आहे, म्हणुन त्याचें वय ७० वर्षांचे मानील असावें वरील विवेचनावरून बाकीच्या ग्रहाच्या वयांबद्दल कल्पना करितां येईल,

ग्रहांचे अधिकार ।

सूर्य–राजा. चंद्र–राणी. मंगळ–सेनापती. बुध–युवराज. गुरु, शुक–सचिव. शनि–सेवक.

सूर्य सर्वांपेक्षां मोठा व पराक्रमी आहे, म्हणून तो राजा मानिला हें योग्यच आहे. सर्वस्वी सूर्यावर अवलंबून राहणारा व त्याच्याच प्रकाशानें दुसऱ्यास प्रकाश देणारा म्हणजे एकंदरींत सूर्याच्या वैभवावर सुख भोगणारा असा चंद्र आहे, म्हणून त्यास राणी मानिलें असावें मंगळाच्या क्रूरतेवरून त्यास सेनापती मानिलें असावें गुरु, शुक्र, हे आकाशांत बरेच तेजस्वी दिसतात,

म्हणुन त्यांस सचिव मानिलें असावें. शनि हा शेवटचा ग्रह आहे त्यास जवळ येण्याला मुळींच अधिकार नाहीं, म्हणून त्यास सेवक मानिलें असावें.

ग्रहांच्या जाती.

ब्राह्मण—गुरु, शुक्र. क्षत्रिय—रवि, मंगळ. वैश्य—चंद्र. शूद्र—बुध. अंत्यज- शनि.

रवि शिवाय करून आकाशांतील ग्रहांपैकीं गुरु व शुक्र तेजानें श्रेष्ठ आहेत; म्हणून त्यास श्रेष्ठ जातीचे असे ब्राह्मण मानिलें असावें रवि स्वत: पराक्रमी आहे, हें मागें सिद्धकरून दाखविलें आहे. व मंगळ अग्नितत्व असल्यामुळं तो पराक्रमी मानिला गेला आहे, म्हणून या दोहोंस क्षत्रिय ठरविलें असावें. चंद्र हा प्रकाशरूपी माल सूर्यापासून आणून पृथ्वीस देतो, म्हणजे एक प्रकारचा व्यापारच करितो. या त्याच्या कृत्यावरुन त्यास वैश्य मानिलें असावे. बुध नेहमी सूर्याजवळ असतो म्हणून तो त्याचा सेवक आहे, अशा कल्पनेनें त्यास शूद्र ठरविलें असावें. शनि ग्रहमालेंतला फलज्योतिषांत घेतलेल्या ग्रहांपैकीं शेवटचा ग्रह आहे महार मांग यांच्या सारखा हा नेहमी लांब असतो, यावरून त्यास अंत्यज ठरविलें असावें.

३ या आकाशस्थ नवग्रहांचा बारा राशीच्या योगानें पृथ्वीवरील प्राण्यांवर शुभाशुभ जोर कसा व कां चालावा!

मनुष्यांचा व ग्रहांचा संबंध काय! आणि ते मनुष्यांवर काय म्हणून अंमल चालवितात! या प्रश्नाचे उत्तरांत ग्रहांचा मनूष्यावर अंमल कां चालतो याचीं कारणे दिलीं आहेत; व अंमल चालतो हें सिद्ध करून दाखविलें आहे. आतां तो अंमल नेहमीं सारख्या रीतीनें चालतो कीं त्यांत कांहीं फेरफार होतात व निरनिराळ्या राशींत ग्रह असतां त्याचा निरनिराळा परिणाम होतो कीं काय तें पाहूं ग्रहमालेचा राजा सूर्य आहे, तेव्हां त्याचाच परिणाम पृथ्वीवर व पृथ्वीवरील प्राणीमात्रावर विशेष होत असला पाहिजे, म्हणून तो निरनिराळ्या राशींत असतां पृथ्वीवर कसकसे फेरफार घडुन येतात व प्राणीमात्रावर कसकसा परिणाम होतो. हें पाहिल्यास इतर ग्रहांचेही निरनिराळ्या राशींत असतां निरनिराळे परिणाम घडत असले पाहिजेत याबद्दल खात्री होईल; करितां सूर्याचे परिणाम राशीपरत्वें कसकसे होतात तेपाहूं

सूर्य जरी एकच आहे व किरणद्वारा त्याजपासून जी उष्णता रूप संपत्ति बाहेर पडत असते, ती जरी नेहमी सारखी असते तरी त्याचें क्रांतीवृत्तातून भ्रमण होत असल्यामुळें प्रत्येक महिन्यास

त्याचे किरण पृथ्वीवर कम जास्त पडतात. सूर्य ज्या वेळीं सायन मेष राशींत प्रवेश करितो, त्या वेळीं थंडीचा कडक अंमल नाहींसा झालेला असतो व उष्णतेचाही कडक अंमल नसतो. त्यावेळीं नुकताच वसंत ऋतूस आरंभ झालेला असून सूर्यकिरणांचा पराक्रम कोणत्याही प्रकारें दिसून येत नाहीं, म्हणजे सूर्यकिरणांच्या अंगी तीव्रता नसते या वेळीं सौरमानाचा मधुमास सुरुहोतो.

सूर्य ज्यावेळीं सायन वृशभ राशींत प्रवेश करितो, त्यावेळीं तो किरणद्वारा आपला उष्णतारूप पराक्रम प्रकट करण्यास आरंभ करितो. व विवाहादि मंगलोत्सव होत असून राजेरजवाडे अनेक प्रकारच्या विलासांत निमग्न असतात यावेळीं सौरमानेचा माधव मास सुरुहोतो.

सूर्य ज्यावेळीं सायन मिथुन राशींत प्रवेश करितो, त्यावेळीं ग्रीष्म ऋतूस आरंभ होतो. उन्हाळा कडक होत असतो, जिकडे तिकडे उष्णवातानें हाहाकार केलेला असतो. तारीख २० मे ला या ऋतूस आरंभ होतो या तारखे नंतरची स्थिति ध्यानांत आणा. अहोरात्र सारखी अंगाची लाही लाही होत असते, वारा बहुतेक बंद असतो, म्हणून लोकांस वनविहार व जळक्रीडा करण्याची इच्छा होते. या वेळीं सौरमानाचा शुक्र नामक मास सुरु होतो.

सूर्य ज्यावेळीं सायन कर्क राशींत प्रवेश करितो, त्या वेळीं उष्णतेची कमाल झालेली असते तारीख २१ जूनला सूर्य या राशींत जातो कर्कसंक्रमणकालीं सूर्य विषुवृत्ताच्या उत्तरेस अति दूरच्या बिंदूंत असतो व उष्णतां पुष्कळ असल्यामुळें समुद्राच्या

पाण्याची वाफ फार झपाट्यानें होत असते यावेळीं सौरमानाचा शुचि नामक मास सुरू होतो.

सूर्य ज्यावेळीं सायन सिंह राशींत प्रवेश करितो, त्यावेळीं वर्षा ऋतूस आरंभ होतो तारीख २२ जुलाई हा या ऋतूचा आरंभ दिवस होय इतके दिवस सूर्यानें आपल्या प्रखर तेजाच्या योगानें पाण्याची जी वाफ केलेली असते, ती या वेळेस पर्जन्यरूपानें खाली पडत असते म्हणजे सूर्यकिरणांच्या पराक्रमाचा अनुभव प्रत्यक्ष येत असतो यावेळी सौरमानाचा नभ नामक मास सुरू होतो.

सूर्य ज्यावेळीं सायन कन्या राशींत प्रवेश करितो, त्यावेळीं पाउस पडत असल्यामुळें चोहोंकडे हिरवेंगार झालेलें असून रानांतील देखाव्यांनीं लोकांचीं मनें प्रसन्न होत असतात. अशा वेळच्या देखाव्याचें अनेक कवींनीं सुरस वर्णन केलें आहे. पृथ्वीरूपी स्त्रीनें हिरव्या रंगाचा शालू परिधान केला आहे कीं काय! अशा प्रकारची काव्यांतील कल्पना बहुतेकांस माहित असेलच. हा महिना भर पावसाचा असतो. या वेळीं सौरमानाचा नभस्य नामक मास सुरू होतो.

सूर्य ज्यावेळीं सायन तुलाराशींत प्रवेश करितो, त्यावेळीं शरदृतूस आरंभ होतो. दिवसास उन्हाळा फार कडक असतो परंतु रात्रीं थंडी असते. सूर्य तुला राशींत तारीख २३ सप्टेंबर या दिवशीं प्रवेश करितो. या वेळीं सौर मानाचा इष हा मास सुरू होतो.

सूर्य ज्या वेळीं सायन वृश्चिक राशींत प्रवेश करितो, त्या वेळीं मे महिन्या सारखा कडक उन्हाळा असतो व पित्तामुळें लोकांची वृत्ति तापट असते. सूर्य याराशींत तारीख २३ अक्टोबरच्या दिवशीं प्रवेश करितो, या वेळीं सौरमानाचा ऊर्ज हामास सुरू होतो.

सूर्य ज्या वेळीं सायन धनु राशींत प्रवेश करितो, त्यावेळीं हेमंत ऋतूस आरंभ होतो तारीख २२ नवंबर हा या ऋतूचा आरंभ दिवस होय हवा रुक्ष असून थंडी फार असते; त्यामुळे प्राणीमात्रास थंडीपासून बराच त्रास होतो या वेळीं सौरमानाचा सह नामक मास सुरु होतो.

सूर्य ज्यावेळीं सायन मकर राशींत प्रवेश करितो, त्यावेळीं थंडी अति कडक असते मगरमिठी अति बळकट असते व मगरेचा तडाखा जसा अजब आहे म्हणून प्रसिद्ध आहे. तशीच या वेळची थंडी कडक असते व तिच्या तडाख्यांत सर्व प्राणी सांपडलेले असतात आणि थंडीच्या निवारणार्थ उर्णवस्त्रांची मनुष्यांस गरज लागते या राशींत सूर्य तारीख २१ दिसेम्बर या दिवशीं येतो, हा दक्षिणायनाचा शेवटला दिवस होय. या वेळीं सौरमानाचा सहस्य नामक मास सुरू होतो.

सूर्य ज्यावेळीं सायन कुंभ राशींत प्रवेश करितो, त्यावेळी हेमंत ऋतू संपून शिशिर ऋतूस आरंभ होतो. थंडीचा कडक अंमल नाहीसा होत चाललेला असतो व त्यामुळें मटवयांतील गार पाण्याची आवश्यकता भासूं लागते. या राशींत सूर्य तारीख २१ जानेवारी या दिवशी प्रवेश करितो या वेळीं सौरमानाचा तप नामक मास सुरु होतो.

सूर्य ज्यावेळीं सायन मीन राशींत प्रवेश करितो, त्यावेळीं उष्णतेचें मान साधारण वाढलेलें असतें, पाणी वारंवार प्यावेंसें वाटतें व उष्णतेमूळें तळमळ वाढत जाते; म्हणजे बहुतेक माशा सारखी अवस्था होते या राशींत सूर्य तारीख १९ फेब्रुवारी या दिवशीं प्रवेश करितो या वेळीं सौरमानाचा तपस्य नामक मास सुरू होतो.

सूर्य निरनिराळ्या राशींत असतां त्याचा निरनिराळा परिणाम घडतो; हे वरील विवेचनावरून ध्यानीं येईल या प्रमाणेच इतर ग्रहांचेही निरनिराळ्या राशींत असतां निरनिराळे परिणाम घडत असले पाहिजेत आता हे परिणाम प्रकाशरूपाने गुरुत्वाकर्षणरूपानें ग्रहांच्या योग प्रतियोगानें व आकारमानानें, पृथ्वीपासून त्याच्या अंतराच्या माना नें मात्र घडतील याबद्दल पूर्वींचा अनुभव कसा आहे, कोणते ग्रह कोणत्या राशींत असतां काय परिणाम घडले, हल्लींचा अनुभव कसा काय आहे, वगैरे गोष्टींचा विचार करूं. चंद्राच्या आकर्षणानें समुद्रास भरतीं येते; ही गोष्ट आतां सर्वांस माहीत झाली आहे. त्यांत अमावास्येसव पौर्णिमेस जास्त भरती येते हा परिणाम सूर्य चंद्राच्या योग प्रतियोगाचा आहे पुष्कळ वेळां पावसाळ्यांत "अमावास्येचें किंवा पौर्णिमेचें ताण आहे, तेव्हां पाऊस सुरु होईल किंवा जास्त पडेल" असें कोंकणांतील लोक म्हणतात. ही कल्पना गुरुत्वाकर्षणाच्या नियमानुसारच आहे हें सहजीं ध्यानीं येईल आतां कधीं कधीं अमावास्येस किंवा पौर्णिमेस पाऊस जास्त न पडतां किंवा मुळींच न पडतां अष्टमीस देखील पडतो, आणि अष्टमीस तर फार कमी भरती येते याबद्दल

वरील अनुमान चुकीचें ठरते असें मुळींच नाहीं; तर पाऊस पडण्यास सूर्य आणि चंद्र हे दोनच ग्रह कारणाभूत नसून इतर ग्रहही या बाबतींत विचारांत घेतले पाहिजेत तसें जर केलें नाहीं तर आपल्या अनुमानांत निःसंदेह चूक होईल.

गेल्या दहा वर्षांत वरचेवर दुष्काळाच्या सुधारलेल्या आवृत्तीवर आवृत्ती निघत आहेत, लोक अन्नावांचून उपाशी मरत आहेत, शेतकऱ्यांची अति दुर्दशा झाली आहे, गरीब लोकांस दुपारची भ्रांत पडूं लागली आहे, असें कां होतें? या गोष्टीचा फल ज्योतिषशास्त्राचें दृष्टीनें विचार केला तर असें दिसून येईल कीं, पृथ्वीपेक्षां शेंकडोपट मोठाले जे ग्रह ते विषुवाच्या दक्षिणेस भ्रमण करित आहेत. इ० स० १८९६ सालीं गुरु सिंह राशींतून कन्येस जात होता म्हणजे त्याचे दक्षिणायन होतें. व शनी वृश्चिक राशींत होता, म्हणजे तोही मकर वृत्तांकडेच जात होता या प्रमाणे मोठ मोठाले ग्रह विषुवाच्या दक्षिणेस भ्रमण करित असल्यामुळे वारंवार दुष्काल पडत गेले. चालू सालीं गुरु कर्क राशीवर आहे म्हणजे विषुवाच्या उत्तरेस आहे म्हणून पाउस बरा झाला या वरून असें अनुमान निघते कीं मोठमोठाले ग्रह विषुवाच्या उत्तरेस असल्यास पाऊसकाळ चांगला होतो व दक्षिणेस असल्यास दुष्काळ पडतो. इ०स० १३९६ सालीं महाराष्ट्रांत भयंकर दुष्काळ पडला त्यावेळीं बहुतेक मोठमोठाले ग्रह विषुवाच्या अगदीं जवळ होते. ज्याप्रमाणे हवामान, वृष्टि, अनावृष्टि, वादळे, तुफान, दुष्काळ, मोठाल्या भयंकर रोगाच्या सांथी वगैरे बाबतींत ग्रहांचा परिणाम घडतो त्याप्रमाणेच मनुष्याच्या आयुष्यांत होणाऱ्या शुभाशुभ गोष्टींवर

ही त्यांचा परिणाम थडल असला पाहिजे; अशी वरिल विवेचना वरुन वाचकांची खात्री होईल, व पृथ्वीवरील प्राण्यांवर ग्रहांचा राशीपरत्वें शुभाशुभ जोर कसा व कां चालतो याचें अनुमान करण्यास सोपें पडेल.

३ मनुष्यांचा व ग्रहांचा संबंध काय? आणिते मनुष्यावर काय म्हणून अंमल चालवितात!

युरोप खंडातील निरनिराळ्या देशाच्या भोंवतीं किंवा जवळ पास समुद्र आहे. यामुळें ते लोक मुळारंभा पासूनच साहशी व दर्यावर्दी असून पुढें मोठें व्यापारीही बनले. हिंदुस्तान देशासही समुद्रकिनारा पुष्कळ आहे, परंतु तो पुष्कळ बंदरें असण्याजोगा तुटक नाहीं. पश्चिम आणि पूर्व किनाऱ्यावर नद्या पुष्कळ आहेत, पण त्यांतल्या नावा चालण्याजोग्या एक दोनच आहेत; आणि त्याही नियमित अंतरापर्यंतच अशा आहेत. या कारणानें हिंदुस्तानातील लोक दर्यावर्दी झाले नाहींत. दुसरी गोष्ट अशी कीं, कोणतेही लोक आपला माल खपविण्यासाठीं फार करून आपल्या घरुन उठून बाहेर जात नाहींत. आपल्या निर्वाहासाठीं माल लागला तर तो आणण्यास मात्र जातात. आपल्या देशांत धान्यें फळें, मसाल्याचे जिन्नस, कलाकुशलतेचे पदार्थ तयार होत, आणि

ते आपल्यास पुरून पुष्कळ उरत. पण ते विकण्यासाठीं दुसऱ्या देशांत नेण्याची काय गरज होती! ते विकले नाहींत तर दोनप्रहरची पंचाईत पडावी अशी कांहीं स्थिति नव्हती. मग मुद्दाम होऊन धोक्याचा दर्यावर्दीपणा केवळ पैसा मिळविण्यासाठीं कोण करितो! पुढें ज्यांना हे पदार्थ हवे असत त्यांना नेऊन पुरविण्याचा व्यापार मूर, आरब वगैरे व्यापारी लोक करू लागले, नंतर स्वतः युरोपियन लोकच इकडे येऊं लागले. मिळून हिंदुस्तानांतील जिन्नस घरच्या घरींच खपण्याची सोय झाली, यामुळे या देशांतील लोक दर्यावर्दी कधींच बनले नाहींत.

उत्तर हिंदुस्तानातल्या हिमालय पर्वताच्या दक्षिणेकडच्या प्रदेश यांतील सिंधु आणि तिला मिळणाऱ्या नद्या यांचा प्रदेश, तसाच गंगानदी आणि तिला मिळणाऱ्या नद्यांचा प्रदेश हे पृथ्वीच्या पाठीवरील अत्यंत सुपीक प्रदेशांपैकीं आहेत. त्याच प्रमाणे या प्रदेशांत मौल्यवान खनिज पदार्थ ही फार सांपडतात यामुळे या प्रांतांतील लोक सुखवस्तू आणि इतर प्रदेशांतील लोकांपेक्षां कमी श्रमकंटक आणि चैनी असे झाले आहेत. देशांत ज्या राजकीय उलाढाली झाल्या आहेत त्यांमध्ये या लोकांनीं फारसें कधीं मन घातलेलें नाहीं. तसेंच या प्रदेशांत हिंदुस्तानावर वायव्य दिशेकडून स्वाऱ्या करून आलेले लोक प्रथमतः शूर चपल आणि चलाख असून ते येथें राहूं लागून थोडेच दिवसांत सुखवस्तू बनून गेले अशीं उदाहरणे आहेत. रजपूत लोक प्रथमतः मोठे शूर म्हणून ख्याती होती; परंतु त्यांनीं या सुपीक प्रदेशांत वस्ती करून राज्ये

स्थापिल्यावर ते असेच सुखवस्तू होऊन त्यांची चलाखी कमी झाली आणि ते पुढे मोंगल व मराठे लोक यांना तेव्हांच वश झाले. त्याच प्रमाणे शूर आणि लढाऊ मोंगल आणि अफगाण लोक यांनाही हिंदुस्तानांत येऊन चैनी आणि निःसत्व बनण्यास वेळ लागला नाही. गंगेच्या कांठचे फार सुपीक असे बंगाल व बहार प्रांत यांतील लोकांनीही देशांतल्या उलाढालींत कधींच मन घातलेले दिसत नाही. तोच प्रकार गुजराथ प्रांतांतील लोकांच्या संबंधाचा आहे. दक्षिणेतल्या लोकांचा अगदीं उलट प्रकार आहे. या प्रदेशांत डोंगराळ मुलुख फार यामुळे इकडील मराठे वगैरे लोक चपल, शूर, चलाख असे निपजले आहेत. मद्रास इलाख्यांतला प्रदेश अधिक सपाटीचा आहे, आणी शिवाय त्या प्रदेशांत उत्तरे कडल्या धामधुमी आणी उलाढाली कधीं फारशा जाऊन पोंचल्या नाहींत, या मुळें त्या प्रदेशांतील लोक अधिक शांत आहेत. सपाट व पिकाऊ प्रदेशांतील लोक शूर व उलाढाल्ये नसतात. परंतु ते शेतकी, व्यापार, उद्योग धंद, कला कौशल्य वगैरे शांततेच्या उद्योगांत हुशार असतात. या मुळें हिंदुस्तान देशांतले जे सुपीक व सपाट प्रदेश त्यां मध्यें शेतकी उद्योग धंधे, व्यापार, कला कौशल्य यांची वाढ एक वेळीं फार झाली होती. पश्चात्य देशांतील यांत्रीक साधनांनीं हे उद्योग धंदे जरी सांप्रत निकृष्ट दशेला पोंचले आहेत, तरी तींच यांत्रीक साधनें आमच्या इकडेही साध्य झाली असतां त्यांना उर्जित दशा येण्यास वेळ लागणार नाहीं.

आधींच हिंदुस्तान हा देश विस्तृत आहे. हाच विस्तृत देश अत्यंत शीत किंवा अत्यंत उष्ण प्रदेशांत असता तर काम झाले

असते? अर्थात तशा स्थितींत सर्व प्रकारचीं साधनें मुळींच अनुकूल झालीं नसतीं, त्याचप्रमाणें पृष्ठभाग कोठें सपाट, कोठें डोंगराळ, कोठें खडकाळ, असा आहे; कोठें मोठाल्या नद्या वाहत असल्यामुळें जमीन फार मऊ व सुपीक अशी झाली आहे. अशा प्रकारचे नानातऱ्हेचे प्रदेश सर्वत्र आहेत. अशा रीतीचें जसें भूवैचित्र्य आहे तसें लोकवैचित्र्यही आहे. हिंदुस्तानांतल्या अशा प्रकारच्या भूपृष्ठच्या रचनेमुळेंच या देशांत जसे अध्यात्मिक व गहन विद्याचा विचार शांतपणें करित बसणारे बुद्धिवान लोक निपजले आहेत, तसेंच कलाकौशल्याचीं कामें करणारे उद्योगी लोकही निपजले आहेत; आणि प्रसंगीं देशाचें रक्षण करण्यास उपयोगी असे डोंगरी शूर आणि लढाऊ लोकही पैदा झाले आहेत. ही परंपरा अद्यापही नष्ट झाली नाहीं अद्याप आमच्या देशांतील बुद्धिवान लोक पाश्चात्य लोकांच्या बरोबरीनें त्यांच्या विद्या शिकतात; कलाकौशल्याच्या प्रदर्शनांत आमच्या कारागिरांचा नंबर खालीं लागत नाहीं; आणि मोठाले शूर सेनापती आमच्या देशांत पैदा होणाऱ्या कणखर शिपाई लोकांची तारीफ करीत आले आहेत. यावर कोणी असे म्हणेल कीं, असें जर आहे; तर या देशास औद्योगिकदृष्ट्या निकृष्ट दशा सांप्रत कां आली आहे? याचें कारण निराळें आहे, पण त्याचा विचार करण्याचें हें स्थल नव्हे म्हणून तसें करितां येत नाहीं.

आपला महाराष्ट्र देश आपल्यास किती मोठावाटतो! कोणीकडे धारवाड आणि कोणीकडे खानदेश, कोणीकडे कोंकण, आणि कोणीकडे सोलापूर. परंतु तोच महाराष्ट्र देश हिंदुस्तानाशीं लावून पाहिल्यास

पुष्कल लहान दिसतो. वरें हिंदुस्तानदेश एवढा अफाट व विस्तीर्णजरी आपणास वाटतआहे, तरी सबंध पृथ्वीचा नकाशा एकाद्या लहान कागदावर काढिल्यास त्यास त्यांत चारअंगुळेलांबी रुंदीची जागातरी मिळेल कीं नाहीं याची शंकाच आहे; मग महाराष्ट्र देश तर त्यांत एक लहानसा ठिपकाच दिसेल! तरी देखील त्यांतील उच्च नीच भाग, पर्वत, टेंकड्या, सपाट जमिनी वगैरेंचा तेथील रहिवाशां-वर झालेला परिणाम स्पष्ट दिसून येतो; हें मागील विवेचनावरून सहज दिसून येईल. आपली पृथ्वी इतकी मोठी आहे कीं, जलद चालणाऱ्या आगीच्या बोटींत आपण बसलों; आणि ती आग-बोट रात्रंदिवस चालत असली तरी मुंबईहून निघुन पृथ्वीप्रदक्षिणा करून परत येण्यास षण्मास पाहिजेत. त्यामानानें पाहतां हिंदुस्तानांतील पर्वत, टेंकड्या, सपाट व पिकाऊ मैदानें कांहींच नाहींत हें प्रत्येकास कबूल करावें लागेल. असें असून देखील त्यांचा तेथील रहिवाशांवर परिणाम होतो, तर मग पृथ्वी पेक्षां लक्षावधिपट मोठा जो सूर्य त्याचा व इतर मोठमोठाले ग्रह यांचा पृथ्वीवर राहणाऱ्या लोकांवर परिणाम कां होऊं नये! अवश्य झालाच पाहिजे. पृथ्वीपेक्षां सूर्य सुमारे तेरालक्षपट मोठा आहे तेव्हां एवढ्या मोठ्या विशाल गोलाचा मनुष्यावर काय परिणाम होतो तें पाहूं.

सूर्यापासून माणसांस मोठमोठाले लाभ होतात व पृथ्वीवर घडणाऱ्या सर्व हालचाली सूर्यावर अवलंबून आहेत याची कल्पना पुढील मजकूर वाचल्यानें येईल. सूर्य मध्य धरून नऊ कोटि मैलांची त्रिज्या घेऊन त्याभोंवतीं एक गोल रचिला तर

त्या गोलाच्या आंतील भागावर सूर्यापासून निघणारें सर्व तेज पडलें पाहिजे. अशा गोलाचा आपली पृथ्वी हा फारच लहान भाग होईल, व त्या भागाचें सर्व गोलांशी जे प्रमाण वसेल त्या प्रमाणानें सुर्याच्या एकंदर तेजापैकीं कांहीं अंश आपणांस मिळेल याप्रमाणे गणित करितां असें दिसून येतें कीं, सूर्यापासून दिगंतरालांत जो तेजाचा ओघ वाहत आहे त्यापैकीं पृथ्वीस काय

तो सुमारे $\frac{1}{२,००,००,००,०००}$ [एक दोन अब्जांश]

इतका अंश मिळतो. परंतु एवढया थोडया अंशानें पृथ्वीवर केवढी घडामोड चालली आहे पहा. पृथ्वीच्या दैनंदिन गतीमुळें सूर्यप्रकाश पर्यायाने प्राप्त होत असल्यामुळे पृथ्वीवर रात्र आणि दिवस यांची रहाटी सुरू आहे. [सूर्यप्रकाश नसेल तर पृथ्वीवर निरंतर अमावास्येच्या मध्यरात्रीप्रमाणें काळोख उत्पन्न होईल. परंतु केवळ प्रकाशरूपाने सुर्यापासून आपणांस जें सामर्थ्य मिळतें तें फारच थोडें होय. सूर्यकिरणांमध्ये केवळ प्रकाशकत्वच आहे असें नाहीं, तर उष्णता देण्याचें व रसायनव्यापार घडवून आणण्याचें त्यांमध्यें विशेष सामर्थ्य आहे. या सामर्थ्याची जी प्राप्ति आपणांस होते ती सूर्याची सर्वांत श्रेष्ठ देणगी होय. या देणगी वांचून पृथ्वीवरील सर्व व्यापार एकदम बंद पडतील व पृथ्वीस सर्वत्र मृतकळा प्राप्त होईल.

सूर्यकिरणांनी वातावरण तापले म्हणजे त्यांत प्रवाह उत्पन्न होतात. अतिसूक्ष्म मंद झुळकीपासून फार मोठ्या तुफान वाऱ्या-

पर्यंत वातावरणाची सर्व हालचाल सूर्यापासून किरणरूपानें येणाऱ्या उष्णतेच्या सामर्थ्यानें होते पृथ्वीवर येणाऱ्या एकंदर उष्णतेचें परिणाम फार मोठें आहे. पृथ्वीच्या सर्व पृष्ठावर शंभर फूट जाडांचें हिमावरण असतें तर तें सूर्यतापानें वर्षांत पूर्णपणे वितळून गेले असतें. इतकें बर्फ वितळविण्यास कितीं उष्णता पाहिजे व कितीं कोळसे जाळावे लागतील याचा विचार केला असतां सूर्याकडून आलेल्या नुसत्या उष्णतारूपी सामर्थ्याचा अजमास होईल. सूर्यकिरणांच्या अभावीं वातावरण व तसेंच सर्वमहासागर अगदीं स्थिर व निश्चेष्ट होतील, व त्यास सर्वत्र हिमाच्छादन प्राप्त होईल.

सूर्यकिरणांमुळेंच कोटयवधि खंडी पाण्याची वाफ प्रत्यहीं हवेंत भरते पुन्हा वाफेच्या द्रवीभवनानें पाउस, धुकें व दहींवरहीं उत्पन्न होतात, व त्यांमुळें पृथ्वी प्राणी आणि वनस्पती यांस राहण्यास योग्य अशी झाली आहे. नाहीं तर आकाश निरभ्र व कोरडें, नद्यांचे उगम शुष्क,, सर्व भूमि प्रदेश रुक्ष व ओसाड, असा असावयाचा. पावसावर ज्यांचें जीवित्व अवलंबून आहे अशा वनस्पति कोठून उत्पन्न होणार! पृथ्वीचें बाष्पावरण जाऊन ती अगदीं उघडीपडणार, व स्वतःच्या अंगची उष्णता गमावून आंत व बाहेर सारखीच निःसीम थंडगारहोणार!

प्राणी व वनस्पति यांच्या जीवनास सूर्यकिरणांचे उष्णता रूप सामर्थ्य आवश्यक आहेच, परंतु त्याहीपेक्षा त्यांचें रसायन सामर्थ्य विशेष आवश्यक आहे. सूर्यकिरणांच्या रसायनव्या-

पारावर वनस्पतिचें अस्तित्व व वृद्धि हीं अवलंबून आहेत, व वनस्पतिजन्य पदार्थांवर प्राणिकोटि सर्वस्वी अवलंबून आहे. कारण प्राण्यांचें सर्व अन्न वनस्पति मूलक आहे. मांसाहारी प्राण्याचें भक्ष्य देखील परंपरेनें वनस्पतिमूलकच आहे. अर्थात् सूर्य किरणांचा रसायनव्यापार नष्ट झाल्यास प्राणी व वनस्पति बरोबरच लयास जातील.

याप्रमाणें पृथ्वीवर दृष्टीस पडणारी सर्व हालचाल सूर्यकिरणद्वारा येणाऱ्या सामर्थ्यावर अवलंबून आहे. याशिवाय उष्णता विद्युत वगैरे शक्ति उत्पन्न करण्याचे आपणांस उपलब्ध असे जे मार्ग आहेत तेही परंपरेनें सूर्यमूलकच आहेत. या सर्व गोष्टींचा विचार केला असतां सूर्याचे आपणांवर किती अगणित उपकार आहेत ह्याची कल्पना होते व सूर्य हा सर्व सुखसाधनांचा ईश्वरनियुक्त दाता आहे असें पूर्णपणे मनावर ठसतें.

सूर्य पृथ्वीस जितकें सामर्थ्य देत आहे तितकेंच तो पृथ्वी एवढ्याला दोनशे कोटि गोलांस देऊं शकेल, ही गोष्ट लक्षांत आणिल्यास सूर्याचा विलक्षण महिमा व अद्भुत शक्ति यांची पूर्ण कल्पना होईल.

सूर्याचा पृथ्वीवर राहणाऱ्या माणसांवर परिणाम होतो, हें मागील विवेचनावरून ध्यानीं येईल. आता बाकीच्या ग्रहांचा परिणाम होतो कीं नाहीं, होत असल्यास कोणत्याप्रमाणानें व किती, वगैरे गोष्टींसंबंधीं विचार त्यांचें आकारमान व पृथ्वीपासून त्यांचीं अंतरें वगैरे गोष्टी लक्षांत घेऊन करूं. पृथ्वीचें आ-

आरभाग एक मानिल्यास ग्रहांची आकारमानें व पृथ्वीपासून त्यांचीं अंतरें पुढील कोष्टकांत दाखविल्या प्रमाणें आहेत.

ग्रहादिकांची आकारमानें व पृथ्वीपासुन त्यांचीं अंतरें दाखविणारें कोष्टक.

नांव.	अकार मान पृथ्वी एक मानून-	पृथ्वी पासून अंतर. मैल लक्ष. महत्तम.	पृथ्वी पासून अंतर. मैल लक्ष. लघुत्तम.
रवि.	१२लक्षांपेक्षांजास्त	९३८	९०८
बुध.	·०५२	१३६९	४७७
शुक्र.	·८५१	१६१०	२३६
मंगळ.	·१३९	२४७६	३३८
गुरु.	१३८७·४	५९७२	३६३२
शनि.	७४६·९	१०२३६	७३७३
चंद्र.	·०२०४	२·०५	२·०२

यावरून बुध हा पृथ्वीपेक्षां फार लहान आहे, शुक्र जवळ जवळ पृथ्वी एवढा मोठा आहे मंगळ बुधापेक्षां बराच मोठा आहे व गुरू अणी शनि हे तर पृथ्वीपेक्षां शेंकडोंपट मोठाले आहेत. चंद्राचे आकारमान फारच कमी म्हणजे बुधाच्या निम्यापेक्षांही कमी आहे. परंतु तो सर्व ग्रहां पेक्षां पृथ्वीला फार जवळ आहे म्हणून तो सूर्याएवढा मोठा दिसतो व त्याचा समुद्रावर भरती ओहटी रूपानें झालेला परिणाम आपणांस स्पष्ट दिसून येतो. चंद्रा सारख्या लहान ग्रहांचा जर पृथ्वीवर परिणाम होतो व त्यामुळें झालेले व्यापार स्पष्ट दिसून यतात तर पृथ्वीपेक्षां शेंकडोंपट मोठाले जे शनि, गुरु वगैरेंचा परिणाम कांघडूं नये? अवश्य घडलाच पाहिजे. रोगराई, सांथी, भयंकर उत्पात, वादळें, धान्यादिकांची समृद्धि किंवां दुष्काळ, अति वृष्टि, अनावृष्टि, उन्हाळा, थंडी, पावसाळा, पृथ्वीवर होणाऱ्या लढाया, राजक्रांत्या, व माणसांच्या आयुष्यांत घडून येणाऱ्या सर्व लहान मोठ्यागोष्टी इत्यादि गोष्टींशीं सूर्य व चंद्र यांच्या शिवाय इतर ग्रहांचा संबंध असलाच पाहिजे यांत शंका नाहीं. आतां या संबंधीं त्यांचा जो परिणामहोणार तो त्यांच्या आकारमानावर, अंतरावर व त्यांच्या स्थितीवर अवलंबून राहील इतकेंच.

ग्रह, उपग्रह वगैरे सर्व सूर्यमाला व विश्व यांचा पसारा हा प्रकृतिचा आहे. प्र म्हणजे विशेष व कृति म्हणजे करामात तेव्हां या शब्दाचा अर्थ विशेष करामात असा झाला. तस्मात् ती स्वतंत्र नसून कोणाची तरी असली पाहिजे म्हणजे या प्रकृतीचें

सुद्धां नियमन करण्यास नियंता पाहिजेच. तो नसेल तर कांहीं व्हावयाचें नाहीं. ही प्रकृती ब्रह्मांडें उत्पन्न करिते, पण पुढील खेल करणारा नसता, तर तीं अस्ताव्यस्त आणी अचेतन राहिलीं असतीं. या ब्रह्मांडामध्यें आणि प्रकृतीमध्यें ब्रह्म किंवा परमात्मा याचा अंश प्रकट होतांच विश्व उदयास येऊन त्याची लीला सुरू झाली. मूर्तामूर्त अखिल वस्तूंमध्यें हें चैतन्य वास करून सर्व कांहीं नियंत्रितपणें चालवीत आहे.

हवा, पाणी, भूमि, आणि वीज ह्या कारणांपासून उत्पन्न होणाऱ्या वनस्पतींमध्यें त्या सर्व कारणांचे अंश वास करितात. जननीजनक यांच्या शरिराचे वर्ण, सुदृढपणा किंवा रोग आणि स्वभाव हीं संतती मध्यें अंश मात्र उत्पन्न होतात. कवडाशामध्यें रवितेज आणि उष्णता हीं सूर्या इतकीं जरी न होंत तरी कांहीं अंशीं तरी प्रत्यक्ष अनुभवास येतात; त्यापेक्षां सच्चिदानंद परब्रह्मापसून त्याचा अंश चैतन्य ह्यानें युक्त जी सृष्टि निर्माण झाली, तिजमध्यें सत् म्हणजे अनाद्यतता, चित् म्हणजे ज्ञान व आनंद ह्याचा वास असलाच पाहिजे. यावरून एकापासून उत्पन्न झालेले व ज्यांत एकाच प्रकारचीं तत्वें वास करित आहेत, असें जें विश्व व ग्रह उपग्रह यांचा परस्पराशीं संबंध असला पाहिजे; व एकाचा दुसऱ्यावर व तेथें असणाऱ्या पदार्थ मात्रावर आणि प्राणिमात्रावर कांहीं तरी परिणाम झाला पाहिजे म्हणजे अंमल चालला पाहिजे.

पृथ्वीच्या आकारमानाशीं लोहचुंबकाच्या तुकड्याच्या आकारमानाची तुलना केल्यास लोहचुंबकाचा तुकडा किती लहान

दिसेल याची कल्पना करणें देखील अशक्य तरी देखील पृथ्वी वर ठेवलेल्या सुईजवळ लोहचुंबकाचा तुकडा नेल्यास एवढ्या मोठ्या पृथ्वीच्या आकर्षणाचा कांहीं एक अडथला न होतां ती सुई लोहचुंबकाकर्षणानें लोहचुंबकास जाऊन चिकटते. सुई जवल लोहचुंबकापेक्षां कितीही मोठे व कितीही जवळ जरी दुसरे पदार्थ असले तरी त्यांचा त्या सुईवर कांहीं एक परिणाम होत नाहीं; मात्र लोहचुंबकाचा झालेला परिणाम स्पष्ट दिसून येतो. हाच न्याय पृथ्वीवरील पदार्थ व इतर ग्रह यांच्यांतही कां असू नये! समुद्राला चंद्रहा लोहचुंबक आहे, तसा हवेला हाकोणी तरी असला पाहिजे. प्रत्येक प्राणी व प्रत्येक वनस्पति यांस याप्रमाणे कोणी लोहचुंबक नसेल काय? या गोष्टीचा विचार करणारें शास्त्र फल ज्योतिषच होय. इतर शास्त्रांचा येथें कांहीं उपयोग नाहीं।

(५) अशुभ ग्रह शांतीच्या योगानें शुभफलप्रद कसे होतात?

अशुभ ग्रहांच्या योगानें मनुष्यावर नानाप्रकारचीं संकटें येतात, रोग उत्पन्न होतात, दारिद्र्यानें मनुष्य पिडला जातो, अपमृत्यु येतो असे अनेक अनिष्ट परिणाम होतात; व ते परिणाम अशुभ ग्रहांची शांति केली असतां, फलज्योतिषशास्त्रांत जीं दानें व जप वगैरे करण्यास सांगितलें आहे, ते प्रकार केलेअसतां अनिष्ट गोष्टी टळतात; म्हणजे त्या अनिष्ट गोष्टींचा मनुष्यावर

परिणाम होत नाहीं. पण लोकांच्या नेहमीं असें पाहण्यांत येतें कीं, ज्याप्रमाणें आपणांमागें संकटपरंपरा लागलेली आहे त्या प्रमाणेंच जोशीबोवांच्यामागें सागें असते. असें असतां जोशी लोक आपल्या संकटांचें कां निवारण करू शकत नाहींत! साधारण जनसमूहाच्या अंगीं जोशी बोवांचे ज्योतिषविषयक ज्ञान किती आहे हे पाहण्याची योग्यता नसते; त्यामुळें जनामधारी जोशी आहेत त्यांजकडे पाहून लोकांच्या मनावर वर लिहिल्याप्रमाणें परिणाम होतो. व नंतर त्यांच्या तोंडून" आयुष्यांतील अनिष्ट गोष्टी टाळितां येण्यासारखे खात्रीचे उपाय जो पर्यंत अमलांत आणण्याची योग्य तजवीज कोणी केली नाहीं, तो पर्यंत म्हणजे पुढें येणारीं संकटें टाळण्याची युक्ति निघे पर्यंत फलज्योतिष शास्त्र व्यवहारोपयोगी आहे असें मुळींच म्हणतां येणारनाहीं ,, अशा प्रकारचे उद्गार निघतात. आतां हें खरें आहेकीं, ग्रहांचो शांति केल्यानें सर्वच प्रकारचीं संकटें नाहींशीं होतील असें मुळींच नाहीं; तर कांहीं संकटें अशी असतातकीं तीं टाळितांयेणें अशक्य असतें, म्हणून हें शास्त्र निरुपयोगी आहे असें म्हणणें अयोग्य आहे. समजाकीं, आपल्या शरिरांतील शक्ति खर्च होत जाऊन शेवटीं म्हातारपण येतें व तें वैद्यशास्त्रांतील कोणत्याही औषधानें घालवितांयेत नाहीं; म्हणजे शरिरांतील जी शक्ति खर्च झाली ती औषधांनीं परत आणितां येत नाहीं, व गेलेलें तारूण्य प्राप्त होतनाहीं. म्हणून वैद्यशास्त्र कांहीं उपयोगाचें नाहीं असें म्हणणें जसे वेडेपणाचें आहे त्या प्रमाणेंच फलज्योतिष शास्त्रनिरुपयोगी आहे असें म्हणणें वेडेपणाचें ठरेल.

ग्रह काय पदार्थ आहे या प्रश्नाचें उत्तरांत ग्रह आपल्या पृथ्वी प्रमाणेंच माती व दगड वगैरे द्रव्यांचे बनलेले आहेत असें सांगितलें आहे. तेव्हां या दगड मातीच्या ग्रहांची पुजा केली असतां ते कसे प्रसन्न होतात याचें उत्तर मूर्तीपुजक लोकांस द्यावयास पाहिजे असें मुळींच नाहीं अत्यंत श्रेष्ठ व परम दयालु जगचालक प्रत्येक ठिकाणीं आहे. जळीं, स्थळीं, काष्टीं, पाषाणीं तो वास करीत आहे, तेव्हा तो ग्रहांतही असला पाहिजे व ग्रहांची पूजा म्हणजे परंपरेने ईश्वराची पूजा करण्या सारखेच आहे; म्हणून पुढें येणाऱ्या संकटांचें निवारण त्या जगच्चालकाकडून होतें. जगच्चालकाच्या कृपेशिवाय कोणत्याही संकटांचे निवारण होणेंअशक्य आहे हें प्रत्येक मनुष्य कबुल करील. ग्रहांची पूजा म्हणजे परंपरेनें ईश्वराचीच पूजा होय व ती केली असतां तो आपल्या भक्तांची इच्छा पूर्ण करील यांत शंका नाहीं. या प्रमाणे अशुभ ग्रह शांतीच्या योगाने शुभफलप्रद होणें शक्य आहे व शुभफलप्रद होतात असा अनुभवही आहे याबद्दल कोल्हापूर येथें निघणाऱ्या " विश्ववृत्त ,, मासिक पुस्तकाच्या सन १९०६ च्या जुलाई महिन्याचे अंकांत निबंध माला कारांच्या लोक भ्रमासंबंधीं स्वतः च अनुभव म्हणुन एक लेख श्रीयुत रामचंद्र नारायण मंडलिक यानी लिहिला आहे, त्यांतील त्यांचा या संबंधी महाड येथील कै० वा० बाबाजी राव पटवर्धन यांच्या बद्दल जो अनुभाविक अभिप्राय आहे तो देऊन हा विषय पुरा करितो.

" अपमृत्यु टाळितां येतील अशी महाडकर जोशी बोवांची कल्पना होती. दिवा तेल वातीनें भरलेला असला तरी वाऱ्याचीझुळुक

लागून जातो; अशीच गोष्ट अपमृत्यूची आहे असें त्यांचें म्हणणें असे. तेल वातीनें भरलेल्या दिव्याला वाऱ्याची झुळुकलागूं दिली नाहीं म्हणजे ज्याप्रमाणे तेल वात सरेतों पर्यंत तो तेवण्यास हरकत नाहीं, त्या प्रमाणेंच अपमृत्यु होण्याच्या वेळची ग्रहस्थिती टाळली किंवा ग्रहांचे जप, शांति वगैरे शास्त्रोक्त कृत्यें केलीं तर आयुष्य सरे पर्यंत महामृत्यूची वेळ येई तों पर्यंत मनुष्य जगण्यास हरकत नाहीं असें त्यांचें मत होतें व त्या दिशेनें त्यांनीं प्रयत्नही करून पाहिले होते. अपमृत्यु टाळतां कांयावे या विषयींचा वर दिलेला जोशी बोवांचा कोटक्रम कांहीं बावगा नाहीं माझ्या एका जवळच्या आप्ताचा अपमृत्यु जोशि बोवांनीं टाळला याबद्दल त्यांचे जितकें उपकारी रहावें तितकें थोडेंच होय. हा अपमृत्यु महामृत्यू होण्याचा बळकट संभवहोता, हें पुढें आमच्या प्रत्ययास आलेंय. कारण जोशी बोवांनीं सांगितलेल्या नेमक्या दिवशीं सदर आप्ताची एकाएकीं अगदीं भुईवर घेण्यापर्यंत वेळ आली होती. पुढील भविष्य अगोदर सांगून हा अपमृत्यु कदाचित् एका विवीक्षित शांतीनें टळेल असें जोशी बोवांनीं सांगितल्यावरुन सदर शांति शास्त्रोक्तरीतिनें अगोदर करण्यत आली होती व तिनें आपला प्रभाव दाखविलाही. फलज्योतिषांत सांगितलेल्या अनिष्ट ग्रहांच्या शांति किंवा जप, दानें वगैरेस' सव झूट, म्हणणाऱ्यांनीं वरील अनुभविक गोष्ट अवश्य लक्षांत ठेवावी.,,

अब्दुल वजीरखान, पठाण.

मु०—सांगोला.

॥ ईश्वर ध्यानदोध ॥

॥ नीचेलिखी पुस्तकें छपके तैयार है ॥

लघुपुजानुष्ठानपद्धातिटिप्पणीसमेत

यह पूजन विधीं और अनुष्ठान के कामकी अद्विर्तीय पुस्तक है इसमें वेदोक्त पूराणोक्त पुजाविधी और प्रत्येक मंत्रो पर टिप्पणीं दीगईहै केवलइस पुस्तक को पढलेनेसे दूसरी पुजा तथाअनुष्ठान संबधी पुस्तक कों पढने की आवश्यकतानहीरहती मूल्य केवल ।≈) छआने मात्र डाक महसूल समेत रखागय है

॥ विजया कल्प भाषाटीका समेत ॥

यह विजयाके अनुरागीयोंके तथा डाक्टर वैद्य हकीमोंक परमोपयोगी पुस्तक है इसमे विजया (भांग) की उत्पत्ती गुण प्रत्येक रोगमें सेवनीकरीति तथा विजया के कल्प सिद्ध करने कि मंत्र सहित विधी भलिभांती इस हेतु वर्णन कीगई है कि वनौषधियोंका निघंट कैसा बननेसे परमोपयोगी होसक्ताहै उसका नमुना वताया है मूल्य केवल ।) आने मात्र डा० म०)॥

॥ ॐकार महिमा प्रकाश ॥

यह वही पुस्तक है जिस्की हिंदुस्थान भरके हिंदी गुजराथी मराठी समाचार पत्रोने तथा राजा महाराजा धर्माचार्य गणोंने और धनी मानी महाशयोने अेक स्वरसें प्रशंसा कीहै इस्मे खुबी यहहै कि ॐ शब्द के आठ टुकडे जो पुस्तकके साथ भेजे जाते है

उनके उलट पुलट जोडनेसें हिंदी गुजराथी अंग्रेजी उर्दु इन ४ भाषाकी वर्णमाला और अंक तथा आनापाइ वगेरा बालक किंडरगार्टन केतरकोब से खलते २ सीखलेता है और युवक तथा वृद्धपुरूषोंको ज्ञान लाभ होनेके शिवाय ॐ शब्दका स्वरूप ज्ञान होजाताहै । मूल्य रू० १) मात्र रक्खागयाहै मुमुक्ष और विद्वानोंको विनामूल्य देनेमे आतिहै.

छपताहै ! छपताहै !! छपताहै !!!

ज्योतिष के शोखीनों चलो लेनेको तैयार होवो.

जो आपको अपना शुभा शुभ योगायोग और भावीफल घर बैठे जाननेकी इच्छा होवे तो नीचे लिखी दोनों पुस्तकों खरिदिये और अपना ग्राहक श्रेणीमें नामलिखवाइये नाम लिखवाने मे देरी करोगेतो पछतावोगे क्योंकी पुस्तकें नियामित संख्यामे ही छपने से अग्रीम ग्राहकोंकोस्वल्प मूल्यमें मिलेगा और पीछे जादमूल्य देतेभी कदाचित हाथनहीं आवेगी इसलिये जल्दी नाम लिखवाइये तो छपनेबाद वी० पी० से आपके सेवामें भेजनेमें आवेगा ।

१ जातकतत्व
हिंदी भाषा व गुजराती टीकासमेत
२ दशाफल दर्पण टीप्पणी समेत

जातकतत्व—यह ग्रंथ १५१ फलित के ग्रंथोका सार लेकर एक एक श्लोक का तात्पर्य ४ चार चार छे २ अक्षर में खींचके ऐसा

उत्तम बनायागया है कि जिसके पढ़नेसे ज्योतिषके फलितशास्त्र की कोइभी पुस्तक देखनेकी जरूरत नहीं पडसके ऐसा कोई ग्रंथ नहीं बचा है कि जिसकासार इसमें नहीं आयाहै इस ग्रंथके लिये यदि यों कहाजाय की सागरको गागरमे भरदिया गया तो कोई अत्युक्ती नहीं होगी इसकी ५ आवृती मूल मात्रकी छपचुकी और हाथोहाथ बिकगई है और फिरभी इसकी मांग धडाधड आ-रहीहै। इसलिये अबकी बार इसकी हिंदी १ और गुजराती २ ऐसी दो भाषाकी टीकासे सुसज्जीत कर हिंदी और गुजराति भाषा के रसिकोंके लिये तयार कियागयाहै जिसमे कई नवीन विषय और कई अनुभव की हुई फल देखनकी कुंजिये विस्तार पूर्वक ऐसी सरल भाषा मे लिखी गई है जिसको देखने से फिर किसी को पुछनकी आवश्यक्ता नहीं रहेगा आप स्वयं समझ सकतेहैंकि १५१ फलित ग्रंथोंका तत्व की पुस्तक कैसी अनुपम होना चा-हिये, बस यह १ एक पुस्तकही आपको १५१ पुस्तकोंका काम देने वाली है इसको जानने वाले हजारों विद्वान मोजूदहै और ये स्वयं प्रशंशा करते हैं इस लिये जादा प्रशंशा करना वृथा है "नहीं कस्तूरिकागंधः शपथेन विभाव्यते" सो इसे एक वखत देखेगा स्वयं मंगावेगाही।

इसमें क्या २ विषय है वह संक्षेप से नीचे दर्शाते है.

जातकतत्वके मुख्य पांच तत्व (भाग) है उसमें प्रथम संज्ञा तत्वहै जिसमें राशियोंका स्वरूप संज्ञा दशा वर्ग साधनकागणित ग्रहों की अवस्था और स्पष्टग्रह साधन व दशासाधन को रीति ऐसी सुगम बताई गई है कि जन्मपत्रीका गणित अच्छि तरहसे कोईभि गणित का जानने वाला करसके.

२ दूसरा सूतिकातत्व है जिसमें सूतिकाज्ञान जन्मस्थान दीपक शय्या घर उसूतिका कष्टप्रसव बालकके रिष्टयोग रिष्टभंग शुभा शुभ जन्म वगेरा असे युक्ति से योग लिखे गये हैं कि जिसके द्वारा लग्न खराहै के नहीं यह निश्चय करसके.

३ तीसरा प्रकार्णतत्वहै जिसमें द्वादश भावका विचार असी सूक्ष्म रीति से वर्णित कियागया है कि ऐसा विचार प्रत्येक भावका किसी ग्रंथ में कत्रित मिलना असंभव है। इसीमें मिश्रविचार है जिसमें अनेकयोग जो भावविचार में नहीं आये है व वर्णितहै॥

४ चौथा स्त्री जातक का तत्वहै इसमें स्त्रियोंके कुंडली के समस्त शुभा शुभ योग समस्त फलीत ग्रंथ मेसे एकत्रित कर वर्णन किये गये है।

५ पांचमा दशातत्व है इसमें दशाविचार वर्णितहै

इसप्रकार यह ग्रंथ पांच विभागमें वर्णितहै इसका जो आगामि ग्राहक होंगे उनसे २॥) रूप पीछेसे होंगे उनसे ४) रु. लगेंगे आवेगा और टपाल खर्च शिवाय यमें देना पडेगा।

२ दशाफलदर्पण टिप्पणिसमेत।

यह ग्रंथसमस्त फलीत ग्रंथोमेसे संग्रह करके दशाफल देखनेका इसलिये परमोपयोगी बनायागयाहै कि दशाफल विचार का स्वतंत्र ऐसा कोई ग्रंथ हमें नहीं कि जिसमें स्वतंत्र रूपसे दशा का फलविचार उत्तम रीतिसे करसके.इसत्रुटी के कारणही जोतिषी लोक जन्म पत्रीतो बडीबनातेहै परदशाका फल विचार जैसा चाहिये वैसा लिखही नहीं सक्ते अतएव इस क्षतीको मिटाने के लिये ही यहग्रंथ तयार कियागया है इस्मे कमसे कम १०००० दश हजार श्लोक की संख्या दश विभागोंमे विभक्त कीगईहै जिस्में

प्रथम वि ।ग मे दशा प्रयोजन ४२ बेयालीस प्रका की दशाका भेद और उनके साधन क नको उदा रण सहित गति और उन दशा ओंके चक्र तथा उनमें के कौनसी दशा मुख्य है उस । निर्णय कह कर आगे संपूर्ण दि अनेक प्रकार की दशा फल का भेद वि तार पूर्वक वर्णित है तथ दशाफल बाधक ग्रह और शुभा शुभ मध्यानि कृष्ट दशा क निश्चय पूर्वक उच्च नीच मूल त्रिकोण स्वक्षेत्र शत्रु मित्र मित्रादि पांचो भेद सहित अस्त उ द न वक्र मार्ग गतिस्थ फल । दग्बल स्वमवांशवलोपेत राहु युतादि विशेष २ दशा फलका सूक्ष्म विचार और द सुख, धन भ्रातृ, तृ, ग्रह, ग्राम, मित्र, वाहन. विद्या बुद्धि. पुत्र ोग, शत्रु, भार्या मरण, निधिलाभ, भाग्य, धर्म, राज्य. लाभ, व्यय मुसाफरी आदि बारों भाव जनित फल किस २ दशाम होगा और किस २ दशामे उपरोक्त बातोंकी हानि ोगी उसकी दशा के ऊपर ही विस्तार पूर्वक फल विचार और भी अन्याय विशेष मिश्र फल विचार तथा दशा प्रवेश लग्नस दशा फलका सूक्ष्म विचार दशावाहन फल तथा जाग्रतादि बालादि दीप्तादि विनादि शयनादि अवस्थ त ग्रहोंका विशेष रूपसे दशाफल विचार वर्णित है।

२—दूसर विभागमें सूर्यादि नव ग्रहाको विंशोतरी, महादशा का प्रथक् २ महादशाफल विस्तारपूर्वक ऐसी युक्ति से संग्रह कियागया है कि जिसके द्वारा एक २ ग्रह की दशा के फल का विचार क से कम १०० सौ सौ श्लोकस निश्चय करसके.

३—तीसरे विभागमें अंतर्दशा संबंधी विचार का समस्त सामान्य और सूक्ष्मफल विचार विस्तार पूर्वक प्रथक् २ ग्रहोंका ऐसा लिखा है कि समस्त अंतर्दशा का सूक्ष्मफल विस्तृतरूपसे विचार अनायास करसके।

४-५-६ चौथे पांचमे छटे विभागमें क्रमसे उपदशा सूक्ष्मदशा प्राणदशा ओंका विस्तार पूर्वक निःशेष फल विचार वर्णित किया गया है।

७-सातवे मे अष्टोतरी की पांचही प्रकार की दशाका विस्तार पूर्वक फल विचार है।

८-आठमे विभागमे योगिनी दशाके दशांतदशा दिकका समग्र फल विचार वर्णित है॥

९-नवमें विभागमे चरस्थिर रुद्र शूल वर्णदादि जैमिन्युक्त समस्त दशा अंतर्दशाओंका फल विचार है।

१०-दशम विभागमें उक्तदशा ओंके अतिरिक्त शेष समस्त दशाओंका फलविचार और उपसंहार है इस प्रकारयह ग्रंथ सर्वांग सुंदर तयार कियागया है इसकी कीम्मत आगामी ग्राहक होनेवाले से ४) और पीछसे लेनेवालों से ६) रुपे लेनेमें आवेगा टपाल खर्च अलग लगेगा।

उपरोक्त समग्र पुस्तके नीचे लिखे हुवे पतेपर मिलेगा और जो आगामि ग्राहक होने वाले ग्राहक होगे उनका मुबारक नाम भी नीचे लिखे पते पर हो नोंधनमे आवेगा॥

जून तारीख १ जून १९१२ के पूर्व जो लोग अपना नाम लिखावेगे उनकाही नाम आगामि ग्राहको मे गिना जावेगा। दोनु पुस्त को के ५०० पांचसो ग्राहक होजानेसे तारीख १ जूनसे छापना शुरु हो जावेगा।

ज्योतिषरत्न पं० श्रीनिवास मह्लारे वजीकार्मा.

राजकोट्— काठियावाड.

आर्डर फार्म

महाशयजी : ता० मा० सन १९११

निम्न लिखित पुस्तका का आगामी ग्राहकों की श्रेणीमे मेरानाम लिखलेवे और पुस्तके तयार होने पर मेरेनाम पर वी०पी०द्वारा भेजदेवे.

१ जातकतत्व हिंदी व गुजराती भाषाटीका सहित—प्रति

२ दशा फलदर्पण प्रति.

नाम————————————

पता————————————

☞ मेहरबानीकरके नाम ठिकाणा साफ खुले अक्षर मे लिखतरहे।

अवश्य देखिये ।

ज्योतिष कार्यालय

हमारे ज्योतिष कार्यालयमें जन्मपत्र व शरीर लक्षण परसे लग्न, शादी, प्रीतियोग, नोकरी, धंधा, प्रमोशन, मुसाफरी, लाभ, दुश्मनाई, विवाद, परीक्षामेंपास, नापास वगैरा२ प्रश्नोंका उत्तर तथा जिंदगी का खरस्तर भविष्य फल सप्रमाण सयुक्तिक प्राचीन तथा अर्वाचीन शास्त्रोंके अनुरूप कहके फलित शास्त्रकी सत्यता सिद्ध करनेमें आता है.

और जन्मपत्र, वर्षफल, प्रश्नपत्र जन्माक्षरवगैरा नियत् तथा सायन जैसी जिसकी इच्छा है उसी पद्धती के रीतिसे अनेक परिश्रम द्वारा शुद्ध बनाके देने में आता है.

और ज्योतिष के अत्यावश्यकीय नवीन ग्रंथ संग्रह किये गये हैं तथा किये जारहे हैं. और टीका भी करनेमें आती है

एवं ग्रहलाघव केतकी तथा ब्रह्मपक्षके आने सुद्ध नवीन पंचांग कोई बनाना चाहे तो बनाके देनेमें भी आते हैं.

एक वक्त मिलके तथा पत्राचार द्वारा अवश्य अनुभवसे खात्री कीजिये .

ज्योतिष रत्न पं० श्रीनिवास महादेवजी शर्मा.

राजज्योतिषी रतलाम ठि० ज्योतिष कार्यालय.

मो० रतलाम.